हिन्दी-गद्य-वाटिका की कुंजी

सपादक—केशवप्रसाद

प्रकाशक

हिन्दी-भवन

हास्पिटल रोड, लाहौर

मूल्य ।॥)

सूची

अशोक नाटक की कुंजी

[ले०—रा० रामकृष्ण शास्त्री, हिन्दी प्रभाकर]

इसमें अशोक नाटक अंकों की कथा का संक्षेप, कठि शब्दों के अर्थ, प्रधान पात्रों का चरित्र चित्रण तथा नाटक आवश्यक परिभाषाएँ दी गई हैं। मूल्य।)

भारतवर्ष के इतिहास के चार्ट

इन चार्टों को देख कर विद्यार्थी १० मिनट में भारतवर्ष क सारा इतिहास दुहरा सकते हैं। मूल्य—हिन्दू युग ≡)
मुसलिम युग ≡)

Printed and published by D C Karnal
at the H B Press Lahore

१

श्री गुसाईं जी के सेवक

(लेखक—गोसाईं गोकुलनाथ)

पृष्ठ ३

स्फुरण काल—प्रसिद्धि का समय प्रगट होने का समय

शताब्दी—किसी सवत् के सैकडे के अनुसार एक से सौ वर्षों तक का समय।

सो—वह।

गाम—गाँव।

रहेतो—रहता।

हतो—था।

खडन—किसी बात को झूठा सिद्ध करना, बात को काटना।

पढ्योहतो—पढा हुआ था।

पृष्ठ ४

वाको—उसका।

नेम—नियम।

याहीं तें—इसी से।

लोगन—लोगों।

पाड्योहतो—रखा हुआ था।

महाप्रभु—वैष्णवों के आचार्य वल्लभाचार्य जी की आदर-सूचक पदवी।

वैष्णवन—विष्णु के भक्त।

शास्त्रार्थ—वादविवाद।

आपके को—आपके का।

इहाँ—यहाँ।

मडन—प्रमाण आदि के द्वारा किसी बात को सिद्ध करना

भगवद्वार्ता—भगवान की कथा।

भगवद्यश—भगवान की कीर्ति।

आयो—आना।

तोहूँ—तोभी।

याने—उसने।

प्रकृती—स्वभाव, आदत।

हती—थी।

सूतो—सोया।

वाकुं—उसको।

जनेन—आदमियों ने।

सर्वोपर—सबसे ऊपर, सबसे अच्छा।

भगवत्परायण—भगवान में लगे हुए

भगवदर्पण—भगवान के समर्पण भगवान की भेंट।

तन—शरीर।

जिनने—जिन्होंने।

तिनको—उनको।

अर्थ—इच्छा, लालसा।

सिद्ध—हासिल।

भये—होगये।

कुं—को।

जासुं-जिससे (इसलिए)।
तोयुं-तुमको।
मारें-मारते।
पाय-पाँवों में।
बिनती-विनती, प्रार्थना।
मोकुं-मुझको।
करी-बनाया।
सेवक-सेवा करनेवाला उपासक

(सरल भाषा)

वह श्रीनन्द गाँव में रहता था। वह खंडन करने वाला ब्राह्मण शास्त्र पढ़ा हुआ था। जितने पृथ्वी पर मत हैं उन सबका खंडन करना उसका नियम था। इसी से सब लोगों ने उसका नाम खंडन रख दिया था। वह एक दिन महाप्रभु वल्लभाचार्य जी के उपासक विष्णुभक्तों की मंडली में आया और खंडन करने लगा। वैष्णवों ने कहा जो तुझे शास्त्रार्थ (वाद विवाद) करना हो तो पंडितों के पास जा, हमारी मंडली में आने का तेरा कोई काम नहीं। यहाँ किसी बात को काटने या सिद्ध करने का (वादविवाद का) काम नहीं है। यहाँ तो भगवान के भजन की बात है। यदि भगवान का यश (कीर्ति) सुनना हो तो यहाँ आना। तब भी वह माना नहीं और रोज आकर खंडन करता था। ऐसा उसका स्वभाव ही था। एक दिन वैष्णवों का मन बहुत उदास हो गया। जब वह खंडन करने वाला ब्राह्मण घर में सोया हुआ था तब चार आदमी मुद्गर लेकर उसे मारने लगे। जब उसने कहा तुम मुझे क्यों मारते हो, तब चार आदमियों ने कहा कि तुम भगवान के धर्म का खंडन करते हो और यह भगवान का धर्म सब से ऊपर है, सब धर्मों से अच्छा है। जो केवल भगवान में लगे हैं,

जिन्होंने तन मन तथा धन भगवान को भेंट कर दिया है, उन्हें कोई इच्छा बाकी नहीं रही। सब प्राप्त हो गए हैं। ऐसे धर्मात्माओं का तू खंडन करता है, इसलिए तुझे मारते हैं। यह सुन कर खंडन करने वाला ब्राह्मण उन चार आदमियों के पाँवों में पड़ा। और दूसरे दिन भक्तों की मंडली में आकर वैष्णवों के पैरों में पड़ा और उनसे प्रार्थना की कि कृपा करके मुझे भी विष्णु का भक्त बना लो और वैष्णवों को साथ लेकर श्रीगोकुल आकर श्री गुसाईं जी का उपासक होगया। इस तरह वह खंडन करने वाला ब्राह्मण गुसाईं जी की कृपा से मंडन करने वाला हो जायगा।

२

डोलडाल एक अनोखी बात का

(लेखक—सैयद इशाअल्लाह खाँ)

पृष्ठ ५
डोलडाल—प्रयत्न।
पूर्वज—पुरखा, दादा परदादा।
अस्त—नष्ट, डूबना।
रँगीली—रँगिया।
चुलबुलाहट—रसिकता।
पृष्ठ ६
ध्यान में चढ़ी—ध्यान में आई।
छुट—छोड़कर, सिवाय।
पुट—रंगत, जरा सी भी मिलावट।
पुराने धुराने—बहुत दिनों के, अनुभवी।

घाघ—चतुर, अनुभवी, चालाक।
खटराग—झंझट, बखेड़ा।
हिंदवीपन—ठेठ हिन्दी भाषा।
भाखापन—संस्कृत मिश्रित हिन्दी
डौल—बनावट।
छाँह—परछाँई, पुट, मिलावट।
टहोका खाकर—धक्का खाकर।
बड़ बोला—बड़ी बड़ी बातें करने वाला।
राई का पर्वत करना—छोटी सी बात को बड़ी बना देना।
उलझी सुलझी—टेढ़ी सीधी।

ढप-तरीके ।
ताव भाव-गरमी तेज़ी ।
चपचपाहट-बहुत अधिक चंचलता

पृष्ठ ५
चौकड़ी भूल जाय-कुछ भी चाल न सूझे, बुद्धि काम न दे ।

(सरल भाषा)

एक दिन बैठे बैठे यह बात ध्यान में आई कि कोई ऐसी कहानी कही जाय जिस में हिन्दी को छोड़ और किसी बोली की ज़रा भी मिलावट न हो तभी मेरे हृदय की कली खिलेगी (मैं प्रसन्न होऊँगी)। इस कहानी में विदेशी शब्द और गँवारू बोली न हो । अपने मिलने वालों में से कई बहुत दिनों के पुराने अनुभवी और बूढ़े चतुर व्यक्ति ने यह झंझट खड़ा कर दिया और सिर मुँह हिलाकर और नाक भौंह चढ़ाकर और आँख फिराकर कहने लगे, यह बात होती दिखाई नहीं देती कि खालिस हिन्दी भाषा भी रहे और संस्कृत मिश्रित हिन्दी भी न आवे । और भले लोग जो आपस में बोलते चालते हैं, ठीक वैसी ही बनावट बनी रहे और दूसरी भाषा की उसमें छाया न आवे । मैंने उनकी ठंडी साँस का धक्का खाकर (ताना सुनकर) झुँझलाकर कहा—मैं कोई ऐसा बड़ा बातूनी नहीं जो छोटी सी बात को बढ़ा कर कहूँ, झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ और बेसिर बेठिकाने की टेढ़ी सीधी बातें बनाऊँ । जो यह मुझ से न हो सकता तो ऐसी बात कहता ही क्यों ? जिस तरह से होता इस बखेड़े को टाल देता । इस कहानी का कहने वाला मैं आपको बतलाता हूँ और जैसा लोग मुझ कहते हैं, वैसे ही कह सुनाता हूँ । दाहिना

हाथ मुँह पर फेरकर आपको बताता हूँ कि जो मेरे दाता ने चाहा (यहाँ ठेठ हिन्दी के प्रयोग करने ही के लिए सैयद साहब ने अपना नाम भी हिन्दी में दे दिया है, इशा अल्लाह का अर्थ है जो मेरे दाता ने चाहा) तो ऐसी गरमी तेजी, कूद फाँद दिखाऊँगा कि देखते ही आपके ध्यान का चचल घोड़ा जो बिजली से भी अधिक चचल है, अपनी चौकड़ी भूल जायगा अर्थात् आपका ध्यान केवल मेरी चुलबुली भाषा की ओर ही अटक जायगा।

जरा सा अपन घोड़े पर चढ कर मैं जो आता हूँ और जो कुछ करतब हैं वे कर दिखाता हूँ। और अगर मेरे दाता ने चाहा [इशा अल्लाह] तो जो कुछ कहता हूँ, यह सब कर दिखाऊँगा।

अब कान लगाकर, आँखें मिलाकर सामने होकर जरा इधर देखिये [जरा इधर ध्यान कीजिये और देखिये] कि किस प्रकार मैं बढ़ता जाता हूँ, और फूल की पखुड़ी के समान अपने कोमल होठों से कैसे कैसे शब्द रूपी फूल निकालता हूँ।

२

वर्षा शरद ऋतु-वर्णन

(ले०—श्री लल्लूलाल)

पृष्ठ ८

प्रेरणा—कहन से, प्रोत्साहन से।

ब्रजभाषामिश्रित—ब्रजभाषा मिली

पृष्ठ ९

ग्रीष्म—गरमी।

अति—बहुत।

अनीति—अधेर, अन्याय।

नृप-पावस-वर्षाऋतु रूपी राजा।
प्रचण्ड-प्रतापी।
दल-सेना।
घन-बादल।
धौंसा-बड़ा नगारा, डंका।
बरांबरण-रंग रंग।
घटा-घने बादलों का समूह।
रावत-सामंत, सरदार।
तिलक-उनक।
दमक-चमक।
शस्त्र-हथियार।
बगपाँत-बगुलों की श्रेणी, पंक्ति।
ठौर ठौर-जगह जगह पर।
ध्वजा-झंडी।
दादुर-मेंढक।
कड़खेत-वीरों की प्रशंसा से भरे गीत गानेवाले भाट।
यश-कीर्ति।
बखानते-कहते।
खेत-लड़ाई का मैदान।
अपना जी-अपनी जान।
पिया-प्यारा, पति।
वियोग-जुदाई।
रांग-रूप।
तिमका-चमका।
मांग भरना-सुख उठाना।
सुहावनी-सुन्दर।
कामिनी-सुंदरी स्त्री।
सरोवर-तालाब।
रूख-पेड़।
पिक-कोयल।
कीर-तोता।
कपोत-कबूतर।
सूहे-लाल।
कुसुंभे-फूल के रंग के, लाल।
जोड़-कपड़े।
मलार-वर्षा ऋतु का गान।

[सरल भाषा]

[शुकदेव मुनि कृष्णद्वैपायन व्यास के पुत्र थे, और पुराणों के बड़े भारी वक्ता और ज्ञानी थे। इन्होंने राजा परीक्षित को उनके मरने के पहले मोक्ष धर्म का उपदेश दिया था, कहा जाता है वही उपदेश भागवत पुराण है। लल्लूलाल कृत प्रेम सागर उसी भागवत के दसवें स्कन्ध का अनुवाद है।]

श्रीशुकदेव मुनि बोले—हे महाराज परीक्षित, गरमी का अत्यन्त अन्याय और अत्याचार देख कर प्रतापी वर्षाऋतु रूपी

राजा जीव-जन्तुओं की बुरी दशा सोचकर चारों ओर से बादलों की सेना को साथ ले लड़ने को चढ़ आया। उस समय बादल जो गरजता था, वही मानो नगारा बजता था—युद्ध का डंका बजता था। और रंग रंग के घने बादलों के समूह जो इकट्ठे हो गये थे, वही मानों शूरवीर सरदार थे। उनके बीच बिजली की चमक हथियार की तरह चमकती थी। बगुलों की पंक्ति जगह जगह पर झण्डियों की तरह फहरा रही थी। मढक और मोर वीरों के यश गाने वाले भाटों की तरह यश बखान कर रहे थे, और बड़ी बड़ी बूँदों की जो झड़ी लगी थी, वही मानों बाणों की झड़ी थी। इस शान [सजावट] से वर्षा ऋतु को आता देख गरमी मैदान छोड़ कर अपनी जान लेकर भागी। तब बादल रूपी प्रियतम [पति] ने बरस कर पृथिवी को सुख दिया। उस पृथिवी ने जो आठ महीने पति की जुदाई में तपस्या की थी, उसका सुख पालिया। कुछ बूँदें गिरने से पृथिवी शीतल हुई और गर्भ रहा। उसमें से अठारह हज़ार पुत्र उत्पन्न हुए। वे भी फल-फूल भेट लेकर प्यारे को प्रणाम करने लगे। उस समय वृन्दावन की भूमि ऐसी सुन्दर लगती थी कि जैसे शृंगार किये [गहने आदि पहने हुए] सुन्दरी युवती स्त्री हो। और जहाँ कहाँ [हर जगह] नदी नाले और तालाब भरे हुए थे, उन पर हँस और सारस शोभा दे रहे थे। ऊँचे ऊँचे पेड़ों की डालियाँ झूल रही थीं। उनमें कोयल पपीहा, कबूतर, और तोते बैठे हुए कलरव कर रहे थे—सुन्दर बोल बोल रहे थे और जगह जगह पर लाल फूलों के रंग के कपड़े पहने गोपियाँ और ग्वाल झूलों पर झूल झूल कर ऊँचे स्वरों से प्रसन्न हो मलार

[सर्वः शरद का गाना] गा रहे थे। उनके पास ब्रज का श्रीकृष्ण और बलराम आदि लीला करके अधिक सुख देते थे।

४

औरंगज़ेब की फ़ौज का वर्णन

(लेखक—राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद)

पृष्ठ १०

निदान—अंत में, आखिर

निगाह—दृष्टि, नज़र,

यालों—घोड़े की गर्दन के ऊपर के बाल, अयाल।

साज़—सजावट का सामान जीन, लगाम, दुम, दुमची आदि।

पृष्ठ ११

झाँझनें—एक प्रकार का पैर में पहनने का गहना जो चाँदी का बनता है। घोड़ों के पैरों में प्रायः चाँदी की झाँझन पहनाई जाती है।

चारजामे—जीन। चमड़े या कपड़े का वह आसन जिसे घोड़े की पीठ पर कस कर सवारी करते हैं।

ज़रदोज़ी—एक प्रकार की दस्तकारी जो कपड़ा पर सुनहले कलाबत्तू या रेशम सवार से की जाती है।

दगला—भारी लबादा मोटे वस्त्र का बना हुआ या रुईदार अँगरखा।

ज़िरह-बख्तर—लोहे का कवच

जामा—अचकन, या घेरवाली सा एक प्रकार का घुटन के नीचे तक का घेरदार पहनावा।

ज़र्द—पीले।

बेदम—अधमरा।

भाँड भगतिये—एक प्रकार के पेशेवर जो प्रायः कई इकट्ठे होकर रहते हैं और महफ़िलों शादियों पर नाचते-गाते और स्वाँग बनाते हैं।

रंडी छोकरे—रंडियाँ और लौंडे

खिदमतगार—सेवा करने वाले।

डेरा-डंडा—टिकने का सामान।

ऐश इशरत—भोग विलास।

साज सामान–वस्तुएँ ।	पृष्ठ १७
बार बर्दारी–सामान ढोनेका काम	हवा खाने को–घूमने को ।
तदबीर–तरकीब, उपाय ।	मंदि–बीमार ।
मुआइका—परवाह ।	शामियाना–बड़ा तंबू

(संक्षेप)

औरंगजेब की फौज की शान शौकत और सामान अत्यधिक था परन्तु सिपाही सब कमजोर या नशे में चूर और दवाई खाते पीते थे। उनका ध्यान अधिकतर जीवन के भोग विलास की ओर था, युद्ध की उन्हें कुछ परवाह न थी। उन्हें बड़ी बड़ी तनख्वाहें मिलती थीं, पर काम कुछ न करना होता था। फ्रांसीसी जिमेली करेरी लिखता है कि औरंगजेब की सेना में दस लाख से ऊपर आदमी थे और उनके डेरे साज आदि बहुत दूर तक फैले थे। इन मुसलमान सैनिकों को मुकाबला उन मराठे वीरों से करना पड़ा जिनको जीवन के किसी आराम की परवाह नहीं थी। जो रूखा सूखा खाकर ऊँची नीची जमीन पर सोकर भी लड़ने को प्रस्तुत थे।

५

सत्यार्थ-प्रकाश

(लेखक—श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती)

पृ० १३	संस्कृतगर्भित–संस्कृत मिलो
उच्चकोटि–ऊँचे दरजे के	विष प्रयोग से–जहर देने से
अन्तर्गत–में	देहान्त–मृत्यु, मौत
...के मानने वाले,	
...वाले।	

पृ० १४
प्रयोजन–उद्देश्य, मतलब
मिथ्या–झूठ
प्रतिपादन–प्रमाण सहित कहना, अच्छी तरह समझाना।
पदार्थ–वस्तु
पक्षपाती–तरफदार
प्रवृत्त–तत्पर, तैयार
आप्त–विषय को ठीक तरह जानने वाले, प्रामाणिक।
सत्यासत्य–सच झूठ
स्वरूप समर्पित कर दे–स्वरूप ठीक ठीक बता दे।
हिताहित–भला बुरा
मिथ्यार्थ–झूठा अर्थ, झूठी बात
परित्याग–छोड़ना
सिद्धि–प्राप्ति, पाना।
हठ–जिद।
दुराग्रह–जिद, अपनी बात के ठीक न सिद्ध होने पर भी उस पर स्थिर रहना।
अविद्या–अज्ञान
अन्य–दूसरा
पृ० १५
शोधने–ठीक करने
हितैषी–हित चाहने वाला
जनावेगा–बतलावेगा।
संगृहीत–संग्रह किया जायगा, जोड़ दिया जायगा
सर्वतन्त्र–जिसे सब शास्त्र मानते हैं
विधि–प्रकार
वृद्धि–बढ़ती।
सार्वजनिक–सर्वसाधारण का।
सत्यमेव जयते नानृतम्–सत्य ही की जीत होती है झूठ की नहीं।
सत्येन पथा विततो देवयानः–सत्य से ही विद्वानों का रास्ता विस्तृत होता है।
पृ० १६
आलम्बन–सहारा, पकड़न
अभिप्राय–मतलब
अविरुद्ध–समान जिनमें विरोध न हो।
मतस्थ–मत को मानने वाले।
आर्यावर्त्त–आर्यों के रहने का देश भारतवर्ष।
मत मतान्तर–भिन्न भिन्न मत।
यथातथ्य–ठीक ठीक
देशस्थ–देश के।
मतोन्नति–मत की उन्नति करना
स्वमत–अपना मत
स्तुति–बड़ाई प्रशंसा

(सरल भाषा)

मेरे इस ग्रन्थ बनाने का मुख्य मतलब सच्ची सच्ची बात

का बताना है अर्थात् जो सच है उसको सच कहना, तथा जो झूठ है उसको झूठ ही समझाना सच्चे अर्थ का प्रकाश करना है। यह सत्य नहीं है जो सच के स्थान में झूठ, और झूठ के स्थान पर सच कहा जाय, अर्थात् झूठी चीज को सचा बताया जाय। परन्तु जो वस्तु जैसी है उसको ठीक ठीक वैसा ही कहना लिखना आदि सत्य कहलाता है। जो मनुष्य किसी की तरफदारी करने वाला होता है वह अपने झूठ को भी सच और दूसरे विरोधी मत के मानने वाले की सची बात को भी झूठा बताने को तैयार रहता है। इसलिए वह सच्चे मत को नहीं पा सकता। इसलिए विद्वानों और विषय को ठीक तरह जानने वालों का यही मुख्य काम है कि उपदेश से या लेख से सब मनुष्यों को सच झूठ का असली रूप दिखा दें। इसके बाद वे लोग अपने आप अपने भले बुरे को समझकर सची बात को अपना कर और झूठी बात को छोड़कर सदा आनन्द से रहें। मनुष्य का आत्मा सच झूठ को जानने वाला है, फिर भी वह अपने मतलब को पाने के लिए जिद अथवा किसी बात को झूठा समझते हुए भी उस पर अड़े रहने तथा अज्ञान आदि दोषों से सच्ची बात को छोड़कर झूठ की ओर झुक जाता है—झूठ को अपना लेता है। परन्तु इस पुस्तक में यह बात नहीं रखी गई और न हमारा मतलब किसी का मन दुखाने अथवा हानि करने का है। किन्तु जिस चीज से मनुष्य जाति की उन्नति हो और मनुष्य लोग सच झूठ को समझ कर सच और और झूठ को छोड़ दें, उसी बात को [illegible]य है। क्योंकि सच्ची बात के कहने,

और किसी चीज से मनुष्य जाति की उन्नति नहीं हो सकती।

इस पुस्तक में जो किसी किसी जगह पर गलती से अथवा छापने में कोई भूल चूक रह गई होगी तो उसके जानने और अथवा बताये जाने पर जैसा ठीक होगा वैसा कर दिया जावेगा। और जो कोई तरफदारी से सन्देह या खंडन मण्डन करेगा उस पर ध्यान न दिया जावेगा। हाँ, जो कोई मनुष्यमात्र का हित चाहने वाला होकर कुछ बात बतलावेगा, और उसकी बात को ठीक समझने पर उसका मत जोड़ दिया जावेगा। यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान प्रत्येक मत में हैं, वे भी तरफदारी छोड़ कर जिसे सब शास्त्र मानते हों उसे सिद्धांतों को अथात् जो सब मतों में समान और सब में ठीक हैं उनको ग्रहण कर और जो एक दूसरे के विरुद्ध बातें हैं उनको छोड़ कर, एक दूसरे से प्यार से बर्तें तो संसार का पूरा कल्याण हो। क्योंकि विद्वानों की लड़ाई से मूर्खों में भी लड़ाई बढ़ती है और उस से अनेक प्रकार के दुःखों की बढ़ती और सुख की हानि होती है। इस हानि ने, जो स्वार्थी मनुष्यों को प्यारी है, सब मनुष्यों को दुःख के सागर में डाल दिया है। इन विद्वानों में से जो कोई सर्वसाधारण के [सबके] भले को ध्यान में रख कर कुछ करने को तैयार होता है स्वार्थी लोग उस से विरोध करने को तैयार होकर अनेक तरह की रुकावटें डालते हैं, परन्तु अन्त में सत्य की ही जीत होती है, झूठ की नहीं तथा सत्य से ही सारे विद्वानों का मार्ग विस्तृत होता है, इस पक्के निश्चय का सहारा लेकर प्रामाणिक लोग कभी भी लोगों की सलाह या ख्याल

छोड़कर सची बात बताने से नहीं चूकते। इस पुस्तक म यही उद्देश्य रक्खा गया है कि जो जो सब मतों में सची सची बातें हैं, सब मतों में समान होने से उनको अपनाया गया है और जो भिन्न भिन्न मतों में झूठी बातें हैं उनका खण्डन किया गया है। भिन्न भिन्न मतों की छिपी अथवा प्रगट बुरी बातों को खोल कर विद्वान और अनपढ़ सबके सामने रख दिया है। जिससे मनुष्य सबका विचार कर और एक दूसरे के प्रेमी होकर सब एक सत्य बात को मानने वाले हो जावें। यद्यपि मैं भारतवर्ष में पैदा हुआ हूँ और यहीं बसता हूँ तथापि जैसे इस देश के भिन्न भिन्न मतों की झूठी बातों की तरफदारी न कर ठीक ठीक बात बतलाता हूँ, वैसे ही दूसरे देशों के मतों की उन्नति करने वालों के साथ भी यही वर्ताव करता हूँ। और सब सज्जनों को ऐसा करना भी चाहिए। यदि मैं भी किसी मत की तरफदारी करता तो जैसे आजकल अपने मत की बड़ाई, उसका मडन और प्रचार करते हैं और दूसरे मत की बुराई, हानि और उसके प्रचार करने का यत्न करते हैं, वैसे मैं भी करता परन्तु ऐसी बातें शिष्टता के बाहर हैं।

६

एक दुराशा

(ले० —श्रीयुत बालमुकुन्द गुप्त)

पृष्ठ १७,
दुराशा—ऐसी आशा जो पूरी होने वाली न हो, व्यर्थ की आशा।
हास्य—हँसी।
व्यङ्ग—चोट, ताना।

पृ० १८

पैनी-तेज़

ज़ाफ़रानी-केसर का सा रंग

बसन्ती बूटी-भाँग

मौज-मन में उठती उमंग।

ख़्याल के घोड़े-विचार, कल्पना

बाग-लगाम

ज़क़न्द-छलाँग

तूल अरज़-चौड़ाई

कनरसिया-गाना बजाना सुनने का शौक़ीन।

महफ़िल-जलसा

लय-तान

पृ० १९

मलार-एक राग जो वर्षा ऋतु में गाया जाता है।

सुदी-शुक्ल पक्ष

विकास-खिलना

विधि-ब्रह्मा, विधाता

ऋतुविपर्यय-ऋतुओं की उलट पुलट

खिलैया-खेलने वाले।

कन्हैया-कृष्ण

ग्वाल बाल-ग्वालों के लड़के।

अबीर गुलाल-सुगन्धित रंग जो होली में एक दूसरे पर डाला जाता है।

प्रतिनिधि-वह जो किसी दूसरे की ओर से काम करने को नियुक्त हुआ हो। बादशाह के प्रतिनिधि वायसराय कहाते हैं।

पृ० २०

बेतुका-बेमेल।

शयनागार-सोने का कमरा।

फ़रयाद-शिकायत।

दुर्लभ-मिलना मुश्किल।

चन्द्रानन-चन्द्र के समान मुख।

(संक्षेप)

नारंगी के रस में केसर के रंग की भाँग छानकर शिव शम्भु शर्मा मन की उमंगों का आनन्द ले रहे थे। उन्होंने कल्पना (विचार) के घोड़ों की बाग ढीली कर दी थी वे मनमानी छलाँगें मार रहे थे—अर्थात् उनके मन में एक के बाद दूसरा विचार उठ रहा था। उनके हाथ पाँव खटिया की चौड़ाई से बाहर निकल गये थे, उनका शरीर खटिया पर था, पर विचार

कहीं क कहीं जा रहे थे। इतने में गाने की आवाज सुनकर गाने सुनने के शौकीन शिवशम्भु चारपाई पर बैठ गये। उन्होंने सुना—"चलो, चलो, आज कृष्ण कन्हैया के घर होली खेलें।" यह सुन शिवशम्भु कमरे से निकल कर बरामदे में खड़े हुए। मालूम हुआ कि पड़ोस में किसी अमीर के यहाँ गाने बजाने की महफिल लगी है, जिसमें कोई सुरीली तान से होली गा रहा है। परन्तु उन्होंने साथ ही देखा कि बादल घिरे हुए हैं। बिजली चमक रही है और बूँदा बाँदी हो रही है। इस वसन्त में सावन देख कर वे चकरा उठे, और सोचने लगे कि गाने वाले को (मलार) वर्षा ऋतु का राग, गाना चाहिये। परन्तु साथ ही सोचा कि फाल्गुण का शुक्लपक्ष है। वसंत के खिलने का समय है। इस समय वर्षा ऋतुओं का उलट फेर है यह तो ब्रह्मा की भूल है। गाने वाले का इसमें क्या दोष ?

फिर वे गान का अर्थ सोचने लगे। होली खेलने वाले ग्वालबाल कहते हैं—चलो अपने राजकुमार कृष्ण के घर होली खेलने चलें। यह सुन वे चौंक उठे। क्या कभी भारत में राजा और प्रजा का ऐसा मेल था ? क्या इस भारत में राजा लोग प्रजा के आनन्द को अपना आनंद मानते थे ? यदि आज शिव-शिम्भु और उसके साथी (भारत की प्रजा) राजा के साथ होली खेलना चाहें तो कहाँ जाँय ? आज राजा (बादशाह) तो सात समुद्र पार (इंग्लैंड में) रहता है और न राजा को शिवशम्भु ने देखा है और न राजा ने शिवशम्भु को। खैर राजा न सही, उसने अपना प्रतिनिधि (वायसराय) तो भेजा है। जैसे कृष्ण जब वृन्दावन छोड़ द्वारका चले गये थे तब ब्रजवासियों को संतोष

देने के लिए उन्होंने उद्धव को प्रतिनिधि बनाकर भेजा था। पर क्या आजकल के बादशाह के प्रतिनिधि के साथ, प्रजा होली खेल सकती है। यह विचार वैसा ही बेमेल है, जैसे वर्षा में होली गाया जाना। परन्तु यदि वसंत में वर्षा पड़े तो गाने वाले को क्या मलार गाना चाहिये ? यह सचमुच बड़ा कठिन सवाल है। कृष्ण (राजा) हैं, उद्धव (प्रतिनिधि, वायसराय) हैं पर ब्रजवासी [प्रजा] उनके पास फटक भी नहीं सकते। सूर्य है, पर ऐसा छिपा है कि धूप नहीं है। चन्द्र है, पर ऐसा छिपा है, कि उसकी चाँदनी दिखाई नहीं देती। माई बाप वायसराय नगर (कलकत्ता) में ही हैं पर शिवशम्भु उनके द्वार पर फटक भी नहीं सकता (उस समय वायसराय कलकत्ता में रहता था) उनके साथ होली खेलना तो दूर रहा। वायसराय के घर तक बात की हवा भी नहीं पहुँच सकती। जहाँगीर के बारे में प्रसिद्ध था कि उसने अपने सोने के कमरे में एक ऐसा घंटा लगाया था कि जिसकी जंजीर बाहर लटकती थी और प्रजा का कोई आदमी शिकायत करना चाहता तो वह जंजीर खींच देता था और बादशाह उसे बुलाकर उसके दुखड़े सुनता था। सो आज कल के बादशाह के प्रतिनिधि के घर में ऐसी कोई जंजीर नहीं लगी, जिससे प्रजा उसे अपना दुखड़ा सुना सके। वायसराय का मुँह देखना मुश्किल है। दूज के चाँद की तरह कभी कभी बहुत देर तक नजर लड़ाने से उस२१ चन्द्र के समान मुख दिख जाता है, तो दिख आता है। लो। उंगलियों से इशारा करते हैं कि वह है। परन्तु दूज के चाँद के दिखाई देने का (उदय का) कोई समय है। लोग (पचांग द्वारा) उसे

जान सकते हैं। पर माई-बाप वायसराय के मुखरूपी चाँद के दिखाई देने का कोई समय निश्चित नहीं। इन सब बातों को सोच शिवशम्भु ने निश्चय कर लिया कि राजा प्रजा के होली खेलने—परस्पर मिल बैठने—का समय अब गया।

७

मनसुखी और सुन्दरसिंह का किस्सा

पृष्ठ २२

बहार—बसंत
पुजापा—पूजा का सामान
समवयस्क—एक बराबर उमर की
सुहैलें—मंगल गीत, प्रशंसा के गीत
अहीर—ग्वाला।

पृष्ठ २३

बनड़ा—दूल्हा
भली—अच्छी
काहे को—किसलिए।
निर्धन—गरीब।
माया—खेल
ढलती फिरती छाँह—छाँह की तरह जो कभी एक जगह नहीं टिकती।
गर्जी—मतलबी, इच्छुक।
आवभगत—आदर सत्कार, खातिर

पृष्ठ २४

माता—सीतला माता, चेचक
जात — चढ़ाना
आस—आशा।
बछड़ा छोड़ूँगी—सीतला माता के नाम पर बछड़ा छोड़ा जाता है, वही बछड़ा आगे चलकर सांड बन जाता है। बनारस आदि तीर्थों में इसी कारण सांडों की अधिकता हो जाती है
जोड़ा पहनाऊँगी—कपड़े का जोड़ा दूँगी।
भार्या—स्त्री, औरत।
छोरे—लड़के

पृष्ठ २५

दाता की खैर—देने वाले का भला
सदका—दान, वह वस्तु जो किसी प्यारे के सिर पर से उतार कर रास्ते में रख दी जाय।
खेल देना।
घीट—सुअर का बच्चा।

माता का स्नेह

(श्री बालकृष्ण भट्ट)

पृष्ठ २७

वात्सल्य-प्रेम, माता पिता का बच्चों के प्रति प्यार। साहित्य में साधारणतया शृंगार आदि नौ रस माने जाते हैं। पर कई लोग माता पिता के प्रेम वर्णन को वात्सल्य रस मानते हैं।

वात्सल्य रस की शुद्ध मूर्ति—बच्चों से स्वाभाविक प्रेम का पवित्र अवतार।

सहज—स्वाभाविक

स्नेह—प्रेम

मर्यादा परिपालन—सदाचार, प्रथा रीति रिवाज के पालने के लिए।

आदरणीय—पूज्य, पूजा (आदर) के योग्य।

निस्वार्थ—बिना स्वार्थ का, बिना मतलब का।

अनुमति—सम्मति, राय

सूक्ष्म विचार से—बारीकी से (ध्यान से) देखने से।

गुप्त रीति—छिपे छिपे

पृष्ठ २८

प्रवीण—कुशल तेज

भय—डर

ताड़ना—मार, झिड़क

अकृत्रिम—स्वाभाविक

अकृत्रिम, सहज स्नेह—स्वाभाविक प्रेम, ऐसा प्रेम जो दिखावटी न हो।

विकल—व्याकुल घबराई हुई

क्लेश—कष्ट, पीड़ा

जनना—पैदा करना

नीरोग—रोग रहित, भला चंगा

हुलास—प्रसन्नता, खुशी

बहुधा—प्रायः

पृष्ठ २९

वाद—वाद विवाद, शास्त्रार्थ

पराजित होकर—हार कर

तन त्याग दिया—शरीर छोड़ दिया।

चिंतामणि मंत्र—सरस्वती देवी का मंत्र जिसे लोग बालकों की जीभ पर विद्या आने के लिए लिखते हैं, और जाप कराते हैं।

कृपापात्र—कृपा का अधिकारी।

परास्त करने—हराना

प्रोत्साहन—उत्साह बढ़ाना

शिक्षा—सीख

वज्रपात—वज्र का गिरना
सदृश—समान
वाक्‌प्रहार—वाणी की चोट, बात की चोट।
ताड़ित—चोट खाकर।
अवज्ञा—निरादर, अपमान
संतापित—दुखी
ध्रुव पदवी—अचल पदवी, अचल लोक। ध्रुव की कहानी बहुत प्रसिद्ध है।
हेतु—कारण
उच्च—ऊँचा।
स्थिर—एक जगह ही रहने वाला
अपाहिज—लूला, लँगड़ा, काम करने के अयोग्य।
अपंग—अंगहीन, लँगड़ा लूला
अन्न वस्त्र—भोजन कपड़ा
उदार—श्रेष्ठ, सरल
पृष्ठ ३०
स्मरण—याद
उद्‌गार—मन के भाव एक बारगी कह देना।
प्रत्युपकार—उपकार का बदला
वासना—इच्छा
देह—शरीर
मूसलाधार—बड़े जोर की वर्षा
ठाठ—टट्टी, लकड़ी या बाँस का बना परदा
तनिक—जरा।
वात—वायु
वृष्टि—वर्षा
अनिष्ट—हानि, बुरा
व्यग्र—व्याकुल, घबराई हुई।
अस्वस्थ—बीमार
मन मारे—दुखी दिल से
दुस्तर—कठिन
गौरव—महत्ता
पृष्ठ ३१
अऋण—कर्ज से मुक्त, ऋणरहित
शील—स्वभाव
प्रेमबद्ध—प्रेम में बँधे हुए
सौहार्द—भ्रातृभाव, प्रेम
धर्म-मूल—धर्म का कारण।
गंध—बू
साक्षात् स्वरूप—मूर्ति धरे।

(संक्षेप)

माता के स्नेह की तुलना संसार में कहीं नहीं है। वह जो अपनी संतान से प्यार करती है उसमें स्वार्थ का लेश नहीं होता। माता ही बच्चे का सबसे बड़ा गुरु है। गुरु जो पाठ

उसे ताड़ना से सिखाता है, माता वही प्यार से सिखा सकती है। माता अपनी सन्तान के लिए जितने कष्ट उठाती है उतना कोई और नहीं उठाता। इसी को देखकर माता का गौरव पिता से भी सौ गुना माना जाता है।

६

पाण्डवों का विवाह

(श्री महावीरप्रसाद द्विवेदी)

पृष्ठ ३२,

परिमार्जित—माँजी हुई शुद्ध

पृष्ठ ३३

रमणीय—सुन्दर

दक्षिण पांचाल—हिमालय और चंबल के बीच गंगा नदी के दोनों ओर के देश को पांचाल कहा जाता था। गंगा के उत्तरप्रदेश को उत्तर पांचाल और दक्षिण प्रदेश को दक्षिण पांचाल कहते थे। इसी देशके राजा द्रौपदी के पिता द्रुपद थे।

उत्सव—जल्सा

वेदी—किसी शुभ कार्य के लिए तैयार की हुई ऊँची भूमि। प्राय विवाह में या यज्ञ में हवनकुंड के चारों ओर बनाई जाती है।

कमलनयनी—कमल के समान नयन (आँख) वाली।

अनुपम—बेजोड़, अद्वितीय जिसकी उपमा न दी जा सके।

ठाट बाट—सज धज

कर्तव्य—खेल।

देशदेशान्तर—भिन्न भिन्न देश

ठान ली थी—निश्चय कर लिया। पक्का कर लिया था।

धनुर्धारी—धनुष चलाने में निपुण

पृष्ठ ३४

प्रत्यंचा—धनुष की डोरी जिस में लगाकर बाण छोड़ा जाता है।

आकाश यंत्र—आकाश में फिरने वाला यंत्र

अधर—आकाश, खाली स्थान

मुनादी कराई—ढिंढोरा पिटवा दिया

कन्यादान—विवाह में कन्या देना
चौरस—जो ऊँची नीची न हो, समतल
रंगभूमि—जलसे का स्थान
शुभ्र—सफेद
चँदोवे—छोटे छोटे मंडप
यादव—यदु राजा के वंश के।
पृष्ठ ३५
मचान—बाँस आदि को बाँध कर बनाई गई ऊँची बैठक।
सुहावने—सुन्दर
वस्त्राभूषणों—कपड़ों और गहनों
ऐश्वर्य—धन सम्पत्ति
चूर—भरे
डाह—ईर्षा, जलन।
यथाविधि—विधि (रीति-रिवाज) के अनुसार।
अग्नि को तृप्त किया—आग को जलाया।
स्वस्तिवाचन—मंगल पाठ।
कांचनी—कांचन (चंपा या सोना) की माला।
अपूर्व—अनोखा।
लावण्यमयी—सुन्दरी, सुन्दरता से युक्त।
पृष्ठ ३६
नरेश—राजा।
श्रवण कीजिए—सुनिए
सुराख—छेद
तेजस्वी—तेज (कान्ति) वाला
बालमित्र—बचपन के मित्र
लाक्षागृह—लाख का घर, जो दुर्योधन ने पांडवों के लिए बनवाया था।
पृष्ठ ३७
भूषित—सजकर
बलवीर्य—बल-पराक्रम
विकट—विशाल, भयंकर
कुंडल—कान का गहना
भुजबन्द—बाजूबन्द
महाधनुर्धारी—धनुष चलाने में बड़े चतुर
सूत—वर्णसंकर जाति, रथ हाँकने वाला
पृष्ठ ३८
तिरस्कार सूचक—अपमान जताने वाली, घृणा जताने वाली।
सूत पुत्र—सारथि के पुत्र
चेदिराज—चेदिदेश का राजा
भुजा—बाँह
पृष्ठ ३९
फलाहार—फलों का भोजन
वायु भक्षण—वायु खाना
पृष्ठ ४०
मृगचर्म—हरिण का चमड़ा
उत्तरीय—दुपट्टा, चादर
कंठ—गला, स्वर
सूत मागध—भाट
स्तुति-पाठ—प्रशंसा के गीत गाना।

अतुल—अद्वितीय, बहुत अधिक
निरादर—अपमान

पृष्ठ ४१
पांचाल नरेश—पांचाल के राजा
सजाति—एक जाति के
भेद्रना—बहप्पन

पृष्ठ ४२
नाक में दम करना—अत्यधिक तंग करना
ब्रह्म-तेज—ब्राह्मण का तेज
दराब—वह युक्ति जिससे कुश्ती का कोई पेंच रद्द किया जाता है।

संक्षेप

पांचालनरेश द्रुपद ने प्रण किया था कि अपनी पुत्री द्रौपदी का विवाह किसी बड़े धनुर्धारी से करूँगा। इसके लिए उन्होंने एक बड़ा धनुष बनाया, और यह घोषित कर दिया कि जो आकाशयन्त्र के बीचों बीच के सूराख से पाँच बाण चलाकर निशाना मार सकेगा उसी से द्रौपदी का विवाह करेंगे। स्वयंवर में अनेक देशों से राजा आये हुए थे। ब्राह्मणवेशधारी पाण्डव भी वहाँ बैठे हुए थे। कई राजा निशाना मारने उठे, पर असफल रहे। जब महाधनुर्धारी कर्ण उठे तब द्रौपदी ने कह दिया कि मैं सूतपुत्र से विवाह न करूँगी, इस पर अपमानित हो कर्ण बैठ गये। तदनन्तर बाकी राजाओं ने भी अपना बल आजमाया पर जब कोई सफल न हुआ, तब ब्राह्मण वेशधारी अर्जुन उठा, और वह लक्ष्यभेद में सफल हुआ। द्रौपदी ने उसे जयमाला पहनायी। इस पर उपस्थित क्षत्रिय राजा उसे ब्राह्मण समझ मारने को उठे, परन्तु अर्जुन और भीम ने सबको परास्त कर दिया। अंत में कृष्ण ने मौका पा सबको शान्त किया।

१०

साहित्य की महत्ता

पृष्ठ ४४
ज्ञानराशि—ज्ञान के ढेर
सञ्चित—इकट्ठा किया हुआ।
निर्दोष—बिना दोष के
निजका—अपना।
रूपवती—सुन्दरी
कदापि—कभी भी
शोभा—सुन्दरता
श्रीसंपन्नता—सपत्ति से युक्त होना
मानमर्यादा—यश
अवलंबित—आश्रित सहारे
जातिविशेष—कोई खास जाति
उत्कर्ष—समृद्धि, बड़ाई, ऊँचा उठना
अपकर्ष—नीचे गिरना, अपमान, बेकदरी
भाव—विचार
घटनाचक्र—घटनाओं का बारी बारी से आना
स्थिति—अवस्था
प्रतिबिम्ब—छाया
पृष्ठ ४५
प्रथ साहित्य—ग्रंथों में लिखा
अशक्ति—असमर्थता।
निर्जीवता—मुर्दापन
निर्णायक—फैसला करने वाला
एकमात्र—केवल एक
अभाव—न होना।
न्यूनता—कमी
किंवा—अथवा
अपूर्ण सभ्य—आधी सभ्य।
क्षमता—योग्यता, सामर्थ्य।
आईना—शीशा, दर्पण
तत्काल—उसी समय, तुरत
भूतकाल—बीता हुआ समय
क्षीण—दुर्बल, कमजोर
अचिरात्—बिना देर के, शीघ्र ही
नाशोन्मुख—नाश की तरफ मुँह किये।
रसास्वादन—रस का चखना।
मस्तिष्क—दिमाग
वञ्चित—हीन, रहित
निष्क्रिय—निश्चेष्ट, जिसमें कोई क्रिया या काम न हो।
खाद्य—खाने योग्य, भोजन
कालान्तर—कुछ समय के बाद
निर्जीव—मुरदा।

पृ० ४६

सतत—निरंतर, हमेशा
सेवन—आराधना, उपयोग।
नवीनता—नयापन
पौष्टिकता—बल देने की शक्ति
उत्पन्न—पैदा करना, बनाना
विकृत—बिगड़ा हुआ
रुग्ण—बीमार
विकारग्रस्त—खराबी से युक्त
निर्भ्रान्त—भ्रम रहित जिसमें कोई सन्देह न हो।
यथेष्ट—इच्छा के अनुसार
साधन—कारण, उपाय
श्रमपूर्वक—परिश्रम से
सत्साहित्य—अच्छा साहित्य
ह्रास—नाश
दयनीय—दया के योग्य
आडम्बर—ढोंग
विसर्जन—त्याग
उथल पुथल—एक दम बदल जाना
अनुदार—संकुचित, पुरान।

पृ० ४७

हानिकारिणी—हानि करने वाली
रूढ़ियाँ—प्रथा, चाल, रिवाज
उत्पाटन—उखाड़ फेंकना
स्वातन्त्र्य—स्वतन्त्रता
व्यक्तिगत—एक आदमी की
पतित—गिरे हुए।
पुनरुत्थान—दुबारा उठाना
प्रभुता—मलकियत, स्वामित्व ताकत
सत्ता—हस्ति, अधिकार
उन्नयन—ऊपर उठाना।
पादाक्रान्त—पैरों से कुचला हुआ
मस्तक—माथा, सिर
संजीवनी—जीवन देने (प्राणदेन) वाली
आकर—घर खजाना।
संवर्धन—बढ़ाना
अज्ञानान्धकार—अज्ञान का अन्धकार
गर्त—गढ़ा
अस्तित्व—सत्ता, हस्ति।
महत्त्वशाली—महत्त्व (बड़प्पन) से युक्त
अभिवृद्धि—बढ़ती।
अनुराग—प्रेम
समाजद्रोही—समाज से द्वेष करने वाला।
किंबहुना—और अधिक क्या
आत्महंता—अपने आपको मारने वाला

(सरल भाषा)

ज्ञान के ढेर क इकट्ठे किये हुए खजाने को साहित्य कहते हैं। चाहे किसी भाषा में सब तरह के विचार प्रकट किये जा सकते हों और वह बिलकुल निर्दोष भी हो, तो भी उसका यदि अपना साहित्य नहीं है तो सुन्दरी भिखारिन की तरह कोई उसका आदर न करेगा। उसकी सुन्दरता, उसका धनी होना और उसका यश सब उसके साहित्य पर ही आश्रित हैं। किसी जाति के उठने और गिरने की उसके ऊँच और नीचे भावों की, उसके धार्मिक विचारों और समाज के सगठन की, उसके इतिहास की घटनाओं की और उसकी राजनीतिक अवस्था की परछाँई यदि कहीं दिखाई देती है, तो उसके ग्रथ-साहित्य में ही —अर्थात् किसी जाति के साहित्य क ग्रथों स ही उस जाति की अवस्था का पूरा पता लग सकता है। किसी समाज की ताकत या उसमें जीने की शक्ति अथवा समाज की दुर्बलता और मुर्दापन और समाज की सभ्यता तथा जगलीपन का फैसला करने वाला केवल साहित्य ही है। जिस जाति में साहित्य नहीं अथवा साहित्य की कमी दिखाई दे, आप यह बिना किसी शक के निश्चित समझ लीजिए कि वह जाति जगली अथवा आधी सभ्य है। जिस जाति के समाज की जैसी अवस्था होती है, उसका साहित्य भी वैसा ही होता है। जातियों की योग्यता (सामर्थ्य) और उनकी जीवन शक्ति यदि कहीं साफ-साफ दिखाई देती है तो वह उनके साहित्य रूपी दर्पण में ही। उस दर्पण के सामने आते ही हमें तुरन्त मालूम हो जाता है कि अमुक जाति की जीवनी शक्ति इस समय कितनी और कैसी है और बीते हुए समय में कितनी और

कैसी थी। आप भोजन करना बन्द कर दें या कम कर दें तो शीघ्र ही आपका शरीर दुर्बल हो जायगा और नष्ट होने लगेगा इसी तरह यदि आप साहित्य के रस को चखना—साहित्य को पढ़ना—छोड़ दें तो आपका दिमाग निश्चेष्ट होकर धीरे धीरे किसी काम का न रहेगा। शरीर के जिस अंग से काम न लिया जाय, उस अंग की काम करने की शक्ति थोड़े दिन में नष्ट हो जाती है। शरीर का भोजन साधारण खान की वस्तुएँ हैं और दिमाग का भोजन साहित्य है। इस लिए यदि हम अपने दिमाग को निश्चेष्ट और कुछ समय के बाद मुर्दे के समान नहीं कर देना चाहते तो हमें सदा साहित्य का सेवन (पढ़ना लिखना) चाहिये और उसे पुष्ट करने के लिए नया साहित्य बनाये रहना चाहिए। पर याद रखिये कि खराब भोजन से जैसे शरीर बीमार होकर खराब हो जाता है, उसी तरह खराब साहित्य से दिमाग भी खराब होकर बिगड़ जाता है। दिमाग का बलवान और सामर्थ्यवान होना अच्छे साहित्य के ही सहारे है। इसलिए इसमें कोई सदेह नहीं कि दिमाग को इच्छानुसार बढ़ाने का उपाय एक मात्र अच्छा साहित्य है। यदि हम जीवित रहना है और सभ्यता की दौड़ में दूसरी जातियों को बराबरी करनी है तो हमें परिश्रम करके, बड़े जोश के साथ अच्छे साहित्य को पैदा करना और प्राचीन साहित्य की रक्षा करनी चाहिए और यदि हम अपने मानसिक जीवन का नाश करके आजकल की दया के योग्य (गिरी हुई) दशा में पड़ा रहना अच्छा समझते हों तो आज ही इस 'साहित्य सम्मेलन' (हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग—यह संस्था हिन्दी प्रचार के लिए बनी है। इसके कानपुर के वार्षिक अधिवेशन में सभापति के

११

विषधर सर्प [जहरीले साँप]

श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी

पृष्ठ ४८

संख्यातीत-जिसकी गिनती न हो सके, असंख्य
कीट-कीड़े
पतंग-पतंगा
ससीम-सीमावाली, सीमित
नैसर्गिक-प्रकृति के
अधिकांश-अधिकतर
जीवनचर्या-जीवन के कामकाज
निर्भ्रान्त-भ्रम रहित
उद्भिज-वृक्ष लता आदि जो भूमि फोड़कर निकलते हैं, वनस्पति

पृष्ठ ४९

व्यापक-सब जगह फैले हुए
समग्र-सारा
नियमन-कायदे में बाँधना, एक नियम में बाँधना
अचिन्त्य-जो सोचा या समझा न जा सके।
शक्तिमत्ता-शक्तिवान होना
नास्तिक-ईश्वर को न माननेवाले
जगन्नियन्ता-जगत् को नियम में बाँधने वाला
कर्ता-बनाने वाला
जड़ प्रकृति-जिसमें चेतना शक्ति नहीं ऐसी प्रकृति
आसन-स्थान
पुरुष-परमात्मा, सृष्टि की उत्पत्ति करने वाला
गृहनिर्माता-घर बनाने वाला
विकाश-धीरे धीरे बढ़ना
विचारकर्ता-विचार करनेवाला
कोटि-दरजा

पृष्ठ ५०

सम्पादन-इकट्ठा करना
लौकिक-इस लोक संबंधी
श्रम-मेहनत
अन्नग्रास-अन्न का टुकड़ा
जैकड़ा-एक प्रकार का पौधा

पृष्ठ ५१

अकर्मण्य-निकम्मा आलसी
प्रयास-कोशिश
निर्विष-बिना जहर का
जलचर-जल में रहने वाले
दंष्ट्रा-दाढ़

पृष्ठ ५२
नागिन—सर्पिणी
हिंसकवृत्ति—मारने की प्रवृत्ति
कुपित—क्रुद्ध, गुस्से
उत्थित—उठा हुआ
कोपकराल—क्रोध से भयंकर
दहलना—काँपना
भक्ष्य—भोजन
प्रचुरता—अधिकता
उपभेद—छोटे छोटे भेद
कुंडलाकार—गोला
पृष्ठ ५३
क्रोधाविष्ट—गुस्से से भरा
दैर्घ्य—लंबाई, विस्तार
काहिल—आलसी
पृष्ठ ५४
ध्वनि—आवाज
तन्मय—ध्यान से युक्त
पृष्ठ ५५
गाभ—केले के डंठल का गूदा

(संक्षेप)

हिन्दुस्तान में साँपों की ३०० जातियाँ हैं, उनमें से कुछ जातियाँ विषधर और कुछ विषरहित हैं। जलचर साँप सभी विषधर हैं। स्थलचर साँपों में हिन्दुस्तान में दो प्रकार के काले साँप, बारह प्रकार के करैत और सात प्रकार के भूरे साँप पाए जाते हैं। काले नागों में से एक जाति बहुत बड़ी होती है, उसे नागराज कहते हैं। यह साँप सबसे अधिक भयंकर होता है, और केवल घने जंगलों में मिलता है। साधारण जाति के काले साँप प्रचुरता से हर जगह पाये जाते हैं। करैत जाति के साँप का रंग कुछ भूरा होता है, उसके शरीर पर थोड़ी दूर पर छल्ले से बने रहते हैं। यह साँप बस्तियों में ही अधिक होता है। यह विषधर होता है। धामन जाति के साँप बहुत कम देखने में आते हैं। भूरे साँप बहुत अधिक पाये जाते हैं, ये भागते बहुत कम हैं। इनके भी कई उपभेद हैं।

विषधर साँपों के सिर से एक छोटी सी थैली होती है। काटते समय स्वाभाव पड़ने ही थैली का मुंह खुल जाता है और विष दांतों में पहुंच जाता है। सर्प के विष के प्रभाव को दूर करने का आजतक अनेक आविष्कार हुये हैं, पर पूरी सफलता किसी से भी नहीं मिला। साँप काटने ही कटी हुई जगह के कुछ दूर ऊपर थोड़ थोड़ अन्तर पर दो तीन पतली रस्सी से कस देना चाहिए। ऐसा करने से विष आगे नहीं बढ़ता। फिर उस जगह को तेज चाकू से काट कर, वहाँ से खून निकाल देना चाहिये या उस जगह को गरम लोहे से दाग देना चाहिए।

हितसंपादन-भलाई करना

पृष्ठ ५९

उपार्जन-इकट्ठा करना

शौर्य्य-शूरता, वीरता

संग्राम-लड़ाई

युद्धविद्या विशारद-युद्ध विद्या जानने वाला

पृष्ठ ६०

दूरदर्शिता-दूर की बात सोचने का गुण, दूरंदेशी

राष्ट्रीय विप्लव } राजनीतिक
राष्ट्र विप्लव } क्रांति उथल
राज्य विप्लव } पुथल

अधिष्ठाता-मुखिया

शासन-हकूमत

भ्रातृभाव-भाईपन

असह्य-न सहने योग्य

यातनाएँ-पीड़ाएँ

निर्दोष-बेकसूर

प्रजातन्त्र-वह शासन प्रणाली जिस में कोई राजा नहीं होता, प्रजा ही समय समय पर अपना प्रधान शासक चुन लेती है।

अवहेलना-अपमान

धर्मानुयायी-धर्म को मानने वाले

पृष्ठ ६१

द्वंद्वयुद्ध-लड़ाई

आत्मरक्षा-अपनी रक्षा

वयोवृद्ध-उमर में बूढ़े

तरुण-युवक

दुश्चरित्रता-बदचलनी, बुरा चरित्र

अनाचार-दुराचार, बदचलनी

लज्जाहीनता-लज्जा न होना

अङ्ग-विभाग

विच्छृङ्खल-बेसिलसिला, जिसमें कोई सिलसिला या क्रम न हो

पद-अधिकार

अलौकिक-अद्भुत

अस्थिरता-जब कोई स्थिरता या नियम न हो

शासन परिपाटी-शासन का तरीका

अराजकता-अशान्ति

विकराल-भयंकर

त्रास-डर

पृष्ठ ६२

संकीर्णता-कमी

दक्षता-कुशलता, चतुराई

बहिष्कृत-(समाज से) बाहर निकाले हुए

समस्याएँ-उलझन

अविरत-निरंतर, बिना विराम के

पृष्ठ ६३

निरंकुशता-बिना किसी प्रकार के डर या बंधन का होना, जो दिल में आए कर देना

कारागार-जेल

बाध्य-बँधा हुआ

पृष्ठ ६४

आजन्म-जन्म भर
अधिपति-मालिक
राज्याभिषेक-राज्य पर बैठना
सम्राट्-राजाओं का भी राजा
पराजित-हारा हुआ
संघ-युद्ध
रण क्षेत्र-युद्ध का मैदान
किञ्चिन्मात्र-थोड़ा भी
स्वार्थ सिद्धि-स्वार्थ का सिद्ध करना
युद्ध की प्रचण्ड अग्नि में झोंक दिया-युद्ध में मरवा दिया

पृष्ठ ६५

पराजित किया-हराया
शोचनीय-दुःख के योग्य
चंचला-राज्य लक्ष्मी, संपत्ति
सुराज्य-अच्छा राज्य
बागडोर-लगाम, कामकाज का भार
चूर हो गई थी-टूट गई थी
स्वार्थपरता-खुदगर्जी, अपना मतलब सिद्ध करने की चिन्ता
स्वत्व-अधिकार
साधन-उपाय
अमर-जो न मरे, जो न मिटे
युवा-जवान

(संक्षेप)

१८वीं शताब्दी में फ्रांस में राज्यक्रान्ति हुई थी, जिस में वहाँ के राजा और राजपरिवार से संबंध रखने वाले आदमियों को खत्म कर दिया गया था। स्वतन्त्रता, समानता, तथा भ्रातृभाव के भाव ही राज्यक्रान्ति के कारण थे, अर्थात् जनता में ये विचार पैदा हो गये थे कि सब पुरुष स्वतन्त्र हैं सब पुरुष एक समान हैं, ऊँच नीच का भाव छोड़ कर सब में भाई चारा होना चाहिये, इन्हीं भावों के कारण राज्यक्रान्ति हुई। इन विचारों के कारण रईसों को फाँसी दी गयी पादरियों की संपत्ति छीन ली गई, और प्रजातंत्र राज्य की स्थापना हो गई परन्तु एक विचार का राष्ट्रीय दल दूसरे विचार के राष्ट्रीय दल से हमेशा लड़ता रहता था। इस कारण राज्य में कोई सिलसिला

नहीं था। इस गड़बड़ी के कारण फ्रांस की अवस्था दिन पर दिन खराब होती जाती थी। ऐसी अवस्था मे नैपोलियन बोनापार्ट ने वहाँ का शासन अपने हाथ में लिया। नैपोलियन कार्सिका नामक टापू के एक साधारण वकील के घर पैदा हुआ था, उसकी माता इतनी शिक्षित न थी, पर बड़ी वीर,दृढ़प्रतिज्ञ और विचारशील थी। ये सब गुण नैपोलियन में आये थे। वह एक साधारण सैनिक से एक शासक बन बैठा। उस समय उसके सामने बड़े प्रश्न थे, राज्यक्रांति में जिन रईसों का बहिष्कार किया गया था, वे षड्यन्त्र करते रहते थे, उनके षड्यन्त्रों को रोकना, राष्ट्रीय विचार के व्यक्तियों के दलों का असन्तोष दूर करना और उन पादरियों को जिन की सम्पत्ति लूट ली गई थी, शान्त करना। ये सब कठिन उलझनें उसके सामने थीं। नैपोलियन ने शीघ्र ही काम सँभाल लिया। वह कड़े परिश्रम से भी न थकता था। छोटी-छोटी बातों को वह स्वयं देखता था। इन सब के नियंत्रण के लिए उसने पुलिस को बहुत से अधिकार दे दिये थे। व्यक्तिगत स्वतंत्रता को बहुत कम कर दिया। संपादकों को राज्य के विरुद्ध लेख लिखने पर कड़ा दण्ड दिया जाता था। वह स्त्रियों को ऊँची शिक्षा और स्वतन्त्रता न देना चाहता था और उनका बहुत आदर न करता था।

घर में शान्ति स्थापन करने के बाद उसने बहुत से बाहर के देशों को जीत लिया, इटली,स्विटज़रलैण्ड और हालैण्ड फ्रांस के अधीन हो गये। परन्तु अन्त में वाटरलू के मैदान में १८१५ अंगरेज़ों से हार गया। ड्यूक आफ वैलिंगटन ने

नैपोलियन को कैद कर सेंटहेलेना नामक टापू में भेज दिया। और वह वहीं एकान्त में सन् १८२१ में इस दुनियाँ से चल बसा।

नैपोलियन का साम्राज्य यद्यपि अधिक वर्ष नहीं रहा पर वह एक असाधारण पुरुष था, फ्रांस की उन्नति का बहुत सा श्रेय उसी को है और इतिहास में उसका नाम सदा अमर रहेगा।

१३
देवबाला की मृत्यु

(लेखक—श्रीयुत अयोध्यासिंह उपाध्याय)

पृष्ठ ६७
बयार—वायु हवा
पृष्ठ ६८
रूख—पेड़
ठौर—स्थान
किरिया करम—मरने के बाद का अन्तिम संस्कार
पृष्ठ ७०
तिरिया—स्त्री
जग में नाता तोड़ लिया—संसार से अलग होगया
जी के उचाट—दिल खराब होने से
बिना बेल—समय से पहले
घरदुआर—घरद्वार, घरबार
तूँबी और लँगोटी—साधुओं के लिए आवश्यक चीज
सुरत—याद
पृष्ठ ७१
कलेजा पकड़ना—दुःखित होते रहना
भभूत—राख
पृष्ठ ७२
जोत—ज्योति प्रकाश
ओझल—दूर होगई
खोटी छुटा कर—बुराई दूर कर

(संक्षेप)

देवबाला और देवनन्दन बचपन के साथी थे। दोनों एक

साथ खेले थे। किशोरावस्था मे दोनों एक दूसरे को चाहने लगे। परन्तु देवनन्दन छोटे कुल का था, अत देवबाला के पिता ने उसकी शादी अनपढ़, निकम्मे, निठल्ले पर कुलीन रामनाथ के साथ कर दी। निराश हो देवनन्दन घरबार छोड़ सन्यासी हो गया। रामनाथ शराबी भी था, वह देवबाला को छोड़ कर स्वय कहीं निकल गया। धीरे धीरे देवबाला के सब सम्बन्धी इस लोक को छोड़ गये। इन आपत्तियों के कारण देवबाला चारपाई पर पड़ गयी। देवनन्दन ने उसकी बड़ी सेवा की। फिर वह रामनाथ को भी ढूँढ लाया। पर इतने में देवबाला भी इस ससार से चल बसी। धीरे धीरे सब देवबाला को भूल गये, परन्तु देवनन्दन साधु होने पर भी उसको भुला न सका। वह समझता था कि देवबाला की बुरी दशा सामाजिक कुरीतियों के कारण हुई, अत वह देश की इन बुरी चालों को दूर करने के लिए सदा इधर-उधर घूमता रहता था। एक दिन वह भी इस धरती को छोड़ गया। सब लोग यही कहते थे क्या फिर कोई देवनन्दन जैसा माई का लाल जन्मेगा।

१४
सभापण में शिष्टाचार

(लेखक—श्री कामताप्रसाद गुरु)

पृष्ठ ७३ संभाषण-बातचीत	व्याकरणसम्मत-व्याकरण के अनुसार ठीक

सारगर्भित–सार से युक्त, श्रम लिये लिए हुए
विनोद–हँसी
विद्वत्तासूचक–विद्वत्ता बताने वाला

पृष्ठ ७४
कहै कृपाराम सब सीखियो
निकाम एक बोलिबो न सीखो
सब सारो गयो धूल में–कृपाराम कवि कहते हैं कि सब कुछ सीखने पर भी यदि बोलना न सीखा तो सब व्यर्थ है।
शिष्टाचार–भले आदमियों का सा बर्ताव
श्रोता–सुनने वाला
मर्यादा–पद
अनुरूप–लायक, अनुसार
घनिष्ठ परिचय–बहुत अधिक जान पहचान
अत्यन्त प्रतिष्ठित–बहुत अधिक प्रतिष्ठा (आदर) वाले

पृष्ठ ७५
वक्ता–बोलने वाला
अनुराग–प्रेम
कटाक्ष–ताना
आक्षेप–निंदा, दोष लगाना
व्यंग्य–ताना
उपालंभ–उलहना
अश्लीलता–गंदापन

मुक्त–बचाकर, दूर
अहम्मन्यता–अहंकार, घमंड
कटु–कड़वा, कठोर
वय–उमर
आग्रह–ज़ोर

पृष्ठ ७६
आत्मप्रशंसा–अपनी बड़ाई
यथासम्भव–जहाँ तक होसके
टेव–आदत
उपमा–मिलान, किसी वस्तु के रूप रंग अथवा गुण की दूसरी वस्तु के रूप, रंग और गुण से तुलना करना। जैसे उसका मुख चन्द्र के समान है, यहाँ मुख और चन्द्रमा में समानता बताई गई है।
रूपक–सादृश्य समानता।
अशिष्टता–जो भले आदमियों का सा व्यवहार न हो।
अनुचित–ठीक नहीं।
विषय–बात प्रसंग
इच्छापूर्ति–इच्छा पूरी करना

पृ० ७७
क्षन्तव्य–क्षमा करने के योग्य
अकारण–बिना कारण के
परनिन्दक–दूसरे की निन्दा करने वाला
क्षमा-प्रार्थना–क्षमा माँगना

आवेश-जोश
मौन धारण-चुप रहना
परामर्श-सलाह
पृ० ७८
भयंकरता-जिससे डर लगे
उल्लेख-जिक्र, वर्णन
विरत करना-हटाना
आभास-पता
पृ० ७९
गहन-गूढ़
विचार स्वातंत्र्य-विचारों की स्वतंत्रता
वैयक्तिक धारणा-एक व्यक्ति का निश्चय, निज़ू निश्चय
भाषाविज्ञता-भाषा का ज्ञान
उपहासयोग्य-हँसी के लायक
पृ० ८०
उर्दूदानी-उर्दू में प्रवीणता
अनुरोध-तकाज़ा
पृ० ८१
संसर्ग-साथ
खिचड़ी संभाषण प्रथा-मिली जुली भाषा (उर्दू हिंदी, या हिंदी अंगरेज़ी) में बोलने का रिवाज
आधिपत्य-अधिकार
भद्देपन-भद्दा, भौंडा

(सत्तेप—संभाषण के कुछ नियम)

बातचीत इस प्रकार करनी चाहिये जिससे सुनने वाला उकता न जाय।

बातचीत में ताना, उलहना, गवांपन आदि न आना चाहिये।

जब तक आवश्यकता न पड़े तब तक किसी की जाति कुल आदि के बारे में पूछताछ न करनी चाहिये।

बातचीत में जहाँ तक हो सके अपनी बड़ाई न की जाय।

दूसरों की बातचीत में दखल देना अशिष्टता है।

किसी अनुपस्थित सज्जन की बिना कारण निंदा करना

[illegible] में क्रोध के आवेश को रोकना चाहिये।

रोगी मनुष्य से अधिक बातचीत करना या उसके रोग को बढ़ा कर कहना हानिकारक है।

जिस समाज में बातचीत कर रहे हों, उसके अनुसार ही भाषा बोलनी चाहिये।

उच्चारण दोषों से जहाँ तक हो सके बचना चाहिये।

१५

हिन्दी में विराम-चिह्नों का दुरुपयोग

पृ० ८२, ८३
सामयिक-आज कल के
विवेचन-छानबीन, जाँच
अर्थबोध-अर्थ का ज्ञान
मनोविकार-मन में उत्पन्न होने वाले विकार क्रोध,दया,आदि
पृ० ८४ ८५
यथार्थ-सही अर्थको बताने वाला
भ्रामक-भ्रम पैदा करने वाला
ऐच्छिक है-अपनी इच्छा पर है
स्वच्छन्द-मनमाना
द्रव्य-रुपया पैसा
सार्थक-सफल
विजातीय-दूसरी जाति के
पृ० ८६
संवादमय-बातचीत वाले
सर्वसम्मत-सब में माना गया
अमानुषी-मनुष्य की शक्ति से बाहर का
पृ० ८८ ८९
धात्वर्थ-धातु का अर्थ
निरपवाद-जिसका विरोध न हो
ऋतुपरिवर्तन-ऋतु का बदलना
समुच्चयबोधक-जो अव्यय एक वाक्य का संबंध दूसरे वाक्य से मिलाता है, उसे समुच्चयबोधक कहते हैं।
प्रक्रिया-युक्ति तरीका
संयुक्त वाक्य-वह वाक्य जिनमें दो या दो से अधिक सरल अथवा मिश्रितवाक्य परस्प एक दूसरे पर आश्रित न होकर मिलते हैं
कोष्ठकगत-कोष्ठ में आया हुआ

पृ ९०

वैयाकरण–व्याकरण को जानने वाला

दुर्गति–बुरी हालत।

पृ ९२

सपत्ति शास्त्र–वह शास्त्र जिसमें रुपये की प्राप्ति, रक्षा और वृद्धि का विधान हो

(संक्षेप)

बातचीत करने में हम जहाँ तहाँ थोड़ा बहुत ठहरते हैं, लिखने में उन जगहों पर विराम चिह्न डाल देते हैं। ऐसे ही मनोभावों को प्रगट करने के लिए लिखने में भिन्न भिन्न चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। इन चिह्नों को विराम चिह्न कहते हैं। अँगरेज़ी भाषा की देखादेखी हिन्दी में भी इनका प्रयोग बहुत बढ़ गया है पर कई लेखक इनका दुरुपयोग करते हैं, विद्वान् लेखक ने यही भली भाँति दर्शाया है।

१६

शुक की कथा

(लेखक—श्रीयुत गदाधर सिंह)

पृ ९४, ९५

बाहुबल–बाहुओं का बल

अशेष–सारे

अबटक–बिना रोक-टोक का

पृथ्वीनाथ–पृथ्वी के मालिक

आकर–खजाना, स्थान।

पक्षि रत्न–पक्षियों में रत्न के समान

पदारविन्द–चरण रूपी कमल

नृपाल

राजाज्ञा–राजा की आज्ञा

हेममय–सोने के

आभरण–गहने

मणिमय–मणियों के

सुमेरुगिरि–पुराणों के अनुसार एक पहाड़ जो सोने का कहा जाता है, और पर्वतों का राजा भी माना जाता है

भूधरमण्डल–पहाड़ों के मण्डल

श्री–शोभा

चमत्कृत-हैरान
चितवन-दृष्टि, नज़र

पृष्ठ ६६, ६७

दृष्टिपात-नज़र डालना
रूप लावण्य-रूप-सौन्दर्य
तर्कणा-विचार
अनहोना-न होने वाला, असम्भव
संभव-उत्पत्ति जन्म, पैदा होना
सकल-सब
शास्त्रवेत्ता-शास्त्रों का जानने वाला
सहृदय-अच्छा मन वाला।
कलाभिज्ञ-कलाओं का जानने वाला
कंठाग्र रमती है-ज़बानी याद है।
गुणग्राही-गुणियों का आदर करने वाला।
अनुग्रह-कृपा
कृतार्थ-सफल मनोरथ
अर्थयुक्त-अर्थ वाले, जिनका अर्थ हो
विस्मित-हैरान
आहार-खाना
निद्रा-सोना
वाक्शक्ति-बोलने की ताकत
व्यापार-व्यवहार
मनोवृत्ति-विचार।
नाईं-समान
अनायास-बिना कोशिश के

पृष्ठ ९८, ९९

सभाभंगसूचक-सभा की समाप्ति का समय हो गया है इस की सूचना देने वाला
मध्याह्न काल-दोपहर
अपर-दूसरा
ताम्बूलवाहक-पान खिलाने वाला नौकर
अभ्यन्तर-भीतर
पौढ़-लेट
शयनागार-सोने का कमरा
सिद्ध-एक प्रकार का देवता
कलेवर-शरीर
आराधना-उपासना
उद्वेग-घबराहट
भरतखण्ड-भारतवर्ष
विन्ध्याचल-विन्ध्यपर्वत
दशानन-दस मुँह वाला रावण
निशाचर-राक्षस
जानकीवियोग-सीता की जुदाई
सजलनयन-आँसू भरी आँखें
अनुताप-दुःख
लताद्रुमादि-बेल, पेड़ आदि
सरोवर-तालाब
शाल्मली-सेमल

छतनार-छत की तरह फैली हुई
गगनमंडल-आकाश
पेड़ी-पेड़ का तना
चतुर्दिक-चारों ओर
फुनगी-वृक्ष या पौधे का अगला हिस्सा
खोता-घोंसला
पल्लवमय-पत्तों से युक्त
पृ १००, १०१
दिग्दिगान्तरों-भिन्न भिन्न देशों में
दैवयोग-भाग्य से
उपरान्त-बाद
प्रसव पीड़ा-बच्चा जनने की पीड़ा
आहार द्रव्य-खाने का सामान
रक्तवर्ण-लाल रंग का
परिष्कृत-साफ
मृगया-शिकार
बनैले-जंगली
महिष-भैंसे
कलरव-चहचहाहट
व्याध-शिकारी
भूतमध्यस्थ-भूतों से घिरा हुआ
भैरव-महादेव
दूत-संयुक्त-दूतों से युक्त
कालान्तक-यमराज

रुधिर-खून
पृ १०२, १०३
असुर-राक्षस
दुष्कर्मी-बुरे काम करने वाले
सत्कर्म-अच्छे काम
मृणाल-कमल की डंडी
असाध्य-कठिन
निसैनी-सीढ़ी
अचिन्तित-न सोची हुई
करकराल-सर्प-साँपके समान भयंकर हाथ
कम्पित-काँपते हुए
चरण-पैर
पृष्ठ १०४, १०५
कालग्रास-मौत के ग्रास से
तमाल-एक ऊँचा सुन्दर सदाबहार वृक्ष, जो काले रंग का होता है
शावक-बच्चे
पिपासा-प्यास
मृत्तिका-मिट्टी
लिप्त हो गया-भर गया
जीवन आशा-जीने की आशा
स्वत -अपने आप
विकलेन्द्रिय-विकल (बेचैन) होगई हैं इन्द्रियाँ (हाथ पैर) जिसकी
पत्नी विरह-स्त्री की जुदाई
परित्याग-छोड़कर

उत्तप्त करना—तपाना
शुष्क—सूखा
त्रिपुण्ड—राख की तीन बड़ी पड़ी रेखाओं का तिलक, जो शैव लोग लगाते हैं
स्फटिक—बिल्लौर पत्थर
कृष्ण—काला
शान्तिसागर—शान्ति के सागर, अत्यधिक शान्त
पार्वती पल्लव—पार्वती के पति, महादेव
टहलुए—सेवक नौकर

पृ १०६, १०७

मानस—तालाब
नलिनीपत्र—कमलिनी का पत्ता
अर्घ—जल फूल, मूल आदि पूजा में देने योग्य पदार्थ
पुनीत—पवित्र
कुसुमित—पुष्पित, फूलों से लदे
पल्लवित—पत्तों से युक्त
भूमि स्पर्श करते थे—पृथ्वी को छूते थे
लवंग—लौंग
मधुप—भौंरा
चंपक—चंपा
किंशुक—पलाश, ढाक
मल्लिका—मोतिया, बेला
मालती—एक प्रकार की बेल जिसका फूल सफेद होता है
मलिन—मैली
होमगंधमय—हवन की गंध (सुगंध) से युक्त
निर्भय—बिना डर
रक्त पल्लव संपन्न—लाल लाल पत्तों से युक्त
रक्ताशोक—लाल अशोक का पेड़।
ललाट—माथा
पञ्जर—ऊपरी धड़ (छाती) की हड्डियों का घेरा, ठठरी
श्रवण संपुट—कान
श्वेत लोम—सफेद बाल, रोएँ
प्रवाह—स्रोत, धारा
क्रोध-भुजंग—क्रोध रूपी साँप
महामंत्र—प्रभावशाली मंत्र जिससे साँप को वश में किया जाता है
सत्पथदर्शक—अच्छे मार्ग को दिखाने वाले
आश्रय—सहारा
विस्मय—आश्चर्य
मात्सर्य—ईर्ष्या, डाह, जलन
शृगाल—गीदड़

पृष्ठ १०८, १०६

त्रिकालदर्शी—तीनों कालों की बात जानने वाले।

करतल पदार्थ की भाँति था—हथेली में रखी हुई वस्तु की तरह था—अर्थात् जिस तरह हाथ में रखी सब चीजों का ज्ञान होता है, इस तरह उन्हें सब चीजों का ज्ञान था।
उद्वेगजनक—घबराहट पैदा करने वाली।
देवार्चन—देवताओं की पूजा
आद्योपान्त—शुरू से अंत तक
रक्तचंदन—लाल चंदन
लोहित-वर्ण सूर्य—लाल, खून के से रंग का सूर्य
तमारि—अंधकार का शत्रु, सूर्य
स्वर्ण वर्ण—सोने के रंग का।
पत्ररूपीहस्त—पत्तों रूपी हाथ।
विहङ्गों—पक्षियों
पृष्ठ ११०
अग्निहोत्र—हवन
तिमिरनाशक—अँधेरे को नष्ट करने वाला, सूर्य
दृष्टिगोचर हुई—नजर आई
सुधाधर—चंद्रमा
कलामात्र—अंश (टुकड़ा) मात्र
मण्डल—पूरा गोला
कोई—कुमुदिनी
समीर—हवा
आल्हादित—प्रसन्न

(सरल भाषा तथा संक्षेप)

शूद्रक नाम का एक बड़ा बुद्धिमान राजा अपनी भुजाओं के बल और पराक्रम से बारी बारी से सारे देश को जीतकर वेत्रवती नाम की नदी के किनारे विदिशा नामक नगरी में बिना रोकटोक के राज्य करता था। एक दिन राजसभा में द्वारपाल ने आकर कहा—"पृथ्वी के मालिक! दक्षिण देश से एक तोता लिए हुए एक चाण्डाल कन्या आई है। वह कहती है कि महाराज सब रत्नों के खजाने हैं इसलिए मैं यह पक्षियों में रत्न भी उनकी सेवा में भेंट करने लाई हूँ। आज्ञा हो तो यह आकर आपके चरण कमलों का दर्शन करे। राजा ने आज्ञा दे दी।

कन्या ने सभामंडप में घुसकर देखा कि ऊपर एक मनो हर चदोवा टँगा है ।

नीचे राजा सोने के गहने पहने हुए एक मणियों के सिं सन पर बैठा है । उसके चारों ओर सभासद्गण अपने अपने उचित स्थान पर बैठे हैं। उस समय की शोभा ऐसी जान पड़ती थी मानो सोने का पहाड़ पर्वतराज सुमेरु और पर्वतों के बीच में अद्भुत सुंदरता धारण किये बैठा हो। चांडाल कन्या ने भूमि पर छड़ी मारकर सबकी नजर अपनी ओर खींच ली। महाराज ने भी नजर डालकर देखा कि एक बूढ़ा मनुष्य और पीछे पिंजरा हाथ में लिए एक बालक और उन दोनों के बीच में एक बड़ी सुकुमार कन्या खड़ी है कन्या किसी तरह भी चांडाल कुल की न जान पड़ती थी। राजा उसका अनुपम सौंदर्य देखकर दंग हो एकटक उसकी ओर देखने लगे, और मन में यह सोचने लगे कि लोग इसे नीच जाति की समझकर न छुएंगे, यही सोच कर विधाता ने शायद इसे इतना रूप दिया है। यदि यह कारण न होता तो इतनी सुंदरता और इतने रूप का होना भी कठिन है, और फिर चांडाल के घर में तो ऐसी सुन्दरी का जन्म होना भी असंभव है और यह आश्चर्य का विषय है। राजा यह सोच रहे थे। इतने में बूढ़ा बोला—महाराज यह तोता सब शास्त्रों को जानने वाला, राजनीति को समझने वाला, अच्छा बोलने वाला, चालाक, सब कलाओं को जानने वाला, बड़ा भारी कवि और गुणी है। जो विद्या मनुष्यों को भी कठिनता से आती है, वह इस जवानी याद नाम वैशम्पायन है। संसार के सब

तोते को आपके पास लाया हूँ। यदि आप कृपा कर इसको ले लेंगे तो मैं सफल हो जाऊँगा। यह कह बूढ़ा दूर जा खड़ा हुआ।

तोते ने पिंजरे के भीतर से अपना दाहिना पैर उठाकर 'राजा की जय हो' इस प्रकार आशीर्वाद दिया। राजा पक्षी के मुँह से सार्थक वाणी सुन कर बड़ा हैरान हुआ और मंत्री से कहने लगा कि मैं समझता था कि पक्षी केवल खाना, सोना और डरना जानते हैं, उनमें समझने और बोलने की ताकत नहीं होती। परन्तु तोते का यह व्यवहार देख कर आश्चर्य होता है। वह आदमियों की तरह बोलता है, और ब्राह्मणों की तरह ही आशीर्वाद देता है। मंत्री बोला—पक्षी अगर मनुष्य आदि के समान बोल सकता है तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं। लोग तो मैना आदि पक्षियों को बड़े श्रम से सिखाते हैं, और ये भी पिछले जन्म के संस्कारों के कारण बिना कोशिश के ही सीख लेते हैं।

यह बातचीत होते होते सभा के समाप्त होने का समय हो गया है, यह बताने वाला दोपहर का घण्टा बजा। नहाने का समय आया जान राजा ने सभा में बैठे हुए दूसरे राजाओं को नम्र वचन कह कर विदा किया। चाण्डाल-कन्या को और वैशम्पायन को विश्राम करने तथा स्नान आदि कराने के लिए कह दिया।

इसके बाद राजा स्नान, पूजा आदि कर शयनागार में शय्या पर लेटे और द्वारपाल को वैशम्पायन को लाने की [illegible]। राजा ने वैशम्पायन से पूछा—हे वैशम्पायन तुम्हारा [illegible] देश में हुआ है ? तुम सिद्ध हो या कोई [illegible]

या तप के बल से शरीर बदल कर देश देश में घूमते फिरते हो, या तुमने किसी देवता की पूजा कर वर पाया है। अपना सारा हाल कहकर हमारे मन को शान्त करो।

वैशम्पायन ने अपनी राम कहानी कहनी शुरू की— भारतवर्ष के बीच में विन्ध्याचल पहाड़ के पास विन्ध्य नाम का जंगल है। उस जंगल में गोदावरी नदी के तीर पर अगस्त्य ऋषि का आश्रम है, जहाँ प्रसा में राम लक्ष्मण तथा सीता रहे थे। जहां दुष्ट रावण के भेजे हुए मारीच नामक राक्षस ने सोने का मृग बन कर सीता का हरण कराया था, और राम लक्ष्मण आँखों में आँसू भरे कई तरह का विलाप और पछतावा करते हुए तिस जंगल के पशु पक्षी तथा बेलों और पेड़ों को भी दुःखी करते थे। उसी आश्रम के पास पंपा नामक तालाब के पश्चिम की ओर एक सेमल का पेड़ था। उस वृक्ष की शाखाएँ इतनी लम्बी और छाते की तरह फैली थीं, मानो पेड़ ने आकाश की ऊँचाई नापने के लिए अपने हाथ फैलाए हों। उसका तना इतना ऊंचा था मानो किसी ने पृथ्वी की चारों दिशाओं को देखने को ऊँचा सिर उठाया हो। उस वृक्ष के खोखलों में घोंसला बनाकर कई प्रकार के तोता मैना आदि पक्षी सुख से रहते थे। रात को पक्षी उसमें आराम करते और सवेरे इकट्ठे हो इधर उधर खाने की तलाश में उड़ जाते।

इस पुराने पेड़ के खोखले में मेरे माता पिता रहते थे। बदकिस्मती से मेरे पैदा होने के बाद ही मेरी माता बच्चा

जनने की पीड़ा से मर गई। तब मेरे पिता मेरी माता के मरने के दुःख को भुला कर बड़े लाड़ प्यार से मुझे पालने लगे। एक दिन सवेरे जब चन्द्रमा छिप गया, पक्षी सब चहचहा रहे थे, सूर्य-देव के निकलने से आकाश लाल हो रहा था, आकाश में फैली हुई अंधकार रूपी धूली सूर्य की किरण रूपी झाड़ू से साफ हो गई थी, सप्तऋषि (रात को दिखने वाले तारे) स्नानादि के लिये मानसरोवर के तट पर उतरे थे—अर्थात् डूब गये थे, उस समय उस वृक्ष पर रहने वाले सब पक्षी भी भिन्न भिन्न देशों को चले गये। उनके बच्चे चुपचाप घोंसलों में बैठे थे। मैं भी अपने पिता के पास बैठा था कि इतने में शिकार का शब्द सुनाई दिया। हाथी, सुअर आदि जन्तु इधर उधर दौड़ते दिखाई देने लगे। हाथी की चिंघाड़ से, शेर की दहाड़ से और जानवरों की आवाज़ से चारों तरफ शोर मच गया।

जब शोर कुछ कम हुआ, तब मैंने देखा कि यमराज के भाई के समान भयंकर रूप वाले एक सेनापति के साथ यम-दूतों की तरह बहुत से शिकारी चले आते हैं। उनको देख कर ऐसा मालूम पड़ता है कि मानों भूतों के बीच में महादेव हों अथवा अपने दूतों के साथ यमराज ही हों। शराब की मस्ती से उनकी आँखें लाल हो रही थीं, सारे शरीर में खून लगा हुआ था। उनको देख कर मैंने सोचा कि ये कैसा बुरा काम करने वाले और पापी हैं, ये हमेशा जंगलों में ही रहते हैं, धनुष ही इनकी सम्पत्ति है, कुत्ते ही इनके दोस्त हैं, शेर आदि जंगली जानवरों के साथ इनका रहना, और जीवों को मारना

ही इनका रोजगार है। इतने में वे सब उसी वृक्ष के नीचे आ बैठे और खा पीकर वहाँ से चले गये।

उस सेना में से एक बूढ़े को कुछ आखेट न मिला था। वह उस वृक्ष पर चढ़ गया, और घोंसले से बच्चों को निकाल निकाल कर नीचे पटकने लगा। फिर मेरे पिता को भी अधमरा करके उसने पृथ्वी पर फेंक दिया। मैं डर के मारे पिता के परों में चिपट गया था, इसलिए उसने मुझे देखा नहीं। मैं नीचे पत्तों के ढेर पर गिरा इसलिए मुझे कुछ चोट भी न आई।

ऊँचे से गिरने और डर के कारण मेरा शरीर थरथर काँपता था, और प्यास से कंठ सूखा जाता था। जब व्याध चला गया तब मैं गिरते पड़ते तालाब की ओर बढ़ने लगा। उधर से ही जाबालि नामक ऋषि के पुत्र हारीत सरोवर पर स्नान को जाते थे। उनके सिर पर जटा, माथे पर तिलक, कान में माला, बायें हाथ में कमण्डलु, दाहिने में डण्डा, कंधे पर काले हरिण की छाल और गले में यज्ञोपवीत शोभा पा रहा था। उनकी शांतमूर्ति को देख कर ऐसा जान पड़ता था कि जैसे शान्ति के समुद्र पार्वती के पति महादेव मेरी रक्षा को चले आ रहे हैं। मुझे देखते ही उन्होंने अपने सेवक से मुझे उठाने को कहा, और तालाब पर ले जा कर उन्होंने अपनी उंगली से मुझे जल पिलाया। जल पीने से मेरी प्यास शांत हुई। वे हाथ धोकर मुझे तपोवन की ओर ले चले। तपोवन को देख कर मैं बड़ा प्रसन्न हुआ। उसके भीतर लाल पत्तों से युक्त लाल अशोक के नीचे महाप्रतापी जाबालि ऋषि बैठे थे। जाबालि ऋषि बहुत बूढ़े थे। उनके माथे पर झुर्रियाँ पड़ गई थीं।

हड्डियों का पंजर और माथे की हड्डी निकल आई थी, कानों के दोनों श्वेत बालों से ढक गये थे। उनकी शकल देखने में जान पड़ता था कि वे करुणा रस के स्रोत हैं, क्षमा और संतोष के आधार हैं शान्ति रूपी बेल की जड़ हैं, क्रोध रूपी साँप को शान्त करने के लिये मंत्र के समान हैं और अच्छा रास्ता दिखाने वाले हैं। उनके प्रभाव से जंगल में हिंसा, द्वेष, दुश्मनी और जलन आदि का नाम भी नहीं था। हारीत मुझे उसी लाल अशोक के नीचे रख पिता के पास बैठ गये, तब ऋषिकुमारों के पूछने पर उन्होंने मेरा हाल बताया। हारीत की बात सुन कर जाबालि ऋषि ने मेरी ओर देखा और कहा कि यह अपने किये का फल भोग रहा है। महर्षि तीनों कालों (भूत, वर्तमान और भविष्यत्) की बात जानने वाले थे इसलिये किसी को उन की बात पर अविश्वास न हुआ। आखिर वे ऋषि से मेरी कहानी पूछने लगे। ऋषि ने कहा कि पूजा आदि नित्य के काम समाप्त कर लो तो मैं इसकी शुरू से अंत तक की कहानी कहूँ।

अब संध्या हो गई, मुनिकुमारों ने पूजा का लाल चंदन जो शरीर पर लगाया था, वह उनके शरीर पर ऐसी शोभा देता था, मानों लाल रंग का सूर्य हो। सूर्य की किरणों ने धीरे-धीरे पृथ्वी से कमलों के झुंड और कमलों के झुंड से वृक्षों पर और वहाँ से पहाड़ों की चोटी पर जा कर सब को सुनहरा कर दिया था। वायु में हिलते हुए पत्तों रूपी हाथों से सब वृक्ष पक्षियों को अपने अपने घोंसलों में बुलाने लगे। ने भी चहचहाहट से उसका उत्तर दिया। अँधेरे

करने वाले सूर्य के भय से छिपा हुआ अँधेरा बाहर निकला। सन्ध्या के नष्ट हो जाने के कारण दुखिया रात अन्धकार रूपी मैला कपड़ा धारण कर दिखाई देने लगा। तारे (नक्षत्र) रूपी चोर जो सूर्य के कारण छिपे हुए थे, अब बाहर निकले। पूर्व दिशा में चन्द्रमा का थोड़ा थोड़ा प्रकाश होने लगा। इस से पूर्व दिशा की सुन्दरता ऐसी मालूम पड़ती थी, मानों वह मुसकरा रही हो। चन्द्रमा का पहले एक टुकड़ा सा निकला, फिर आधा और फिर पूरा गोला निकल आया। कुमुदिनी खिल उठी, धीमी धीमी हवा के बहने से कुमुदिनी में से गन्ध आने लगी, और तपोवन प्रकाशयुक्त हो गया।

भोजन आदि समाप्त कर ऋषिकुमार फिर महर्षि जाबालि के पास पहुँचे। महर्षि ने उन्हें मेरी सारी कहानी सुनाई, जिससे ऋषिकुमारों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

१७

हिन्दी नाटक और रंगशाला

(लेखक—बाबू श्यामसुन्दर दास)

पृष्ठ १११ से ११७

रंगशाला-नाटक खेलने की जगह, रंगभूमि
नाट्यकला-नाटक खेलने की रीति
आधुनिक-आजकल की, वर्तमान काल की
अभिनय-नाटक खेल
अनूदित-अनुवाद किए हुए
पुरस्कार-इनाम
अन्यान्य-दूसरे
कुरुचिपूर्ण-बुरी रुचि से युक्त
निकृष्ट-खराब
व्यवसायी-व्यापारी
समकक्ष-बराबर की
आशाजनक-आशा दिलाने वाली
उत्साहवर्द्धक-उत्साह को बढ़ाने वाली

(संक्षेप)

हिन्दी में नाटक लिखने की प्रणाली के जन्मदाता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हैं। उनसे पहले कुछ नाटक—नेवाजकृत शकुन्तला, हृदयरामकृत हनुमान नाटक, महाराजा लक्ष्मणसिंह कृत शकुन्तला (कालिदास की शकुन्तला का अनुवाद) अवश्य मौजूद थे। पर या तो वे नाट्यकला की दृष्टि से नाटक नहीं कहे जा सकते थे, या अनुवाद मात्र थे। भारतेन्दु ने लगभग २० नाटक लिखे हैं। जिनमें से कई प्राचीन नाटकों के छायानुवाद अवश्य थे। तो भी उनके कई नाटक बहुत अच्छे हैं और अब भी अनेक स्थानों पर खेले जाते हैं। उस समय और भी कई नाटक लिखे गये पर उनको कोई विशेष आदर नहीं मिला। उनमें से विशेष उल्लेखनीय बाबू राधाकृष्णदास का प्रताप नाटक है। भारतेन्दु के बाद हिन्दी में अनुवाद की धूम मच गयी, और कई संस्कृत तथा बँगला के (विशेषतः द्विजेन्द्रलाल राय के) नाटकों का हिन्दी में अनुवाद हुआ। मौलिक नाटक-लेखकों में जयशंकर प्रसाद का नाम विशेष प्रसिद्ध है। उनके अजातशत्रु आदि नाटक बहुत अच्छे हैं।

नाटकों के अभाव के कारण हिन्दी में नाटक मंडलियों और रंगशालाओं का भी अभाव रहा। यद्यपि एक दो जगह भारतेन्दु के 'सत्य हरिश्चन्द्र' आदि नाटकों का अभिनय हुआ, पर व्यापारी कम्पनियाँ—विशेषतः पारसी कम्पनियाँ—कुरुचिपूर्ण, निकृष्ट उर्दू नाटकों के ही अभिनय करती रहीं। ...दिनों से कुछ ऐसी व्यवसायी कम्पनियाँ

जिन्होंने नाटकों में हिन्दी का प्रयोग किया है, अतः भविष्य आशाजनक है।

१८

सभ्यता का विकास

पृष्ठ ११८, ११९
अन्वेषण–खोज
शृंखलाएँ–सिलसिला
विशाल–बड़ा
बिन्दुमात्र–बूँद जितना
घनिष्ठ–गाढ़ा पास का
नवजात–नये पैदा हुए
भावनाएँ–विचार, इच्छाएँ
क्रूरातिक्रूर–ज़ालिम से भी ज़ालिम, बड़ा निर्दय
माया–मोह
लिप्त–फँसा हुआ
रत–लगा हुआ
कौतूहलवर्द्धक–आश्चर्य को बढ़ाने वाली
निर्धारित–निश्चित की गई
बद्ध–बँधी
कार्य साधन–कार्य करने
सृष्टिनिर्माण–सृष्टि के बनाने में

पृष्ठ १२०, १२१, १२२
विकासवाद–इस सिद्धान्त के मानने वालों का कहना है कि आजकल की सारी सृष्टि और जीव-जंतु तथा पेड़ आदि एक ही मूल तत्व से धीरे धीरे बने हैं।
सूक्ष्मातिसूक्ष्म–बारीक से भी बारीक
अभिव्यक्ति–प्रकाशन, छुपा और न दिखाई देने वाले कारण का दिखाई देने वाले कार्य में बदल जाना, जैसे बीज से अंकुर निकलना
संकुलता–घनापन, भीड़
[illegible]–जीवों की, प्राणियों की
जीवात्मक–जीवों की, प्राणियों की
विदित होता है–पता लगता है
उदर–पेट
पूर्ति–भरना

पशुपालन विधान–पशुओं के पालने का इंतजाम	लालसा–इच्छा
	विधान–नियम
श्रीगणेश–आरम्भ	मस्तिष्क-शक्ति–बुद्धि, दिमाग
आयोजन–इंतजाम	स्वत्व–हक अधिकार
वृत्ति–रोजी। वह कार्य जिसमे खाने पीने का प्रबन्ध होता हो	अंकुश–दबाव
कृषिकर्म–खेती	अन्योन्याश्रय–परस्पर एक दूसरे पर आश्रित होना
भू भाग–पृथ्वी के हिस्से	

(संक्षेप)

ईश्वर की सृष्टि विचित्रताओं से भरी हुई है। हम देखते हैं कि छोटे से बीज से पेड़ बन जाता है, एक छोटी सी बीय की बूँद से मनुष्य पैदा हो जाता है। यह परिवर्तन, यह विकास किस तरह होता है, विकासवाद इन सब बातों की जाँच करता है। विकासवाद बताता है कि आधुनिक सारी सृष्टि और उसमें पाये जाने वाले जीव जन्तु तथा वृक्ष आदि किस तरह एक ही मूलतत्व से उत्तरोत्तर निकलते गए हैं।

हम देखते हैं कि जैसे जीवों की सृष्टि में विकासवाद के नियम काम करते हैं वैसे ही हमारे सामाजिक जीवन की उन्नति भी उन्हीं नियमों के अनुसार हुई है। पहले पहल मनुष्य जंगली अवस्था में थे, और जंगलों में शिकार कर अपना पेट पालते थे। परन्तु कई बार समय पर शिकार नहीं मिलता था, अतः उन्होंने पशु पालन प्रारम्भ किया। फिर पशुओं के चारे की व्यवस्था करनी पड़ी। उससे खेती होने लगी। गाँव बसे। धीरे ... की जरूरत हुई। लोहार और बढ़ई आ धमके।

आपस में लेन देन प्रारम्भ होने लगा, इसी से व्यापार की नींव पड़ी। क्रमशः नई चीजों को बनाने के लिए मस्तिष्क-शक्ति का विकास होने लगा। इस सामाजिक जीवन के परिवर्तन का दूसरा नाम असभ्यावस्था से सभ्यावस्था को प्राप्त होना है। सभ्यता वह है जिसमें मनुष्य का यह सिद्धान्त स्थिर हो जाय कि जितना किसी काम के करने का अधिकार मुझे है उतना ही दूसरे को भी है और उसे इस सिद्धान्त पर दृढ़ रखने के लिए किसी अङ्कुश की आवश्यकता न हो। यह भाव मस्तिष्क के विकास के बिना नहीं हो सकता। ये दोनों बातें एक दूसरे पर आश्रित है। मस्तिष्क के विकास में साहित्य का स्थान बड़े महत्व का है।

१६

महापुरुषो के जीवन का रहस्य

(लेखक — श्रीयुत रामनारायण मिश्र)

पृष्ठ १२३ १२४,१२५ १२६

उदय होना–निकलना

रसातल–पृथ्वी के नीचे का लोक

रसातल चले जाना–डूब जाना

चिरस्मरणीय–बहुत दिनों तक याद रखने योग्य

पाश्चात्य–पश्चिम दिशा का यूरोप और अमेरिका

प्रादुर्भाव–उत्पत्ति

(सक्षेप)

महापुरुषों की जीवनी उनके देश के गुणों का दर्पण है। बड़े आदमियों के जीवन के वे कार्य जो वे प्रकट रूप से सब के सामने करते हैं, उतने शिक्षाप्रद नहीं होते जितने महत्व की

उनके जीवन की छोटी छोटी कहानियाँ। इनके द्वारा मनुष्य सन्मार्ग पर चल सकते हैं, धर्म का अवलम्बन कर सकते हैं और जीवन का आदर्श जान सकते हैं।

२०

नेता के कुछ गुण

(ले०—श्रीयुत माधवराव सप्रे, बी० ए०)

पृ० १२६,
आत्मोद्धार–अपना उद्धार
निर्णय–फैसला
भारत शिरोमणि–भारत के सिर का रत्न, भारत का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति
मोहिनी–मोहने वाली
सर्वस्व–सारी सम्पत्ति, सब कुछ
अर्पण–भेंट
योगैश्वर्य सम्पन्न–योग ऐश्वर्य वाली
लार्डशिप–लार्ड पदवी प्राप्त करने
पृष्ठ १३० १३१
परात्पर–सर्वश्रेष्ठ, सब से बड़ा
न मे पार्थास्ति–हे अर्जुन यद्यपि मुझे तीनों लोकों में कुछ भी कर्तव्य नहीं है तथा कुछ भी प्राप्त होने योग्य वस्तु अप्राप्त नहीं है तो भी मैं करता ही रहता हूँ।
यदि ह्यहं क्योंकि जो मैं कदाचित आलस्य छोड़कर कर्मों में न बर्तूंगा तो हे पार्थ ? मनुष्य सब प्रकार से मेरे ही पथ का अनुकरण करेंगे
निस्पृह–लालच या इच्छा से रहित
लोकसंग्रह–सब की भलाई, संसार के लोगों को प्रसन्न करना।
प्रबोध शक्ति–ज्ञान देने की शक्ति
अपेक्षित–आवश्यक
सहिष्णुता–सहनशीलता
उत्कटता–प्रवीणता, कुशलता
वाचाल–बातूनी
दांभिक–दंभ करने वाला, घमंडी
पृष्ठ १३२, १३३
घात–बुराई
सूत्रधार–सारा कार्य भार अपने ऊपर लेने वाला

अपार-बहुत अधिक
रंक-कंगाल
प्रारब्ध-भाग्य किस्मत
विपद्दावस्था-विपत्ति के दिनों
स्वहित-अपना हित, अपना भला
अपकीर्ति-निन्दा
पृष्ठ १३४ १३५
आत्मवत्-अपने समान
आपत्तिग्रस्त-आपत्ति में फँसे हुए
कृत्य-काम

प्रसार-फैलाव
सिद्धहस्त-निपुण
स्फूर्ति-कोई काम करने के लिए मन में उत्पन्न होने वाली हलकी उत्तेजना
लोकहित-जगत का कल्याण
पृष्ठ १३६
आध्यात्मिकता-आत्मा सम्बन्धी विचार
पारमार्थिक-दूसरों के भलाई के
अधिष्ठान-अधिकार शासन

संक्षेप

नेता की आवश्यकता सभी कामों में, सभी समाजों में और सभी अवस्थाओं में होती है। परन्तु नेता में कौन कौन से गुण होने चाहिये यह विवाद की बात है। समर्थ गुरु रामदास (जो शिवाजी के गुरु थे) ने नेता में निम्नलिखित ११ गुण आवश्यक समझे हैं—

(१) यात्रा—जिसे लोक सेवा करनी है उसे एक जगह ठहरना नहीं चाहिए। उसे तो समस्त देश में भ्रमण करना चाहिये। यात्रा द्वारा ज्ञान प्राप्त करना नेता के लिए आवश्यक है। कौन आदमी वास्तव में कैसा है, भले बुरे के इस ज्ञान के बिना नेता सफल नहीं हो सकता।

(२) विवेक—विवेक के बिना नेता कभी नेतृत्व नहीं कर सकता। अतः नेता में विवेक होना आवश्यक गुण है।

(३) परिश्रम—परिश्रम के बिना कोई किसी काम में सफल

नहीं हो सकता, अत नेता को भाग्य के भरोसे न रहना चाहिये, अपितु नेता में परिश्रमशीलता परमावश्यक गुण है। जिस आदमी के ऊपर इतनी जिम्मेवारी है, उसके थोड़े से आलस्य से बहुत से काम बिगड़ सकते हैं।

(४) मृत्यु के सबन्ध में निर्भयता तथा (५) कीर्ति की चाह, ये दो गुण भी नेता के लिए आवश्यक हैं। यदि नेता निर्भय न हो अथवा उसे कीर्ति स अधिक धन आदि की चाह बनी हो तो वह कभी सफल नहीं हो सकता।

(६) वैराग्य का होना भी नेता मे आवश्यक है। यदि नेता में वैराग्य न हो, वह अपने ही मायाबधनों में फँसा रहे, तो वह कभी लोकोपकार नहीं कर सकता। नेता के कामों से यह मालूम होजाना चाहिये कि यद्यपि उसके सभी कार्य सासारिक हैं, पर वह किसी भी दशा में उनमे फँसा नहीं है।

(७) निस्पृहता—नि स्वार्थता—भी नेता का एक आवश्यक गुण है। जब तक स्वय नेता निस्पृह नहीं, तब तक वह कभी भी देश के भले को अपना भला नहीं समझता, और जब तक वह अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के खयाल को नहीं छोड़ता तब तक वह जनता पर दिव्य प्रभाव नहीं डाल सकता।

(८) मृदुवचन तथा (९) क्षमा, शान्ति और सहनशीलता नेता के भूषण हैं। यदि स्वार्थ-त्यागी होने पर भी नेता कठोर वचन बोलता है, अथवा क्षमा नहीं कर सकता, अथवा उसमे सहनशीलता नहीं तो वह सफल नेता नहीं हो सकता।

(१०) परोपकार और (११) कृतज्ञता ये दो और गुण

स्वामी रामदास ने नेताओं में आवश्यक माने हैं। परोपकार के लिए सदैव तत्पर रहना नेता के सतोगुण का सूचक है। यही नेता का सर्वप्रधान गुण है। दक्षता किसी कार्य में कुशलता, अथवा प्रवीणता को कहते हैं। जब तक नेता किसी कार्य का पूरा ज्ञाता न होगा किसी कार्य में सिद्धहस्त न होगा तब तक वह लोगों को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकता और नेता के किसी विषय में चतुर हुए बिना यश और इष्टसिद्धि नहीं होती।

ऊपर लिखे सब गुणों के साथ नेता में आध्यात्मिकता—परमात्मा सम्बन्धी विचार—आवश्यक है। यदि नेता ईश्वर के अधिष्ठान को—शासन को—अधिकार को—नहीं मानेगा तो उसका आंदोलन सफल न होगा। तात्पर्य यह है कि नेता को अपने प्रत्येक कार्य और आन्दोलन में ईश्वर के प्रभुत्व का अनुभव करना चाहिये।

२१
समर्थ और शिवाजी

पृ० १३७
मंत्रोपदेश–मंत्र का उपदेश
राजसत्ता–राज्य
भवानी–दुर्गा
पृ० १३८, १३९
सन्तसमागम–सन्तों से भेंट, सन्तों की सेवा
अन्तःकरण–हृदय
चिन्तन करते–सोचते
मुमुक्षु–जो मुक्ति पाने की कामना करता हो
अभिलाषा–इच्छा
साधु कीर्ति–प्रशंसा
संहार–नाश

चित्त-वृत्ति—मन की दशा

पृष्ठ १४०, १४१

निष्ठायुक्त—श्रद्धा और भक्ति से युक्त

दरी—पहाड़ की गुफा, खोह

घाटियों—तंग रास्तों

विह्वल—व्याकुल

आर्त्त—दुखी

शकाब्द—राजा शालिवाहन का चलाया हुआ संवत्। ईसवी संवत में से ७८,७९ घटाने से शकाब्द निकल आता है

अद्वैत—अकेला ब्रह्म। वेदान्ती लोग यह कहते हैं कि एक 'ब्रह्म' ही है, दूसरा कुछ नहीं जैसे अँधेरे में रस्सी को साँप समझ लिया जाता है वैसे ही ब्रह्म के रूप को न जानने से ही संसार दिखाई देता है। अन्त में अज्ञान दूर हो जाने पर सब यथार्थ ब्रह्ममय दिखाई देता है।

पृष्ठ १४२, १४३

विपुल—बहुत अधिक

द्रव्य प्राप्ति—धन का मिलना

धर्मकृत्य—धर्म के काम

साङ्गोपाङ्ग सब तरह से पूरे

सत्पात्र—दान आदि देने के योग्य उत्तम व्यक्ति

ज्ञान सम्पादन—ज्ञान प्राप्त करना

पृ० १४४, १४५

योगवासिष्ठ—वेदान्त शास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ जो वसिष्ठ जी का बनाया कहा जाता है इसमें वसिष्ठ जी ने रामचन्द्र जी को वेदान्त का उपदेश किया है।

पादुकाएँ—खड़ाऊँ

स्थापन करके—रख कर

बेलदार—वह मजदूर जो फावड़ा चलाने का काम करता है।

पृ० १४६, १४७

अगाध—अपार

पामर—नीच, तुच्छ

स्वर्णपुष्प—सोने का फूल

वैभव—धन सम्पत्ति, बड़ा धन

शिखर—चोटी

प्रतीति—विश्वास

सिंहावलोकन—आगे बढ़ने के लिए पिछली बातों का संक्षेप में कथन

(संक्षेप)

राज के कामकाज के साथ-साथ शिवाजी सन्त समागम का बड़ा ध्यान रखते थे। उन्होंने एक बार साधु तुकाराम से मंत्रोपदेश लेना चाहा, पर उन्होंने शिवाजी को समर्थ गुरु रामदास से शिष्य होने को कहा। तदनुसार शिवाजी ने समर्थ गुरु के पास पत्र भेज उन्हें बुलाया। समर्थ स्वयं न आये, पर उन्होंने पत्र का उत्तर भेज दिया। पत्र का उत्तर पढ़कर शिवाजी की समर्थ के दर्शन की अभिलाषा और भी बढ़ गई। वे समर्थ के दर्शन को चाफल गये पर कई बार उन्हें निराश होकर लौटना पड़ा, क्योंकि समर्थ प्रायः चाफल के आसपास कृष्णा नदी के किनारे पर्वत की गुफाओं में रहा करते थे। अन्त में उन्होंने यही निश्चय किया कि जब तक समर्थ गुरु के दर्शन न करूँगा तब तक भोजन न करूँगा, तब बहुत खोजने के बाद शिवाजी समर्थ का दर्शन पा सके। शकाब्द १५७१ में समर्थ ने शिवाजी को मंत्रोपदेश दिया। शिवाजी ने समर्थ गुरु से बहुत विनती की कि वे किसी एक स्थान में रहें जिससे उनके दर्शन की सुविधा प्राप्त हो, पर समर्थ न माने। तब शिवाजी ने उन्हें सम्प्रदाय की वृद्धि के लिए मठ स्थापन को कहा। समर्थ ने श्रीराम की मूर्तिस्थापना कर मठ तो बना दिया पर वे स्वयं वहाँ न रहे। शिवाजी ने बहुत अनुरोध कर समर्थ सम्प्रदाय की सेवा के लिए गाँव और भूमिदान की सनद लिख कर गुरुजी को भेज दी। अन्त में शिवाजी का बहुत आग्रह देखकर समर्थ सतारा के पास सज्जन गढ़ किले में रहने लगे। शिवाजी ने वहाँ एक मठ बनवा दिया।

एक दिन समर्थ भिक्षा माँगते हुए शिवाजी के महल में पहुँचे शिवाजी ने एक कागज पर सारा राज्य उन के नाम लिखकर उनकी झोली में डाल दिया, पर समर्थ ने कहा कि राज्य का प्रबंध करना ब्राह्मण का काम नहीं, अतएव राज्य हमारा समझ प्रधान तुम ही बनो और राज्य का प्रबंध करो। तब शिवाजी ने समर्थ से उनकी पादुकाएँ माँगीं और स्वयं मंत्री की तरह राज काज करने का प्रस्ताव किया। समर्थ ने यह स्वीकार कर लिया। उसी समय से शिवाजी ने मराठा राज्य का झंडा भगवे रंग का कर दिया।

एक बार शिवाजी के मन में एक किला बनवाते समय अभिमान पैदा हुआ। तब समर्थ ने उनको उपदेश दे उनका अभिमान दूर किया। जिस तरह शिवाजी समर्थ गुरु के प्रति श्रद्धा रखते थे, वैसे ही समर्थ भी देवी की स्तुति करते हुए भी शिवाजी के लिए वरदान माँगते थे। उनके पुण्य प्रताप से ही शिवाजी इतने सफल हो सके।

२२

विलायती समाचार पत्रों का इतिहास

(लेखक श्रीयुत प्यारेलाल मिश्र बी० ए०)

पृष्ठ १४८, १४९	पृ० १५०, १५१
दैनिक-रोज़ाना अखबार	विशेषांश-अधिक भाग
डीलडौल-आकार	विज्ञापन-इश्तहार
जब नहीं पाया-बढ़ न सका	प्रख्याति-प्रसिद्धि
असीम-बेहद, बहुत अधिक	टोरी-कन्ज़र्वेटिव, अनुदार,
	संकुचित विचारों का

(संक्षेप)

टाइम्स के बाद दूसरा मुख्य पत्र डेली टेलीग्राफ समझा जाता है। इसका आकार टाइम्स से बड़ा होता है, पृष्ठ २० के लगभग। इसकी दैनिक बिक्री अनुमान से तीन लाख है। इसके लेख टाइम्स से भी अधिक जोरदार समझे जाते हैं। इसका मूल्य एक प्रति का पहले दो आना होता था, पर अब एक आना है। पहले यह पत्र उदार दल का था पर आजकल यह अनुदार दल का है। (इंगलैंड में तीन मुख्य राजनीतिक दल हैं १ अनुदार दल, जिसे टोरी या कन्सर्वेटिव कहते हैं। २ मजदूर दल, लेबर पार्टी, ३ उदार दल लिबरल) आजकल इसके स्वामी लार्डबर्नहम हैं। इसके सम्पादक तथा लेखक बड़े विद्वान और विख्यात पुरुषों में से हैं। पार्लियामेंट की विस्तारपूर्वक रिपोर्ट टाइम्स के बाद टेलीग्राफ ही में प्रकाशित होती है। इसके मुख्य प्रबन्धकर्ता मिस्टर रोज हैं। ये टेलीग्राफ के मुख्यतम माने जाते हैं। मैनेजर होते हुए भी युद्धों में सैनिक संवाददाता का कार्य भार इन पर ही रहता है। विज्ञापन द्वारा सबसे अधिक आमदनी इसी पत्र की कही जाती है। इसमें अधिकतर किराए के मकानों के इश्तहार निकलते हैं, अतः लोग इसे लैंड-लेडीज पेपर कहते हैं। आजकल इस पत्र की देखरेख का कुल भार लार्ड बर्नहम के निकट रिश्तेदार मिस्टर हैरी लासन पर है। सर्वसाधारण में इसकी बड़ी इज्जत है।



के लिए झूला आदि लगे होते हैं। हर तरह के खेल के लिए मैदान बने होते हैं। इसके अतिरिक्त पार्कों में नहर या छोटी सी झील भी होती है, जिन में चलाने के लिए किश्तियाँ भी किराए पर मिलती हैं। इतवार के दिन तो पार्कों में खूब रौनक होती है। उस दिन पार्कों में खूब जलसे और लेक्चर होते हैं। लेक्चर प्रायः भिन्न भिन्न राजनीतिक दल भिन्न भिन्न धर्म सभाओं और भिन्न भिन्न संस्थाओं की ओर से होते हैं।

भगवान बुद्ध का उपदेश और उनकी शिष्य-मंडली

(ले०—श्रीयुत लक्ष्मीधर वाजपेयी)

पृष्ठ १६३,
ह्रास—अवनति, घटती।
ग्लानि—अरुचि।
पापाचार—पाप, बुरा आचरण
पृ० १६४ १६५
कलह—झगड़ा, झगड़ा
निर्वाणपद—मुक्ति
जरा—बुढ़ापा
व्याधि—बीमारी
पराकाष्ठा—हद, चरमसीमा
पूर्वाश्रम—पहले के आश्रम के
वर्ण—चार वर्ण, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र
तपोभ्रष्ट—भ्रष्ट होगया है तप जिसका
प्रवृत्ति—सांसारिक विषयों में फँसना
निवृत्ति—छुटकारा संसार के विषयों को छोड़ देना
निमग्न—डूबा हुआ तन्मय
पृ० १६६ १६७
अप्रियसयोग—वैरी का मिलाप
प्रियवियोग—प्यारे की जुदाई
पुनर्जन्म—दुबारा जन्म
तृष्णा—लालच, किसी चीज को लेने के लिए बड़ी तेज इच्छा
जननी—माता, पैदा करने वाली
प्रमेय—वह बात जिसका यथार्थ ज्ञान हो सके

हेय–छोड़ने योग्य, बुरी
हान–हानि, नाश
संज्ञा–नाम
अनुष्ठान–नियमपूर्वक कोई काम करना
राजगृह–एक प्राचीन स्थान जो विहार में पटने के पास था, यह मगध की राजधानी थी।
पृ० १६८
परिव्राजक–सन्यासी
भिक्षाटन–भीख माँगना
पृ० १६६
तथागत–गौतमबुद्ध
महाश्रमण–श्रमण, बौद्ध सन्यासियों को और महाश्रमण बुद्धदेव को कहते हैं
सहपाठी–साथ पढ़ने वाले
मनुष्य–मुद्य, बड़े
आख्यायिका–कहानी
गुरुद्रोही–गुरु से द्रोह (द्वेष) करने वाला
वधिक–जल्लाद, मारने वाला
पृ० १७०, १७१
अर्हन्त–पूज्य, बुद्ध संन्यासी
देह–शरीर
निर्वाणयात्रा–मुक्ति
अग्रश्रावक–मुख्य श्रावक (बौद्ध संन्यासी)
करुणोत्पादक–करुणा पैदा करने वाली
भिक्षापात्र–भिक्षा का बरतन
अवतीर्ण–जन्म ग्रहण कर चुके
परिपाटी–रीति, सिलसिला
इहलोक–इस लोक
पृ० १७२, १७३
समाधान किया–मन या सदेह दूर कर दिया
पूर्वजोपार्जित–पुरखों की कमाई हुई
पैतृक–पुरखों की, पुश्तैनी
प्रव्रज्या–संन्यासव्रत
भावुक–जिस पर कोमल भावों का जल्दी प्रभाव पड़ता हो, अच्छी बातें सोचने वाला
पृ० १७४, १७५
उत्कृष्ट–अच्छा
वनस्पति–पेड़, पौधे
असाध्य–न आरोग्य होने वाले रोग
आम्रवन–आमों का बाग
पुष्करिणी–तालाब
परिमल–सुगंध
उपवन–बाग

पृ १७६, १७७
खिन्न-दुखी
अपस्मार-मृगी
यक्ष्मा-तपेदिक
कुष्ठ-कोढ़
संसर्ग ज-साथ रहने से होने वाले
विहार-बौद्ध संन्यासियों के
रहने की जगह

पृ १७८, १७६
अपशब्द-बुरे शब्द गाली
त्रिविध ताप-तीन तरह के दुख
आध्यात्मिक (आत्मा संबंधी, आधिदैविक (देवता भूत आदि द्वारा होने वाला) आधिभौतिक जीवों या शरीर धारियों द्वारा प्राप्त दुख)
पट्टशिष्य-मुख्य शिष्य
रहस्य-गुप्त भेद, छिपी हुई बात
हृद्गत-हृदय के

पृ १८०
श्रेष्ठी-सेठ
निम्न-नीची

(संक्षेप)

भगवान बुद्ध का धर्म कोई नवीन धर्म न था। प्राचीन वैदिकधर्म ईश्वर और वेद पर अधिक जोर देता था। परन्तु भगवान बुद्ध ने वेद और ईश्वर की इतनी आवश्यकता नहीं समझी, उन्होंने सदाचार को ही अधिकता से अपनाया। सदा चार से रहने वाला पुरुष चाहे ईश्वर और वेद को भी न मानता हो तो भी वह धार्मिक है। और सदाचार से वह जन्म जरा मरण व्याधि इत्यादि कष्टों से मुक्त होकर निर्वाणपद पा सकता है। मनुष्यमात्र में जाति वर्ण आदि कोई भेद नहीं।

इस निश्चय का बुद्ध ने सब से पहले अपने पुराने साथी पाचों संन्यासियों को पता दिया। पहले तो संन्यासी उन्हें तपोभ्रष्ट समझते थे पर भगवान बुद्ध की तेजस्विता ने उनके इस संशय को दूर कर दिया। भगवान बुद्ध ने उन्हें अत्यधिक भोग विलास (प्रवृत्ति) तथा कठिन तपश्चर्या (निवृत्ति) दोनों

को छोड़ कर बीच का साधन मार्ग अपनाने के लिए कहा। उनका कहना था कि जो लकड़ी जलकर राख हो गई है उसके द्वारा आग जलाने की चेष्टा जरूर व्यर्थ होगी इसीलिए कठिन तपस्या (निवृत्ति) क्लेशदायक, अनावश्यक और व्यर्थ है। साथ ही इन्द्रियों के सुख-भोग की लालसा (प्रवृत्ति) मनुष्य को मनुष्यत्वहीन और नीच बना देती है। इस मार्ग में जाने के लिए सम्यक दृष्टि (अपनी दृष्टि को निर्मल करना), सम्यक् सकल्प (अपने मन के निश्चय को ठीक करना), सम्यक् वाक् (सदा सच बोलना), सम्यक् कर्मान्त (अपना व्यवहार साफ रखना), सम्यक् आजीव (अर्थात् अच्छे कामों से अपनी जीविका पैदा करना) सम्यक् व्यायाम (सभी चेष्टाएँ अच्छी करना), सम्यक् स्मृति (अच्छी बातों का चिन्तन करना) और सम्यक् समाधि (पवित्र ध्यान के द्वारा मनको समाधिस्थ करना) इस अष्टाङ्गिक मार्ग (आठ साधनों) का पालन आवश्यक है।

भगवान बुद्ध ने दुःख की उत्पत्ति के जन्म, जरा (बुढ़ापा) व्याधि (बीमारी), मरण (मौत), अप्रिय सयोग (अप्रिय आदमी का मिलना) तथा प्रिय वियोग (प्यारे की जुदाई) ये छ कारण बताए हैं। पुनर्जन्म का कारण तृष्णा है, अतः तृष्णा से ही दुःख पैदा होता है। इस तृष्णा से बचने के लिए ऊपर कहे गये अष्टाग साधना के मार्ग का आश्रय लेना पड़ेगा। इसके सिवाय भगवान बुद्ध ने चार 'आर्य प्रमेय' बताए— दुःख (अर्थात् यह सब कुछ जो छोड़ने योग्य है), अज्ञान जिसके कारण छोड़ने योग्य पदार्थ की उत्पत्ति होती

है) दुःख निरोध (दुःख से दूर होने की इच्छा) दुःख निरो कारिणी वृत्ति (ज्ञान जिसके द्वारा दुःख नाश का उपाय । सकता है) ।

अपने इन पाँचों साथियों को अपने धर्म में दीक्षित क गया जी में कई ब्राह्मणों को, और राजगृह के राजा बिम्बिस को भी बुद्ध ने अपना शिष्य बनाया, भगवान बुद्ध के शि अश्वजित् की भव्य और सौम्यमूर्ति से प्रभावित हो सारिपु और मौद्गलायन ने बुद्धधर्म म प्रवेश किया । ये दोनों भी बुद्ध के प्रमुख शिष्यों में से हुए । बुद्ध इन्हें अग्रश्राव कहते थे ।

एक बार धर्म का प्रचार करते हुए बुद्ध कपिलवस्तु पहुँचे। वहाँ भी इन्होंने भिक्षाटन जारी रखा। यह देख इनके पिता को बहुत दुःख हुआ। पर बुद्ध ने उन्हें उपदेश देकर शान्त किया। फिर महल में जाकर उन्होंने अपनी विरह से दुखी पत्नी यशोधरा को उपदेश दिया। उनके चले आने के बाद यशोधरा ने पुत्र राहुल को पिता से जाकर पैतृक सपत्ति माँगने को कहा। यह सुन बुद्ध ने उस बच्चे को सन्यास दे दिया। पीछे राहुल बुद्ध के मुख्य शिष्यों म हुआ। बुद्ध के अन्य शिष्यों में से राजा बिम्बिसार का साला कौशलराज प्रसेनजित्, राजा बिम्बिसार का नाती तथा प्रसिद्ध राजवैद्य जीवक, बिम्बिसार का पुत्र राजा अजात शत्रु, श्रावस्ती नगरी का बड़ा भारी सेठ अनाथ पिंडक, प्रसिद्ध व्यापारी पूर्ण तथा पट्टशिष्य आनन्द उल्लेखनीय हैं। राजवैद्य जीवक अपनी वैद्य विद्या में बड़ा सिद्धहस्त था, वह का मुफ्त इलाज करता था । उससे इलाज कराने

के लिये अनेक आदमी बुद्ध धर्म में दीक्षित हुए । आनन्द शाक्यवंशी क्षत्रिय था । भगवान बुद्ध के बाद वही सब विषयों में प्रामाणिक माना जाता था । इसके सिवाय सुनीत नाम का भंगी, अङ्गुमाली नामक एक औधिया, स्वाति नामक मछुआ आदि शिष्य नीच जातियों में से थे । भगवान बुद्ध के शिष्य दो श्रेणियों में विभक्त थे, एक सन्यासी जो भिक्षु कहलाते थे दूसरे गृहस्थी जो उपासक कहाते थे । ऐसे ही स्त्रियां भी बौद्धधर्म में प्रविष्ट हुईं ।

शिकागो का रविवार

२५

(लेखक—स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक)

पृ १८२, १८३

ईश्वराराधना–ईश्वर की उपासना

अनुमति–आज्ञा

भूगर्भविद्या–वह विद्या जिसके द्वारा इस बात का ज्ञान होता है कि पृथ्वी का ऊपरी और भीतरी भाग किन किन चीज़ों का बना है, और उसका वर्तमान रूप किन कारणों से हुआ है ।

विकास क्रम–उत्पत्ति के बाद बढ़ने का सिलसिला

पृ १८४, १८५

सक्षम–समर्थ

दीर्घकाय–बड़े डीलडौल की

वनस्पति विद्या–वह विद्या जिसमें पौधों और वृक्षों आदि के रूपों जातियों और भिन्न भिन्न अंगों की छानबीन की जाय ।

रसायन विद्या–वह विद्या जिसमें इस बात की छानबीन की जाती है कि पदार्थों में कौन कौन से तत्व होते

उनके परमाणुओं में परिवर्तन होने पर पदार्थों में क्या परिवर्तन होता है।
विहग विद्या–वह विद्या जिसमें पक्षियों का पूरा वर्णन होता है।
नर शरीर विद्या–वह विद्या जिसमें यह जाना जाता है कि मनुष्य के शरीर का कौनसा अंग कैसा है और क्या काम करता है।
पृ १८६, १८७
प्रियतमा–प्यारी
पेशदस्ती–ऐसी बात जो बड़ों के आदर या सम्मान के लायक न हो।

सहाध्यायी–साथ पढ़ने वाले
पतित–गिरा हुआ, नीच
स्केटिंग–डाकों की तरह का खेल जिसमें खेलने वाला के पैर के तले में फिसलने वाले कील सी लगी होती है। यह खेल बर्फ या पक्के फर्श पर खेला जाता है।
पृ १८८, १८९
अश्वारूढ़–घुड़सवार
लोमहर्षण–बहुत भयानक। ऐसा भयानक जिससे रोएँ खड़े हो जाँय
तापमान–गरमी की मात्रा
विहार वाटिका–घूमने के लिए बने बाग

(संक्षेप)

रविवार की छुट्टी मनाने के लिए शिकागो में क्या प्रबन्ध किया गया है, इस लेख में इसी बात का विस्तृत विवरण है। शिकागो का संसार के बड़े शहरों में तीसरा नम्बर है। यहाँ मिशिगन झील के किनारे एक फील्ड-म्यूज़ियम है, जहाँ रविवार को सब मुफ्त सैर कर सकते हैं। इस में बालक बालिकाओं को अच्छी तरह ज्ञान कराने के लिए शिकागो के संसार प्रसिद्ध मेले में इकट्ठे हुए सब पदार्थ, भूगर्भ विद्या सम्बन्धी भिन्न भिन्न पदार्थ, अमेरिका के प्राचीन निवासियों

की चीजें, ऐसे ही अन्य पदार्थ खूब एकत्र किये गए हैं। इस अजायब घर के बीच में अमेरिका को खोजने वाले कोलम्बस की बड़े डीलडौल की एक मूर्ति है। उस को देखकर विचार उठता है कि कुछ ही सालों में अमेरिका का कैसा रंग बदल गया। यहाँ के प्राचीन निवासी कहाँ गए। इसके अतिरिक्त अजायब घर में वनस्पति विद्या, रसायन विद्या, अणुविद्या, पक्षी शास्त्र और नर-शरीर विद्या आदि भिन्न भिन्न विद्याओं के सबंध की सामग्री भी विद्यमान है।

अजायब घर के बाहर झील के किनारे भी आमोद के बहुत से स्थान हैं। शिकागो का हम्बोल्ड पार्क नामक उद्यान भी विशेष उल्लेखनीय है, जिसमें बड़े लम्बे लम्बे कुंड हैं, जिनमें नवयुवक और नवयुवतियाँ नौका खेते तथा जल क्रीड़ा कर आनंद लेते हैं। सर्दियों में जब कुंडों का पानी जम जाता है। बर्फ पर स्केटिंग करते हैं।

लिंकन उद्यान भी कम वर्णनीय नहीं है, जिसमें वीरवर ...ट की घुड़सवार मूर्ति गुलामी प्रथा के विरुद्ध ...ये गए उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका के निवासियों के ...च के भयंकर युद्ध का स्मरण कराती है।

इन प्रमुख स्थानों के सिवा नगर के कोने कोने में बहुत ... विहार वाटिकाएँ हैं जहाँ काम से थके पुरुष अपनी ...कावट दूर करते हैं।

रात के समय लोग प्रायः बिजली की रोशनी में जगमगाते ...नगर ...न में खेल-तमाशे देखकर अपना समय ...ताते ...सरकस, नाच, गान और कई तरह के

तमाशों का प्रबन्ध है। रविवार को यहाँ बड़ा भारी मेला होता है। सर्दियों में यह स्थान बन्द रहता है।

इस तरह शिकागो-निवासी रविवार को कई प्रकार के मनोरंजक और शिक्षाप्रद खेल तमाशे देखकर अपनी सप्ताह भर की थकान को दूर करते हैं जहाँ हमारे भारतवासी भंग पीकर और ताश खेल कर अपनी छुट्टी का दिन बिता देते हैं।

२७

अमावस्या की रात्रि

(लेखक—श्रीयुत प्रेमचन्द जी ए)

पृ० १९४, १९५

घूर—कूड़े करकट का ढेर

मुरझारविन्द—मुख रूपी कमल

हाथ मलती थी—पछताती थी

कटाक्ष करती है—ताना मारती है

मदार—आक

मदान्ध—हाथी के समान मदमस्त

विदीर्ण हो रही थीं—फट रही थीं

चक्लेदार—छोटे छोटे जागीरदार

इस समय आती थी—गदर से पहले रुपयों की रसीद या हुण्डी आदि पर टिकटें न लगानी होती थीं, न ही अदालती कागजकी आवश्यकता थी। सादे कागजों पर सब बातचीत हाजाती थी।

पृ० १९६, १९७

मिट्टी में मिल गया—बरबाद होगया

वचन लेख लगा था—गदर के बाद लोगों पर विश्वास न रहा, जब तक लेख लिखा न हो तब तक कोई उधार लिया मानता न था, साथ ही लिखे हुए में भी पूरी रंगीन टिकटें दरसी जाने लगीं थीं। जब तक टिकट न लगी हो तब तक लिया दिया माना न जाता था।

जिनकी स्याही पड़ गई थीं—जिस तरह तिवारीजी का भाग्य मंद पड़ गया था, किस्मत फूट गयी थी, वैसे ही उन हुंडियों

का स्याही भी बहुत पुरानी हो जाने के कारण मद होगई थी (फीकी पड़ गई थी) लिखावट पढ़ी न जा सकती थी।

स्मारकचिह्न—याद दिलाने वाले चिह्न

दिल्लगी—मजाक

द्वैवादी—दूसरे पक्षवाला

समापिका चुकी थी—दीपों की छोटी सी जीवनी समाप्त हो चुकी थी, अर्थात् दीप बुझ चुके थे।

कौड़ियाँ रही थी—जूआ खेला जा रहा था, कौड़ियों के सीधा उलटा पड़ने से लाखों का दाँव हारा जीता जारहा था।

भट्टी—शराबखाना

भोर—सुबह

विषमज्वर—जाड़ा देकर आने वाला बुखार

होश्य—होश में

पृष्ठ १९८, १९९

मनुष्य की व्यतीत होती है—मरते समय मनुष्य के हृदय में बड़ी इच्छाएँ—लालसाएँ—पैदा होती हैं, वह सोचता है मैं यह कर सकता, मैं यह कर सकता।

दीपावली मुस्करा रहे थे—दीपों पर ताना मार कर हँस रहे थे। दीपों ने जल कर उनकी रोशनी कम करनी चाही थी, पर थोड़ी देर में इनकी समाप्ति हो गई, इस कारण तारे इनका मजाक उड़ा रहे थे

विद्यावारिधि—विद्या का समुद्र

नाजरीन—पाठक

ज़र्द—पीला

तनेलागिर—दुबला बदन

पृ २००, २०१

लज्जात दुनिया—दुनिया के उप भोग, सुख

महरूम—वंचित

ख़ाना तारीकी—घर का अँधेरा

नफी—नकार

शख्स—व्यक्ति, आदमी

इमराज़—बीमारियाँ

इन्सानी—मनुष्य की

गायब कर देना—नष्ट कर देना, उड़ा देना

जौफरोश गन्दुमनुमा—गेहूँ दिखा कर जौ बेचने वाले धोखेबाज, बहुत झूठ बोलने वाले

बेस व पुन से—पक्ष से

पाक—पवित्र

सरम विलजम–दृढ़ निश्चय,
पक्का इरादा
हैरत अंगेज–आश्चर्य जनक
अइतम्नधियान–सीमित शक्ति
वाला
नाशाद–अप्रसन्न, दुखी
दिलशाद–प्रसन्नचित्त
नामुराद–हतारा
ईजाद करदा–आविष्कार की हुई,
बनाई हुई
अन्ना–तुच्छ
करिश्मा–चमत्कार
हकीकत–असलियत
रौशन–प्रकट
आबहयात–अमृत
मर्दानगी–पुरुषत्व
जौहर–सार, निचोड़
फरजानगी–महत्ता, बड़प्पन
अकसीर–वह रस या भस्म जो
धातु को सोना या चाँदी
बनाये, रसायन
मुम्बा–स्रोत
जेहन–बुद्धि, स्मरण शक्ति
सीकल–साफ करने वाला
मुशायराबाजी–सुखबदी

शबारोज–रात दिन
नामवर्दी–नम्बरा उछाला
बावजूद–होते हुए भी
तस्वीर–मादल, लैम्पर
दामफरेब–धोखे के जाल
सावन की पाहुनी–कुछ दिनों
मेहमान अर्थात् थोड़ी दे
में ही इस संसार से
जाने वाली

पृ २०२, २०३
दोमसपशान–अवनति-सूचक
बुरे दिन बताने वाले
शेषांश–बचा हुआ भाग
अर्धचन्द्राकार–आधे चाँद के
आकार का सा
मुनावदार–चूड़ीदार
रकाब–पायदान जिससे घो
या हाथी पर उतरने चढ़
में सहारा लेते हैं।

पृ २०४, २०५
सम्पदा–सम्पत्ति, ऐश्वर्य
स्वजन सम्बन्धी, रिश्तेदार
आकांक्षा–इच्छा
सन्तति–सन्तान

(संक्षेप)

पंडित देवदत्त के पूर्वजों का कारबार बहुत विस्तृत था, वे जागीरदारों और राजाओं को रुपया उधार दिया करते थे। परन्तु गदर के समय कई जागीरदार और राजा नष्ट हो गये। उनके साथ ही पंडित जी के परिवार के दिन भी फिर गये।

जब पंडित देवदत्त ने होश संभाला तो एक पुराने मकान को छोड़ कर उनके पास कुछ न था। वे पढ़े लिखे भी न थे, न उनके पास धन और बुद्धि थी। इसलिए अब वे कोई काम न कर सकते थे और उनका गुज़ारा मुश्किल हो गया। उनके अभिमान करने मात्र के लिए बाप-दादा की पुरानी चिट्ठियाँ और हुंडियाँ रह गई थीं। वे उनकी पूजा करते थे। क्योंकि उन चिट्ठी पत्रियों में ७० लाख की रकम छिपी हुई थी।

इस विपत्ति के साथ साथ पंडित जी की प्यारी पत्नी गिरिजा कई दिन से चारपाई पर पड़ गई थी। वे गरीबी का दुःख सह लेते थे, परन्तु यह नई विपत्ति सहना उनके लिए कठिन था। वे गिरिजा के सिरहाने पर बैठे बैठे उसे आश्वासन देते रहते। दीवाली के दिन सारे ही नगर में दीओं द्वारा प्रकाश किया गया। सब मकानों में दीये जले, पर केवल उनका ही मकान था जहाँ अमावस्या के अंधकार ने आकर डेरा डाल दिया था। ... पीड़ित गिरिजा ने उसी समय होश में आकर ... आज दिवाली के दिन भी हमारे घर





न जलता। और यह अभिलाषा प्रकट की कि वह स्वयं उठकर दीप जलाएगी। ये बातें देवदत्त के हृदय में चुभ जाती थीं।

वे उसी रात के समय वहाँ से उठे और नगर के प्रसिद्ध वैद्य शंकरदास के घर की ओर चले। वैद्य शंकरदास बड़े इश्तिहारबाज वैद्य थे और थे दिल के बड़े निर्दय। जिस समय देवदत्त उनके घर पहुँचे उस समय वे अपने रसायन 'अमृत बिन्दु' का विज्ञापन लिख रहे थे। विज्ञापन इस प्रकार था।

"दर्शक गण! आप जानते हैं मैं कौन हूँ? आपका पीला चेहरा आपकी शरीर की दुर्बलता और थोड़े से परिश्रम में बेदम हो जाना, आपका दुनिया के उपभोगों से वंचित रहना आपके घर का अँधेरा ये सब इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे रहे हैं। सुनिए मैं कौन हूँ। मैं वह व्यक्ति हूँ जिसने मानवी बीमारियों को पृथ्वी पर से नष्ट कर देने का बीड़ा उठाया है जिसने इश्तहारबाज, धोखा देने वाले, झूठे हकीमों की जड़ खोदकर दुनिया को पवित्र करने का पक्का इरादा कर लिया है। मैं वह आश्चर्यजनक सीमित शक्ति वाला मनुष्य हूँ जो अप्रसन्न को प्रसन्न, हताश को आशा वाला, भगोड़े को दिलेर और गीदड़ को शेर बनाता है। और यह किसी जादू से नहीं, किसी मन्त्र से नहीं, यह तो मेरी आविष्कार की हुई अमृतबिन्दु के तुच्छ खेल (चमत्कार) हैं। अमृतबिन्दु क्या है इसे कुछ मैं ही जानता हूँ। महर्षि अगस्त्य ने धन्वन्तरि (कहा जाता है कि ये आयुर्वेद के सब से बड़े

कि ज़ालिम वैद्य को यहाँ कैसे लाऊँ ? अब पण्डित जी को पता लगा कि उनकी बाप-दादा की चिट्ठियाँ किसी काम की नहीं थीं। वे क्रुद्ध हो उन्हें आग में डालने लगे। इतने में राजनगर का जागीरदार पण्डित जी के यहाँ पहुँचा और बोला कि आपके दादा ने मेरे दादा को पच्चीस हज़ार रुपया उधार दिया था जो अब सूद जोड़ने के बाद ७५ हज़ार रुपया हो चुका है। अब मैं अपने पुरखाओं का श्राद्ध करने चला था, इसलिए मेरे लिए यह आवश्यक था कि मैं बाप दादा का सब हिसाब साफ़ कर दूँ आपके पास वे चिट्ठियाँ हों तो दे दें। पण्डित जी का दिल बैठ गया वे घबराए जल्दी से भीतर गये और ढूँढने लगे और उस पत्री को पाकर एकदम उछल पड़े और दौड़कर उन्होंने गिरिजा को गले लगा लिया तथा बोले—प्यारी, यदि ईश्वर ने चाहा तो अब तू भी जायगी। पर उस खुशी में उन्हें यह न पता लगा कि गिरिजा पहले ही इस संसार को छोड़ चुकी है।

देवदत्त ने बाहर आकर पत्री ठाकुर को दी और वह उनको हज़ार हज़ार रुपए के ७५ नोट देकर विदा हुआ। पण्डित जी खुश होते-होते भीतर पहुँचे तो उन्होंने देखा कि रात की समाप्ति के साथ साथ गिरिजा भी समाप्त हो चुकी थी। यह देखते ही उनकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया और वे ७५ हज़ार के नोट लेकर उसी समय वैद्य लकरदास के यहाँ पहुँचे और नोटों का पुलिन्दा उसके सामने फेंककर बोले—वैद्य जी, यह पचहत्तर हज़ार के नोट हैं यह आपकी फ़ीस है, आप चलकर गिरिजा को देख लें और कुछ ऐसा करें कि वह एक बार आँखें खोल

है। आपको रुपये मनुष्य की जान से प्यारे हैं, और मुझे गिरिजा की एक दृष्टि इन रुपयों से कई गुणा ज्यादा प्यारी है। वैद्य जी यह देख बड़े शर्मिन्दा हो और बोले भविष्य में उन से ऐसी भूल न होगी।

२८

रामायण का महत्त्व

पृ० २११
अवनति-गिरावट, पतन
शिक्षाप्रद-शिक्षा देने वाली
अनुवाद-तर्जुमा
अधोगति-गिरावट
पृ० २१२, २१३
शासन प्रणाली-हकूमत का तरीका
अभाव-न होना
विभूषित-युक्त, सहित
महत्तत्व-आत्मज्ञान की परमावस्था
कार्यशील-काम में चतुर, काम करने वाला
अशिक्षित-अनपढ़
पृ० २१४, २१५
यत्न-यत्न
तात्कालिक-पीछे के समय के

पृ० २१६, २१७
संलग्न-लगा हुआ
अलंकृत-विभूषित, सहित, युक्त,
कृति-कृती, कुशल, साधु, पुण्यात्मा
दृढ़व्रत-जो अपने व्रत पर दृढ़ हो
निष्कलंक-बिना कलंक के
त्रैलोक्य-तीनों लोकों
समग्र रूप से-पूरे रूप से
उपेन्द्र-विष्णु
पृ० २१८, २१९
नपुंसक-हीजड़ा, डरपोक
राम:शस्त्रभृतामहम्-शस्त्रधारियों में मैं राम हूँ
परिषद्-सभा
ऐतिहासिक आकाश का सूर्य-सबसे मुख्य ऐतिहासिक व्यक्ति, जिसकी सब प्रशंसा करते हैं

पृ० २२०, २२१
कुकर्म-बुरा काम
संग्राम-युद्ध
मसला-विचारणीय विषय सोचने लायक बात समस्या
दिग्विजय-चारों ओर विजय प्राप्त करना
अनिवार्य-जो अवश्य हो
पृ० २२२ से २२४
साम-अपने शत्रु को मीठी बातें करके अपनी ओर मिला लेना
दाम-राजनीति की एक चाल जिसमें शत्रु को धन द्वारा वश में करते हैं

भेद-शत्रु लोगों को बहका कर अपनी ओर मिलाना अर्थात् उनमें द्वेष उत्पन्न करना
पक्षपाती-तरफदारी करने वाले
साम्राज्य लोलुपता-अपना राज्य फैलाने का लालच
घर का भेदिया लंका दाह-घर का भेदी हो तो लंका जल जाती।
शासन-राज्य
प्रतिकूल-खिलाफ विरुद्ध
यतोरामस्ततोजय-जिधर राम (राम या शक्तिशाली पुरुष) है उधर ही जीत है

(संक्षेप)

रामायण उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पश्चिम सारे भारत को एक सूत्र में बाँधने का एक बड़ा साधन है। श्री रामचन्द्र के नाम से प्रत्येक हिन्दू बालक परिचित है। हमारे पूर्वजों ने राम का नाम स्मरण करने के लिए साल में रामनवमी और विजयादशमी (दशहरा) दो दिन नियत कर दिए हैं। रामायण को हमारे राष्ट्रीय जीवन का स्तम्भ कहा जा सकता है। हिन्दी के हिन्दुओं का सामाजिक जीवन रामनाम की सुगंधि से ... है। परन्तु प्रश्न यह है कि रामायण और रामचरित्र को ... क्यों दी गई। आजकल की अवनति के दिनों

हम यही शिक्षा देते हैं कि रामचन्द्र बड़े आज्ञाकारी थे। पिता का बड़ा आदर करते थे, और हम गुलाम रामायण के राष्ट्रीय महत्त्व की ओर ध्यान नहीं देते।

आज हम भूखे नंगे अशिक्षित ब्रह्मचारी साधुओं को अपना आदर्श मानने लगे हैं। योग, तप, वैराग्य और आत्मवादी विचारों को बड़ा महत्त्व देते हैं, परन्तु रामायण और महाभारत में इस झूठे आदर्श का लेशमात्र नहीं मिलता। वे तो हमें शिक्षा देते हैं कि 'कुछ करो' और अध्यात्म विद्या पीछे की बनी और पुस्तकें कहती हैं—'कुछ न करो'

रामचन्द्र की पूजा का कारण उनका आदर्श मनुष्यत्व पूर्ण व्यक्तित्व है। महर्षि वाल्मीकि ने भी इसी ओर ध्यान [illegible] है। पूर्ण मनुष्यत्व के लिए स्वास्थ्य तथा सौन्दर्य, विद्या सदाचार आवश्यक हैं। रामचन्द्र जी में ये गुण कूट कूट भरे थे। परन्तु इससे भी अधिक रामचन्द्र की प्रशंसा में वीरता के कारण है। भगवान कृष्ण ने भी अपनी गीता [illegible]हा है 'शस्त्रधारियों में मैं राम हूँ।' इसी में रामचन्द्र जी [illegible] महत्ता है। परन्तु इतने गुण होने पर भी राम का नाम [illegible] नहीं हो सकता था। उनका नाम अमर है उनकी महान [illegible]नैतिक सेवा के कारण। हम समझते हैं कि रामचन्द्र ने [illegible] पर सीता के लिए चढ़ाई की थी। पर उसका वास्तविक [illegible] था हिन्दू जाति की साम्राज्य-लोलुपता। राम ने रावण को [illegible] सुदूर दक्षिण तक हिन्दुओं को अभय दान दे दिया, [illegible] सेना के नाश के बाद सारा दक्षिण हिन्दू सभ्यता के [illegible] गया। दक्षिण का प्रश्न हमेशा के लिए हल हो गया।

भारतवर्ष की एकता में कुछ बाधा न रही। अपितु दक्षिण भारत के लोग पंडित कहलाने लगे। उनमें ही शङ्कराचार्य और रामानुजाचार्य जैसे विद्वान हुए। उनमें ही शिवाजी जैसे हिन्दू सभ्यता के रक्षक हुए। इस विजय पाने में रामचन्द्र ने अंग्रेजों और फ्रांसिसियों की तरह कूटनीति से काम लिया था। इसी कूटनीति से उन्होंने रावण के भाई विभीषण को राज्य का लोभ देकर फोड़ लिया था। दक्षिण में बड़ी भारी सेना तैयार कर ली थी। इस कूटनीति द्वारा विजय पा रामचन्द्र ने हिन्दू जाति की रोटी, रक्षा, धर्म प्रचार, सभ्यता, एकता तथा जाति का भविष्य सब का प्रबन्ध कर दिया। उनकी इसी अनुपम राजनीतिक सेवा के कारण उनकी प्रशंसा में महाकाव्य लिखे गये। इसी कारण उनका नाम अमर है और प्रातःस्मरणीय है।

२८

अध्ययन

[लेखक—पण्डित रामचन्द्र शुक्ल]

पृ० २२५
अध्ययन—पढ़ना
दुरूह—कठिन, समझ में न आने योग्य
संस्कृतानुगामिनी—संस्कृत के ढंग की

पृ० २२६, २२७
आत्म संस्कार—अपना सुधार
कर्मण्य—खूब काम करने वाले उद्योगी
प्रज्ञा—बुद्धि, ज्ञान
प्रतिमा—बुद्धि, सूझ, वह असाधारण मानसिक शक्ति जिससे कोई मनुष्य बहुत

अधिक योग्यता प्राप्त कर लेता है, नीति, चमक
[illegible]न्वीक्षण–खोज
[illegible]क्रिया–तरीका, उपाय
[illegible]आविष्कार–किसी बातका पहले पहल पता लगाना
[illegible]पिष्टपेषित–पिसे हुए को पीसना, कही हुई बातको फिर फिर कहना
[illegible] २२८, २२६
[illegible]न्वेषणा–खोज
[illegible]इकट्ठा–सिमटता, इकट्ठा होता
[illegible]छला–उथला
[illegible]न्त–अन्त मे
[illegible]३० २३१
[illegible]स–यूनान की राजधानी
[illegible]यार्श–यह फारसका बादशाह था इसने अपने पिता डेरियस की यूनान विजय को पूरा करने के लिए ससार की सबसे बड़ी सेना को साथ लेकर ईसा से ४८० वर्ष पूर्व यूनान पर हमला किया। और वीर ल्योनिडास ने थर्मापली की घाटी में इसका मुकाबला किया । इस युद्ध में थर्मापली के सब वीर मारे गये थे । यार्श ने विजय प्राप्त करली थी, पर इतने में यूनान के एक छोटे से बेड़े ने उसका सबंध पिछली सेना से काट दिया। अब यार्श आपत्ति में पड़ गया। वह अपनी आधी सेना को वहीं छोड़ वापिस लौटा पर उसकी बड़ी दुर्गति हुई। और ईसा से ४६५ वर्ष पूर्व घरेलू झगड़ों में उसको कत्ल कर दिया गया।

आघात–चोट
ध्वस्त–नष्ट
कामना–इच्छा
इतिहासविज्ञ–इतिहास को जानने वाले
विलीन–लुप्त, छिप गई
उद्घाटन–खोलना, प्रकट करना
पृ० २३२, २३३
भावमयी– विचारों की
प्रपंच–झगड़ा, झमेला
निस्तब्धता–चुप्पी, शान्ति
अलकापुरी–यक्षों की पुरी
प्रेरे–प्रेरित किये हुए
कितेकहु–कितने ही
आँगनान–आँगनों

तन-शरीर

नित पौन-कवि कुल गुरु कालिदास ने मघदूत नामक एक अत्युत्कृष्ट काव्य लिखा है। यक्षपुरी के राजा कुबेर के शाप के कारण यक्षों की राजधानी अलकापुरी से एक यक्ष को बाहर जाना पड़ता है, तब वह यक्ष बादलों को अपना दूत बना कर अपनी विरहिणी स्त्री के पास भेजता है। उसी यक्ष का कथन है—

रोज वायु द्वारा धकेले हुए कितने ही बादल घूमते घामते आते हैं और जल की बूँदों की वर्षा करके आँगनों के चित्र मिटा देते हैं। फिर डर कर तुरंत छोटा शरीर बनाकर मरोखों के रास्ते बाहर भाग जाते हैं। धुआँ बन कर इस प्रकार निकल जाने के कारण वे (शकल बदलने में) चतुर कहाते हैं।

घनश्याम-काले बादल

गिरिखोहन-पहाड़ की गुफाओं

भरनन-भरनों

कर-का

निभरत-निर्भरी हुई

स्वद-पेद

अहिस्वेद-साँप का पसीना

कहूँ सुन्दर-कहीं सुन्दर काले दानव हैं कहीं वे भयंकर रूप धारण किये हुए हैं और कहीं पहाड़ों की गुफाओं में गूँजने से भरनों का शोर बढ़ रहा है। कहीं सुनसान घना जंगल है, कहीं जंगली जानवर शोर करते हैं। कहीं सोते हुए अजगर की साँस से पेड़ जलते हैं और उससे लपटें निकलती हैं। पहाड़ों की गुफाओं में कुछ जल भरे छोटे छोटे गढ़े दिखाई देते हैं। वहीं गिरगिट जब घास से घबराते हैं तब साँप का पसीना पीते हैं।

कैरव-कुमुद

काननचारी-जंगल में घूमने वाले

निहारी-देखकर

गाँव गाँव-सूर्यवंश रूपी कुमुद के लिए चन्द्रस्वरूप श्री रामचन्द्र को देख कर गाँव-गाँव में ऐसा आनन्द होता था। जो कोई यह समाचार सुन पाते वे राजा रानी (दशरथ, कैकेयी) को दोष देते थे।

धन्य भूमि-हे नाथ, जहाँ जहाँ आपने चरण रखे हैं, वह पृथ्वी धन्य है, तथा वह वन, वह मार्ग और वे पहाड़ धन्य हैं। उस जंगल के फिरने वाले पक्षी और मृग भी धन्य हैं जो आपका दर्शन पाकर सफल हो गये हैं। हम सब अपने कुटुम्ब सहित धन्य हैं कि जिन्होंने आँखों भर कर आप का दर्शन किया है।

जायसी मलिक मुहम्मद जायसी जिसने पद्मावत नामक महा काव्य लिखा है जिसमें यह वर्णन है कि चित्तौड़ के राजा रतनसेन ने सिंघल द्वीप (लंका) में पहुँच कर वहाँ की राजकुमारी पद्मावती से विवाह किया। फिर पद्मावती के पाने के लिए दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन ने चित्तौड़ का ध्वंस किया और वह सती स्वयं चिता पर चढ़ कर स्वर्ग चली गयी।

प्रेम पथ-प्रेम का रास्ता

दीप्ति-कान्ति, चमक

आन-ऐंठ प्रण

सौकर्षोक-बनाव श्रृंगार, छेड़ छाड़

मत्रवेत्ता-मन्त्र को जानने वाला

आह्वान-बुलाना

पृ० २३४, २३५

सचित-इकट्ठा

प्रचुर-बहुत बड़ा

अध्यवसाय-लगातार उद्योग, उत्साह

छाड़िये न-हिम्मत न छोड़िए और प्रभु के नाम को न भूलिए। जिस तरह भी राम रखें उस तरह रहिये।

हताश-निराश, जिस आशा न रही हो

बिना विचार-बिना सोचे विचारे जो कोई काम करता है, वह पीछे पछताता है, और और संसार में उसकी हँसी होती है।

भीषण संग्राम-भयंकर लड़ाई

धाप-मर्यादा, धाक, प्रतिष्ठा

न्यायसंगत-न्याय के अनुसार ठीक

परामर्श-सलाह

पृ० २३६, २३७

अभिप्रायगर्भित-अर्थ से युक्त

अलभ्य-जो कठिनता से मिले अनमोल

भावना-ध्यान

आभा-कान्ति, चमक

(संक्षेप)

यदि हम कोई ऐसा चसका लगाना चाहते हैं जिससे हम एकान्त में और बुरे दिनों में आनन्द प्राप्त कर सकें और जो हमें बुराइयों से हटा कर सन्मार्ग दिखावे तो हमें पढ़ने का चसका डालना चाहिये। पढ़ना ज्ञान की वृद्धि और बड़े धन के अभ्यास का एक मुख्य साधन है। यह बात सच है कि कई एक बड़े बड़े काम करने वाले आदमी हुए हैं जो पढ़े लिखे न थे पर वे अपनी असाधारण प्रतिभा के कारण ऐसे हो सके हैं। एक तो सब साधारण आदमी ऐसे प्रतिभाशाली नहीं होते। दूसरा यदि वे लोग भी पढ़े लिखे होते और उन से पहले जो दूसरे प्रतिभाशाली खोज कर गये हैं, उनको जान सकते, तो वे और भी अधिक उपयोगी हो सकते। चाहे कितना भी प्रतिभाशाली आदमी हो पर यदि वह पढ़ा लिखा न हो तो भूतकाल उसके लिए केवल अंधकार सा होता है और वह अपने आविष्कारों को बड़ा महत्त्व देता है। पर जब वह पढ़ता है तो उसे पता लगता है कि उसकी प्रतिभा थोड़ी सी बातों को छोड़ कर और कुछ आविष्कार नहीं कर सकी।

पढ़ने का दूसरा एक मुख्य लाभ यह है कि इसके द्वारा हम भूतकाल के इतिहास को जान सकते हैं और काव्य का आनन्द ले सकते हैं। हम जातियों के उत्थान और पतन, उनकी सभ्यता के क्रमिक विकास और उनके भाग्य की चंचलता को जान सकते हैं। हमें पता लगता है कि किस तरह यूनान, रोम और

भारत अपने उन्नति के दिन देख कर सांसारिक सभ्यता पर अपनी धाक जमा कर आज अवनति के गढ़े में गिर चुके हैं। फिर किस तरह उनका उत्थान हो सकता है।

इसके साथ ही जो विद्याभ्यासी आदमी है किसी भी स्थिति में उसे साथियों का अभाव नहीं खल सकता। कालिदास, भवभूति तुलसीदास शेक्सपियर, आदि अमर कवियों का काव्य, दार्शनिकों का ज्ञान सदा उसके साथ रहता है। इसके अतिरिक्त जब हम पतन की ओर जाने लगते हैं, निराश होते हैं, हमारे सामने अधकार होता है, तब महापुरुषों की सूक्तियों से हम शिक्षा उत्साह और शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। वे हमें रास्ता दिखा कर जीवन के भीषण संग्राम में अपनी अपनी धाक रखने में समर्थ करती हैं। उनके अध्ययन से चित्त शुभ भावनाओं और प्रौढ़ विचारों से भर जाता है। खाली बैठे रहने के समय—रेल आदि में जाते समय—अध्ययन हमारे लिए एक अच्छा मानसिक व्यायाम होता है। ग्रन्थकार की चमत्कार पूर्ण उक्तियों आदि से हम अमर भाव प्राप्त कर सकते हैं।

---

(२६)

मेघ

(अनुवादक—श्री रूपनारायण पांडेय)

पृ० २३६	सौदामिनी–बिजली
प्रयोजन–मतलब	अस्थिर–चंचल
दारुण–कठोर	पृ० २४०, २४१
[illegible]–मधुर मुसकान वाली	मन्द मन्द गुदति–जिस तरह

[illegible] बादल और — [illegible] होती है
[illegible] — अशान्ति–जल का बूँद
[illegible] — कामाग्नि–प्रज्वलित काम की आग।
[illegible] — मनोरम–मनोहर, सुन्दर
[illegible] है। — अनुयायी–[illegible]
[illegible] — कामिनी–सुन्दर स्त्री

(संक्षेप)

इस गद्य में लिखी गई कविता में (गद्य काव्य में) कवि बादल के बरसने न बरसने उसके रूप आदि का वर्णन स्वयं बादल के मुँह से करा कर एक सहृदय व्यक्ति के मन के भावों को प्रकट करता है। बादल कहता है कि उसके बरसने में कोई उसका अपना स्वार्थ नहीं फिर वह क्यों बरसे, जब वह बरसता है तब उसके हृदय पर बिजली सी आग जलती है जिस प्रकार मनुष्य [illegible] होते हैं, पर अगर वह आग मनुष्यों को छू भी जाय तो वे जल जावें। उसके सिवा उस आग को और कौन सह सकता है। वायु सदा बादल को चपल किये रहती है, परन्तु जब वह जल से भारी होता है तब वायु उसका कुछ नहीं कर सकती। ऐसे ही जो सज्जन गुण रूपी जल से भारी होता है, उसे दुनिया की बातचीत–अफवाह–अस्थिर नहीं करती। फिर वही बादल दुनियाँ को हरा भरा करने के लिए बरसने को तैयार हो जाता है। उसके मधुर गर्जन से जहाँ दुनियाँ नाच उठती है, वहाँ भयंकर गर्जन से सब डर जाते हैं। वही बादल आशा से सिर उठाये जूही की कली को स्वच्छ जल से सींचने के लिए

और नदी को आशापूर्ण करने के लिए बरसने को तैयार होजाता है। परन्तु जब वह देखता है कि बुढ़िया औरत उसी के पानी को भर कर और बूँदाबाँदी बन्द न होने के कारण उसे ही गाली देती जाती है, तब वह अपनी निंदा सुन दिल में ठानता है कि वह न बरसेगा। परन्तु कवियों की स्वागत वाणी सुन—प्रशंसात्मक गीत सुन—वह फिर बरसने को तैयार होजाता है। कवि ही उसके दुख को समझ सकता है, क्योंकि जिस तरह बादल के हृदय में बिजली रहती है, वैसे ही कवि के हृदय में प्रतिभा-रूपी बिजली रहती है।

इस बात का उसे अभिमान है कि जहाँ उसके भयकर रूप से सब लोग डरते हैं वहाँ सन्ध्या के समय लाल रंग के बादल तथा चाँदनी रात के उड़ते हुए बादल पृथ्वी पर रहने वालों के मन को हर लेते हैं। दुनियाँ मे एक ही चीज उसका साथ देती है, गूँज। जब कभी बादल का गर्जन होता है तब पहाड़ियों की गुफाओं में गूँज जरूर पैदा होती है।

३०

वृष्टि (बरसात)

पृ० २४३
क्षुद्र-छोटा
अर्घुदों-अरबों
पृ० २४४, २४५

नवीनमेघमाला—नये और नील बादलों की पंक्ति
दिग्मण्डलव्यापिनी—चारों दिशाओं में फैलने वाली

नरसो

सूर्यतेजसंहारिणी—सूर्य के तेज को नष्ट करने वाली
सौदामिनी—बिजली
वृष्टिबिन्दुकुल—बरसात की बूँदों का समूह
खटीक—एक छोटी जाति जो फल, तरकारी आदि बेचता है,
पराग—फूलों की धूलि
कूलप्लाविनी—किनारे को धो डालने वाली
अतितरंगसंकुला—अत्यधिक तरंगों की भीड़ वाली
संहार—नाश

संक्षेप

इस गद्य काव्य में कवि दिखाना चाहता है कि एकता में ही बल है। छोटी छोटी बूँदें जिनकी दुनिया में कोई हस्ती नहीं जिनसे छोटा कोई नहीं, वे ही जब एका कर लेती हैं तब वे सारी पृथिवी को जलमय कर देती हैं। तेज वायु भी उनसे नहीं लड़ सकती। वह तो उल्टी उन सबल बूँदों की सहायक होती है, वह तो उनकी गुलाम है। वायु की सहायता से तो वे बड़े बड़े घरों को ढा देने की शक्ति रखती हैं। एका ही उनका बल है नहीं तो वे कुछ भी नहीं। एका होने के कारण ही वे खेतों में अन्न उपजाती हैं, संसार की रक्षा करती हैं, तृण, लता, वृक्ष, पशु, पक्षी सब को जीवन देती हैं। ये क्षुद्र बूँदें फिर भी अपने जैसी क्षुद्र चीजों का ध्यान रखती हैं और बिजली से निवेदन करती हैं कि गिरना है तो अभिमान से उठे हुए सिरों पर गिरना, गरीब छोटे-मोटे पौधों पर न गिरना। ये वृष्टि की बूँदें रसिक भी बड़ी हैं। छेड़खानी इनको प्रिय है। एका होने पर वे किसी देश के मनुष्यों की रक्षा करती हैं तो किसी देश को बाढ़ से डुबा देती हैं। उन जैसा क्षुद्र कोई नहीं, पर एका होने पर उन जैसा बलवान कोई नहीं।

राजपूतनी का बदला

पृ० २५० से २५६

निरीह–असहाय, जिसे किसी बात की इच्छा नहीं।
भूकम्प–भूचाल
अनुसरण–नकल
यन्त्रणा–पीड़ा दर्द
रक्तरञ्जित–खून से रंगी हुई
वेदना–पीड़ा
यथेष्ट–काफी, पर्याप्त
सम्राज्ञी–महारानी, सम्राट् की स्त्री
विष का दाँत नहीं हुई–जैसे साँप का विष का दाँत उखाड़ देने पर भी उसकी फुफकार कम नहीं होती, वैसे ही बुरे दिनों में भी ऐंठ न जाने पर यह उक्ति कही जाती है।
विस्मय–आश्चर्य
यवनिका पतन–नाटक के परदे का गिरना।

संक्षेप

फौज को चीरती फाड़ती दिल्ली से निकल मेवाड़ में राणा राज सिंह के यहाँ पहुँच गई। राह में उनकी लड़की मर गई, पर बच्चे को दुर्गादास का विश्वास पात्र मुसलमान सेवक कासिम बचा कर ले गया। महामाया ने राणा राजसिंह से बच्चे की रक्षा करने को कहा। राणा ने महामाया को उसके लिए निश्चिन्त कर दिया और रानी को बलपूर्वक मेवाड़ में रहने को कहा, पर महामाया स्वर्गीय पति के घर को छोड़ भाई के यहाँ रहने को तैयार न हुई। राणा ने पत्र लिखकर औरंगजेब का ध्यान इस अत्याचार की ओर दिलाया। पर औरंगजेब ने बड़ी भारी सेना ले मेवाड़ पर चढ़ाई कर दी। इधर रानी ने भी गाँव गाँव में घूमकर सोते हुए राजपूतों को जगा दिया था। मेवाड़ और मारवाड़ की सम्मिलित फौज ने दुर्गादास के सेनापतित्व में मुगलों का मुकाबला किया। इसमें मुगलों की बड़ी भारी हार हुई। बेगम गुलनार को दुर्गादास ने कैद कर लिया। राणा राज सिंह ने उसी समय बेगम को छोड़ देने के लिए कहा पर क्रोधान्ध और बदले की आग में जलती हुई रानी अपना सत्या नाश करने वाली गुलनार को कठोर से कठोर दण्ड देना चाहती थी। राजपूत राणा किसी स्त्री पर यह अत्याचार न देख सकते थे और इन्होंने दुर्गादास से कहा कि वह सम्मान के साथ बेगम को बादशाह के पास पहुँचा दे।

दुर्गादास ने रानी को बताया कि बेगम आज मेवाड़ के राना के यहाँ कैद है, मारवाड़ की रानी के यहाँ नहीं और राणा ने उसी के लिए युद्ध किया है अतः उनकी आज्ञा मानना भी रानी का धर्म है। इस बात ने महामाया की आँखें खोल दीं

और उसने राणा राजसिंह से क्षमा याचना की। राणा ने कहा कि जो क्षमा तुम मुझसे माँग रही हो वह क्षमा तुम बेगम को दिखलाओ, और वे रानी की दया पर बेगम को छोड़कर स्वयं वहाँ से चले गये। बेगम महामाया के सामने पेश की गई। चक्र पलटा हुआ था। जिस बेगम ने महामाया को दण्ड देना था, आज वह स्वयं कटघरे में थी। पर उसकी ऐंठ न गई थी। महामाया ने उससे पूछा कि यदि वह कैद कर ली जाती तो बेगम उसके साथ क्या करती। बेगम ने कहा कि वह महामाया को पैर का धोवन पिलाती और मार डालती। महामाया ने कहा—बेगम, आज तुम मेरे यहाँ कैद हो, चाहूँ तो तुम्हारी हत्या कर सकती हूँ, तुम्हें पैर का धोवन पिला सकती हूँ, पर मैं तुम्हें छोड़े देती हूँ। गुलनार विस्मय से देखने लगी। रानी बोली—राजपूतों का यही बदला है।

३२

हिन्दू जाति की पाचन-शक्ति

(लेखक—श्री भागीरथप्रसाद दीक्षित)

पृ० २६०, २६१

अनादि—जिसका आदि न हो, बहुत प्राचीन काल से

क्रमबद्ध—सिलसिलेवार

भिन्नीय—भिन्न भूभाग [illegible] निवासी, [illegible] के ऊपर [illegible] के तट पर

है, जो बहुत प्राचीनकाल से सभ्यता और उन्नति के लिए बहुत विख्यात था। यह देश सदा रोम और यूनान के बराबर सभ्य समझा जाता था। पर अब उसका पतन हो चुका है।

यहाँ के निवासी अब मुसलमान हैं और आजकल वे अंगरेज़ों के संरक्षण में हैं।

बैबिलोनियन—बैबीलान के निवासी। बैबीलोन बगदाद से ६० मील दूर प्राचीन नगर है। वहाँ का साम्राज्य इराक और फारस के प्राचीन साम्राज्यों में से था। इसकी सभ्यता बहुत पुरानी मानी जाती है।

सीरियन—एशियाटिक टर्की में भूमध्यसागर के किनारे बसे हुए साम्राज्य के निवासी। कहते हैं, भूमध्यसागर के किनारे ही पहले पहल सभ्यता का प्रसार हुआ था।

सीथियन—सीथिया के निवासी, काला समुद्र के उत्तर और पूर्व में अराल की खाड़ी के आसपास एशिया तुर्किस्तान का प्राचीन साम्राज्य सीथिया कहलाता था, यह सभ्यता का केन्द्र था शक जाति यहीं की रहने वाली थी।

स्पार्टन—ग्रीस (यूनान) के पुराने प्रदेश के निवासी। यूरोप में सबसे पहले यहाँ सभ्यता का प्रचार हुआ।

रेडइंडियन—अमेरिका के सबसे पहले निवासी।

द्वार मुक्त करो—द्वार खोलने, अन्दर आने दो।

अंगोरार—खोआर मजूर

जात्युन्नति—जाति की उन्नति

समयोचित—समय के अनुसार ठीक

पृ० २६२, २६३

दस्यु—म्लेच्छ, अनार्य, भारत के प्राचीन निवासी।

द्राविड़—दक्षिण भारत की प्रसिद्ध जाति।

आरण्यक—उपनिषद्, वेदों की शाखा का वह भाग जिसमें वानप्रस्थ के कृत्यों का विवरण और उनके लिए उपदेश

स्मृति—धर्म ग्रंथ, जो १८ माने जाते हैं।

यवन—मुसलमान।

तक्षशिला—रावलपिंडी के पास एक नगर जो प्राचीन भारत में शिक्षा का केन्द्र था।

पृ० २६४, २६५

साम्यवाद—समाज के भेद भाव को दूर कर समानता बनाने के विचार

स्तम्भ—खंभा, मीनार।

बुद्धं शरणम्-मुझे बुद्ध की शरण है।
पृष्ठ २६६ २६७
विरत-विगड़ा हुआ।
दरगाह-किसी सिद्ध फकीर का समाधि स्थान।
पार औलिया-पहुँचा हुआ फकीर
मदिरा—शराब
दुर्व्यसन—शराब आदत
तांत्रिक-तंत्रशास्त्र में कहे गये, मारण, मोहन जत्र मत्र आदि
व्यवस्था-शास्त्रों द्वारा विधान
पृष्ठ २६८
कंठी-तुलसी आदि की मनियों की माला जिसे वैष्णव लोग गले में बाँधते हैं।

(संक्षेप)

संसार की संपूर्ण प्राचीन सभ्य जातियाँ मिश्रीय, बेबिलोनि-[illegible]न आदि पृथ्वी तल से मिट गयीं, साथ ही उनकी सभ्यता [illegible]ा नामोनिशान भी मिट गया एक हिन्दू जाति ही ऐसी है [illegible]सकी सभ्यता अब तक बची है। हमारे त्योहार एवं वर्णाश्रम [illegible]यवस्था हमारे संगठन और जीवन के सुदृढ़ प्रमाण हैं। [illegible]मारा धर्मक्षेत्र केवल हमारी ही जातियों के लिए संकुचित [illegible]हीं रहा, इसका द्वार सब साधारण के लिए सदैव खुला रहा [illegible]। वेद काल में आर्यों और दस्युओं में संपर्क होता रहा। [illegible]ौराणिक काल में भी मिस्र और मध्य एशिया में कण्व [illegible]ौर व्यास के जाने का वर्णन मिलता है। कहते हैं कण्व [illegible]पने साथ कई हजार मिश्र निवासियों को भारत में ले आये [illegible], जो कुछ ही वर्षों में हम में घुल मिल गये। जावा द्वीप भी [illegible]दिक उपदेशकों से अछूता नहीं रहा। अमेरिका के मैक्सिको [illegible]श में अब तक राम का उत्सव मनाया जाता है। बौद्ध [illegible]ाल में तो बौद्धों ने लगभग आधे भूमंडल में—चीन, जापान [illegible], अफगानिस्तान, अरब तुर्किस्तान आदि सब [illegible]ौद्धधर्म की दुर्दम बना दी थी। बौद्ध धर्म

धर्म की शाखा मात्र है। इस समय भी ५५ करोड़ बौद्ध हैं। यह हिन्दू जाति की पाचन शक्ति का अच्छा प्रमाण है। इसके बाद बौद्ध शक, पल्हव, कुशान और हूण आदि जो आक्रमणकारी ग्रीस, सिथिया, बेबिलोनिया तिब्बत, और तुर्किस्तान आदि प्रान्तों से आये थे, और जिन्होंने भारत को बार बार पददलित कर दिया था पीछे जाकर वे भी इसी हिन्दू जाति में मिल गये। अब उनको पहचानना भी कठिन है। बौद्धों की अवनति काल में शंकराचार्य ने फिर वेदों की ध्वनि उठायी और शुद्धि के बड़े सरल नियम बनाये। इसके बाद रामानुज, वल्लभाचार्य, चैतन्य महाप्रभु आदि भक्तों ने कई मुसलमानों को शुद्ध किया। पीछे भी अन्य कई सुधारक मुसलमानों आदि को मिलाते रहे। आजकल भी ब्रह्म समाज आर्यसमाज आदि संस्थाएँ मुसलमानों को शुद्ध कर हिन्दू जाति में मिला रही हैं। सारांश यह कि प्राचीन काल से अब तक हिन्दू जाति अन्य जातियों को अपने में मिलाकर उनका पाचन करती आई है। मल्कानों की भाँति कई जातियाँ ऐसी हैं जिनके रीति रिवाज अधिकतर हिन्दू हैं उनको शुद्ध करने का प्रयत्न करना चाहिए।

३४

लाहौर में रावी नदी का उषाकालीन दृश्य

(लेखक—श्री सतराम बी ए.)

पृ० २७२, २७३
मनोभाव—विचार
वापी—बावड़ी
शरीरप्रक्षालन—शरीर धोना
मुख मंडल—चेहरा
पृ० २७४, २७५
जनाकीर्ण—आदमियों की भीड़ वाली
निरंतर—हमेशा, लगातार

संक्रान्ति-सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि मे प्रवेश करने का समय
निवृत्त-फारिग
प्रौढ़ अवस्था-बड़ी उमर
घोष-आवाज़
पृष्ठ २७७
शुभ्रवसना-सफेद कपड़े वाली।

पृ. २८०
विकराल-भयंकर
काया-शरीर
किशोरी-नवयुवती
भीमकाय-भयकर शरीर वाली
आसुरी-राक्षसी

(संक्षेप)

रावी नदी के तट पर प्रातः सैर और स्नान के लिए रोज सवेरे अनेक लोग जाते हैं,इनमें हिन्दुओं की संख्या अधिक होती है। क्योंकि साधारणतया हिंदू स्नान के बिना रह ही नहीं सकते। रावी नदी अब लगभग लाहौर से दो मील की दूरी पर रहती है। रावी को जाने वाली सड़क पर वेद मन्दिर और बिहारी भवन दो प्रसिद्ध जगह हैं। सवेरे घूमने वालों में बूढ़े आर्यसमाजी, 'ओं नमस्ते' की आवाज़ करते हुए जोशीले आर्यसमाजी युवक, 'जय सीताराम' पुकारते भक्त लाला लोग, काले कपड़े पहने प्रभुभजन गाती स्त्रियाँ और कुछ नवयुवतियाँ भी होती हैं। इनमें से अधिकतर नदी पर स्नान करने चले जाते। नदी पर कोई पक्का घाट नहीं। इन स्नानार्थियों के सिवाय कुछ बाबू लोग पुल के ऊपर होकर रावीके दूसरे पार जाते दिखाई देते हैं, ये अधिकतर अपने दफ्तर की चर्चा करते रहते हैं।

संक्रांति, अमावस्या या त्योहारों के दिन रावी पर स्नानार्थियों की भीड़ बहुत बढ़ जाती है। उस दिन रंग बिरंगे वस्त्र पहने आती नवयुवती सुन्दरियों की अधिकता होती है।

३५

कान्हू जी आंग्रे

पृ० २८१
संघर्ष-स्पर्द्धा मुकाबला
पृ० २८२, २८३
नि शंक-निडर
अघोरकर्मा-भयंकर काम करनेवाला
शीघ्रगामिनी-जल्दी चलनेवाली
केवट-मल्लाह
रक्तपिपासु-खून का प्यासा
निरत-त पर किसी काम में लगे हुए
प्रतिद्वंद्वी-मुकाबला करने वाला
विध्वंस-नाश
जुआ गले में पहनना-अधीनता स्वीकार करना
निर्भीक-भयरहित
मौत मोल करना-मरना
पृ० २८४, २८५
निरूपण-ठीक २ पता लगाना।
दु:खवार्त्ता-दुःख की कहानी
दोषारोपण करना-दोष लगाना
उल्लंघन-तोड़ना
निर्णेता-फैसला करने वाला।
सुव्यवस्था-अच्छा प्रबन्ध
समदर्शिता सबको एकसा समझ
समरभूमि-युद्ध क्षेत्र
दैवयोग से-इत्तफाक से
मुठभेड़-सामना, लड़ाई
शौर्य-शूरता बहादुरी
पृ० २८६, २८७
आखेट-शिकार
गगनभेदी-आकाश को फाड़ने वाली, बड़ी ऊँची आवाज.
कुमुक-सहायक सेना
विक्रान्त-बहादुर, शूरवीर
नवप्राप्त-नये पाये हुए
पृ० २८८, २८९
अप्रसन्न-शक्ति, असंतुष्ट
कमाण्डर-सेनापति
खटराग-झंझट, बखेड़ा
प्राणहानि-प्राणोंकी हानि, मौत
पृ० २९० २९१
काल-मौत, भय
कराल-भयंकर
अट्टहास-ऊँचे स्वर से हँसी
ढेर होगया-गिरकर मर गया।
दत्तक-गोद लिया हुआ
लोकप्रिय-सब का प्यारा

किशोर–जवान
उपहार–भेंट
अजय–जो जीता न जा सके
अनुग्रह–कृपा
पृ० २९०, २९३
अमित–असीम बेहद
सागरपरिवेष्टित–सागरसे घिराहुआ
हौआ–डर की चीज
मानचित्र–नकशा
गढ़–किला
पाषाणमय–पत्थर वाला
अन्तरीप–टापू, द्वीप
भूनासिका–अन्तरीप
बालुकामय–रेतीला
डमरूमध्य–धरती का वह तंग या पतला भाग जो दो बड़े भूमिखंडों को मिलाता है
डॉक–जहाजोंके ठहरनेकी जगह
सागर दस्यु–समुद्री लुटेरे
पृ २९४, २९५
मूर–उत्तर पश्चिमी अफ्रीका के रहने वाले अरब जाति के मुसलमान
डचमेन–हौलैंड के रहने वाले
रक्तरंजित–खून से रँगी
विवेकशून्य–भले बुरे का विचार न करने वाला
दुरात्मा–पापी
उच्छृङ्खल–स्वेच्छाचारी,मनमानी करने वाला, जो कोई नियम न माने
पादस्पन्दन–पैर छूना
धन-लोलुपता–धन का लालच
भयभीत–डरे हुए
उत्कर्ष–समृद्धि, बढ़ती
त्रास–डर
गर्वित–घमण्ड से युक्त
कलश–ऊँचे शिखर
धराशायी–पृथ्वी पर लेटा हुआ

(सक्षेप)

१८वीं शताब्दी में मलाबार के सागर तट पर कई भयानक समुद्री लुटेरे रहते थे। उनका काम पश्चिमी सागर से आने वाले व्यापारियों के जहाजों को लूटना था। उस समय के [illegible] व्यापारियों में आपस में बड़ी प्रतिस्पर्द्धा थी। वे [illegible] प्रतिस्पर्द्धियों—विरोधियों—को नीचा

लिए इनसे सहायता लेते थे। इन समुद्री लुटेरों में काइतू जॉन सबसे अधिक विख्यात था। कहते हैं उसका दादा शमुची आमे एक अरबी व्यापारी जहाज में मल्लाहों का नेता था। सन् १६४८ में यह जहाज मस्कट से चला था। वायु के धकेलने से वह भारत म चौल के समीप एक छोटी सी खाड़ी में आ लगा। रास्ते में मालिक और मल्लाहों म विरोध हो गया। जिस जगह पर जहाज लगा था, वहाँ के राजा ने जहाज के बारे में पता लगे के लिए आदमी भेज, तो मल्लाहों ने मालिक के विरुद्ध और मालिक न मल्लाहों के विरुद्ध शिकायत की। बहुमत को मानकर मालिक की हत्या कर दी गई।

इधर उस राजा की मुगल-सम्राट् के साथ लड़ाई हो रही थी। उस राजा ने इन मल्लाहों को अपनी सेना में भरती कर लिया और उनके साथ कुछ आदमी मिलाकर एक छोटी सी सेना समरभूमि की ओर भज दी। राह म ही मुगलसेना से मुठभेड़ हो गई। इस समय राजा की सेना का नेता अपने से पाचगुना मुगलसेना को देखकर भाग गया। पर मल्लाहों का नेता शमुची आमे बड़ा साहसी था। उसने गाड़ियों और असबाब के छकड़ों का घेरा बना उसके पीछे अपन साथियों को छिपाकर शत्रुओं पर गोली चलाना शुरू किया। इस तरह उसने बड़ी मुगल सेना को हरा दिया। यह खबर सुनते ही राजा ने प्रसन्न हो उसे सेना में उच्च पद दे दिया। कुछ दिन बाद महामन्त्री की कन्या से उसका विवाह होगया। सन् १६७७ में खूब मान प्रतिष्ठा प्राप्त कर वह इस दुनिया को छोड़ गया। राजा भी कुछ ही दिन बाद चल बसा। उसका पुत्र नया राज्य

कर पूछ गया। उसने दिल्ली दरबार से युद्ध ठान लिया। ... सूरत के नवाब ने राजा पर चढ़ाई कर दी।

शम्भु आँग्रे का पुत्र उसके जैसा ही योद्धा था। पर नये राजा ने उसे सेनापति न बनाकर वह पद दूसरे को दे दिया। आँग्रे नाराज हो नवाब से जा मिला। लड़ाई हुई। राजा का सेनापति पकड़ा गया। आँग्रे उसे झटपट कत्ल कर देना चाहता था, पर नवाब ने उस अभयदान दिया। आँग्रे अब नवाब से भी नाराज होगया। इतने में राजा ने अपनी गलती समझी और आँग्रे को प्रधान मन्त्री बनाने तथा अपनी बहन का विवाह उससे कर देने का प्रलोभन दिया। आँग्रे जाने से पहिले नवाब से बदला लेना चाहता था, अतः उसने बहुत से सिपाहियों को अपने साथ मिला लिया और नवाब को शत्रु पर हमला करने की एक नई युक्ति बताई। नवाब उसकी बात मान कर सेना सहित एक तंग नाले के अंदर बढ़ता गया। उस नाले के मार्ग को दूसरी ओर से राजा ने घेरा हुआ था। जब नवाब ने वापिस होने की सोची तब स्वयं आँग्रे के साथी उस पर पिल पड़े। नवाब के ६००० मनुष्य उस युद्ध में मारे गये। बदला ले चुकने के बाद आँग्रे फिर राजा से आ मिला। राजा ने उसके साथ अपनी बहन का विवाह कर दिया, पर थोड़े दिन बाद वीर आँग्रे अपने पीछे दो छोटे छोटे बच्चे छोड़कर युद्ध मैदान में मारा गया। राजा ने उन पुत्रों को बड़े प्रेम से पाला। पर एक तो मर गया दूसरा कान्हूजी आँग्रे आगे चल कर ... पूछा। जब वह जवान हुआ तो राजा ने उसे कुछ ... और कोरी टापू का अजय दुर्ग उपहार में

आँग्रे ने भी मुगलों के आक्रमण होने पर राजा की बहुत सहायता की।

इधर आँग्रे ने खूब सेना एकत्र कर और सागर से घिरे हुए दुर्ग को मजबूत बनाकर यूरोपीय व्यापारियोंके जहाजोंको लूटना शुरू किया। इसके बाद आंग्रे ने पुर्तगीजों को हराकर बम्बई और गोआ के बीच सागर तट पर स्थित गेरिया नामक जगह को छीन लिया। यहाँ के दुर्ग पर अधिकार कर बाहूजी ने विदेशियों के छक्के छुड़ा दिये। फिर पुर्तगीजों और दूसरे व्यापारियों को भगाकर उसने समुद्रतट का और भी बहुत सा भाग जीत लिया। अब वह काफी बड़े भूभाग का शासक होगया। उसकी सेना में फ्रेंच, पोर्तुगीज हिन्दू सब जातियों के लोग थे। अंगरेजों ने भी उसके सामने राज भक्ति की शपथ ली थी। परन्तु सब व्यापारियों के लिए हौआ और समुद्री डाकुओं के सरदार की आँग्रे को कुछ काल के बाद ही नीचा देखना पड़ा और उसका दुर्ग नहस नहस कर दिया गया।

३६
उन्नत देश के देहाती कैसे रहते हैं

(लेखक—श्री महावीर प्रसाद श्रीवास्तव बी ए)

पृ० २६७ से ३०७ तक

खेतीहर—खेती करने वाले, किसान

जनश्रुति—अफवाह, किंवदंती

जिज्ञासावृत्ति—ज्ञान प्राप्त करने की आदत पूछ ताछ करने की वृत्ति।

वाग्वर्द्धिनी—भाषण शक्ति को बढ़ाने वाली

कर्तव्यविमूढ़–जो यह न जान सके कि क्या करना चाहिये और क्या न करना चाहिये
टिबद्ध–तैयार
निराधार–जीवन के आधार, सहारे
उद्योगसमिति–ऐसी समितियाँ जो सस्ते दामों पर इकट्ठा माल खरीदती हैं, और फिर बिना मुनाफे के अपने सदस्यों को बेच देती हैं।
ऐहिक–सामारिक दुनियावी
हियाव–साहस, हिम्मत

(संक्षेप)

यूरोप में डेन्मार्क एक छोटा सा देश है। यहाँ के ग्राम निवासियों का जीवन आदर्श जीवन कहा जा सकता है। उनको संसार की घटनाओं का ज्ञान तथा अपने देश के राजनीतिक मसलों का पूरा परिचय रहता है। उन गाँवों में ऐसा कोई घर और ऐसा कोई किसान नहीं जो राजनीतिक घटनाओं से परिचय न रखता हो। डेन्मार्क की इस सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक उन्नति का मुख्य कारण वहाँ के प्रत्येक गाँव में एक मिलन मंदिर का होना है। यह मंदिर सारे गाँव का सामाजिक केन्द्र होता है, जहाँ पुरुष और स्त्री सभी दिल बहलाने और गपशप करने को इकट्ठे होते हैं। प्रत्येक मिलन मन्दिर में एक सभाभवन, एक वाचनालय और पुस्तकालय होते हैं। जिनमें सब तरह के समाचार पत्र और पत्रिकाएँ आती हैं।

जाड़े के दिनों में इन मिलन मन्दिरों में व्यायाम करना सिखाया जाता है। व्याख्यान होते हैं, वाद विवाद होते हैं, जिनमें विश्वविद्यालय के विद्यार्थी भी आते हैं। कभी व्याख्याताओं को पुरस्कार भी दिया जाता है। पर

अधिकतर वे अपना कर्तव्य समझ कर ही व्याख्यान देते हैं।

प्रत्येक गाँव में गवर्नमेंट के काम पर विचार करने के लिए एक राजनीतिक संस्था, अस्त्र शस्त्र चलाने की शिक्षा देने वाली संस्था, तथा भूमि की उपज बढ़ाने के उपायों पर विचार करने के लिए कृषि सुधारिणी संस्था होती है। इसके अतिरिक्त खरीदने और बेचने की सुविधा के लिए सहयोग-समितियाँ भी होती हैं। इन संस्थाओं के अतिरिक्त राजनीति, इतिहास, अर्थ शास्त्र, कृषि आदि सिखाने के लिए स्कूल तथा कृषि विद्यालय भी हैं। जाड़ों में जब कुछ काम नहीं होता तब इनमें कई कृषक और खेती करने वाले मजदूर दाखिल हो जाते हैं, और शिक्षा प्राप्त कर अपने साथियों को भी सिखाते हैं।

डेन्मार्क की भी हमेशा से ऐसी दशा नहीं चली आई। १८६५ ईसवी में इसकी हालत बहुत खराब हो गयी थी। परन्तु उसके बाद कुछ देशभक्तों की मंडली ने देश भर में घूम कर एकता और जागृति का मंत्र फूँका। किसानों की दशा को उन्नत करने के लिए देशभक्त कृषि विद्या विशारद उन्हें खेती की वैज्ञानिक रीतियाँ बताते, खरीदने बेचने के लिए सहयोग समितियों की स्थापना करने में सहायता देते, और एक दूसरे से मिलकर काम करना सिखाते थे। धर्मोपदेशकों ने छोटे छोटे गाँव के गिर्जाघरों में उपदेशों द्वारा, राजनीतिज्ञों ने गाँव निवासियों में अपने व्याख्यानों द्वारा और गायकों और नाटक मंडलियों ने देशभक्ति की कविताओं द्वारा सारे देश में फिर जागृति पैदा कर दी। जिससे सप्ताह में एकदिन गाँव

बड़े सब आपस में मिलकर बैठने लगे। मिलन-मन्दिर बने। वाचनालय और पुस्तकालयों की स्थापना हुई। फलत आधुनिक समय में डेन्मार्क की यह दशा हो सकी। इससे भारतीय भी अपना कर्तव्य जान सकते हैं।

३७

कृष्ण चरित

(प्रो॰ शिवाधार पाण्डेय)

पृ॰ ३०८, ३०९

घनघोर घटा–गहरी काली घटा

मंगल–कल्याण

क्षीण–कमजोर

मनु–ब्रह्मा के पुत्र जो मनुष्यों के मूल पुरुष माने जाते हैं, इन्हीं ने ही मनुस्मृति बनाई, जिस में मनुष्य मात्र के सब धर्मों का विधान है।

पृथ्वीनाथ–पृथ्वी के मालिक

पृथु–इक्ष्वाकुवंश के पाँचवें राजा का नाम जो त्रिशंकु का पिता था। पुराणानुसार इसके राज्य काल में पृथ्वी पर अन्न उत्पन्न होना बंद हो गया था। तब इसने पृथ्वी पर चलाने के लिए पर तीर चढ़ाया गौ का रूप धर कर भागने लगी, और थकने के बाद फिर इसकी शरण में आई, और बोली आप मुझे दुहकर औषधियाँ अन्न आदि उत्पन्न कीजिए। इस पर इसने मनु को बछड़ा बनाकर उस गौ को दुहा। और फिर अन्न आदि होना प्रारम्भ हुआ।

महर्षि याज्ञवल्क्य–ये राजा जनक के दरबार में रहते थे। और बड़े महाज्ञानी थे, मैत्रेयी और गार्गी इन्हीं की पत्नियाँ थीं।

प्रेरणा–उत्तेजना

प्रकृति–स्वभाव

पृ॰ ३१०, ३११

अश्रद्धा–विश्वास और आदर न होना।

औद्धत्य–अक्खड़पन, उजड्डपन
बर्बर–जंगली असभ्य देश फारस
अक्षौहिणी–बड़ी भारी सेना जिस में पैदल, घोड़े रथ और हाथी की नियत संख्या होती थी।
प्रहार–चोट
कर्मकाण्ड–यज्ञ आदि काम

पृ० ३१२ ३१३

जाज्वल्यमान–तेजवाला, कान्ति वाली
ज्योति–प्रकाश, परमात्मा
आविर्भाव–उत्पत्ति, प्रकट होना
राजसूय यज्ञ–वह यज्ञ जिसके करने का अधिकार केवल उसी राजा को होता था जो सम्राट् (राजाओं का राजा) पद का अधिकारी हो।
अर्घ्य–पूजा
तिल का ताड़ करना–किसी छोटी बात को बहुत बड़ा देना
मृतप्राय–लगभग मरा हुआ

पृ० ३१४, ३१५

केशी–एक राक्षस
तामसिक–अँधेरे वाला
विह्वल–व्याकुल, घबराया हुआ
आवेश–प्रवेश
परमहंस–परमज्ञानी
सुवर्ण–स्वर्ण, सोना
इंजील–इसाइयों की धर्म पुस्तक

पृ० ३१६, ३१७

सुपर्ण–साँप
सत्राजित–एक यादव था। इसने सूर्य की तपस्या कर स्यमन्तक मणि प्राप्त की थी। एक दिन उसका भाई प्रसेन मणि लेकर शिकार को गया वहाँ शेर ने प्रसेन को मार कर मणि छीन ली। शेर को मारकर वह मणि जाम्बवन्त लेगया। मणि खो जाने और भाई के मारे जाने पर सत्राजित ने यह दोष भी कृष्ण पर लगाया। पीछे भी कृष्ण ने वह मणि ढूँढ कर ला दी, तब सत्राजित बहुत लज्जित हुआ और उसने श्रीकृष्ण को अपनी कन्या सत्यभामा ब्याह दी। सत्यभामा से शतधन्वा, कृतवर्मा और अक्रूर भी विवाह करना चाहते थे। जब उन्हें यह पता लगा तो शतधन्वा ने सत्राजित को मार मणि छीन ली। इस पर बलराम और कृष्ण शतधन्वा से

लड़ने गये,तो शतधन्वा मणि अक्रूर को दे स्वयं भाग गया, कृष्ण ने उसका पीछा कर उसे मार दिया पर उसके पास मणि न मिली। कृष्ण ने आकर बलराम से कहा, पर बलराम ने समझा कि कृष्ण झूठ बोलता है, अतः बलराम द्वारका छोड़ गये। पीछे कृष्ण ने अक्रूर से कहा कि तू केवल मणि दिखा दे हम रखेंगे नहीं। तब अक्रूर ने दिखा दी और कृष्ण पर से दोष हटा।

...ाण-पराक्रम

पृ० ३१८, ३१९

कुरुवृद्ध-कुरुकुल में वृद्ध

दाक्षिण्य-चतुरता

श्रुति-वेद

वीर्य-बल

कीर्ति-यश

श्री-शोभा

धृति-धैर्य

तुष्टि-संतोष

पुष्टि-दृढ़ता

अच्युत-कृष्ण

... कृष्णने काली ... मर्दन किया था।

नाथ कर-नकेल डालकर, बल पूर्वक वश में करके

लाञ्छन-कलंक, दोष

अनन्य-जिसके समान दूसरा न हो

पृ० ३२०, ३२१

अधिकृत-अधिकारमें आया हुआ

संसर्गदोष-बुरी संगत के दोष से

अधीश्वर-राजा

पृ० ३२२, ३२३

तेजोऽग्नि-तेज रूपी आग

कपट द्यूत-छल से जुआ खेलना

विश्वविजयी-संसारको जीतनेवाला

दूषित-खराब

रुधिर-खून

उद्दण्ड कुटुम्ब का नाश कराया-कहा जाता है कि महाभारत के अन्तमें यादव शराब पीकर बहुत उद्दंड होगए। उन्होंने ऋषियों से मखौल की,इस पर ऋषियों ने उन्हें शाप दिया। कृष्ण ने शाप को शांत न कराया, अपितु उन उद्दण्ड व्यक्तियों के नाश में सहयोग दिया।

दौर्बल्य-दुर्बलता

पृ० ३२४, ३२५

सरलातिसरल-अत्यन्त सरल

कर्ममार्ग-'बिना फल की इच्छा कर्म करते जाना' यह ...

नर का नारायण का सन्देश-मनुष्य को भगवान का संदेश
पृ० २३० २३१
अभ्युदय-बढ़ती
सृजता हूँ-पैदा करता हूँ

कमललोचन लोचन— कमल पंखुड़ियों के समान आं
दुरित दुःस्वप्न-पाप
दुःस्वप्नों से छुड़ाने वाले
भव भयहारी-भव के भ
दूर करने वाले।

संक्षेप

जब भारत आर्थिक दृष्टि से बहुत बसत था, उस
बड़ राज्य समृद्धिशाली नगर तथा अनेक वीर और प
योद्धा वर्तमान थे परन्तु कहीं ऐक्य का नाम नहीं था,
जगह अनाचार, अधर्म और अत्याचार का राज्य
परमात्मा पर स विश्वास उठा जा रहा था, ऐसे समय भ
कृष्ण का अवतार हुआ। कृष्ण के जीवन को कइयों ने
करने का प्रयत्न किया है, कइयों ने उनके जीवन पर
दोष लगाये हैं, परन्तु हम देखते हैं कि राजसूय य
जब शिशुपाल उनकी निन्दा कर रहा था, तब भी उसने
चरित्र पर दोष नहीं लगाया। इसके बाद हम देखते हैं
जब भगवान ने मृतप्राय परीक्षित को जिलाया, तब उ
यही कहा कि यदि मैंने कभी झूठ न बोला हो
पाप न किया हो तो यह बालक जीवित होजाय। तब
तेज की शक्ति से वह जीवित हो गया। भगवान कृष्ण
संपूर्ण जीवन ही आश्चर्यमय है। यह भागवत
महाभारत से पता लगता है। भागवत में वर्णित कृष्ण
अन्त तक पवित्रता के भाव से भरा हुआ है। परन्तु कवि

की शोभ नहीं।

कृष्ण के चरित्र जैसा दूसरा चरित्र मिलना कठिन है। कृष्ण क्या नहीं थे, यह कहना कठिन है। कृष्ण राजनीतिज्ञ थे, शुक्राचार्य उन्हें अद्वितीय राजनीतिज्ञ मानता है। अद्भुत वीर थे, अद्वितीय धनुर्धर भीष्म भी उनकी प्रशंसा करते थे। इतने पर भी बड़े नम्र थे। राजसूययज्ञ में उन्होंने सब के पैर धोने का काम लिया। सारांश यह कि दान, चतुरता वेदज्ञता, बल, प्रशंसा, बुद्धि, शोभा, धैर्य, सन्तोष, दृढ़ता, सब गुण कृष्ण में विद्यमान थे। संगीत और कविता में ये अद्वितीय थे। उनको अंत तक नटवर नाम से पुकारा जाता है। गीता उनकी कविता का सर्वोत्तम नमूना है। उन्होंने बचपन वृन्दावन की आनन्दमयी भूमि में नागों को नाथ कर, पहाड़ों को हटाकर बिताया। यौवन में प्रवेश करते ही कंस को मारकर उग्रसेन को राजा बनाया। समुद्र तट पर द्वारिका बसायी। भारत से अनार्यों का नाश करने के लिए उन्होंने प्राग्ज्योतिष के राजा नरक, दक्षिण देश के बाण और मायावी शम्बर आदि अत्याचारियों को नीचा दिखाया, या उनका वध किया। पर उस समय अनार्यों से अधिक अत्याचारी आर्य राजाओं से डर था। इनमें से जरासंध उस समय बड़ा प्रभावशाली था। उसका दाहिना हाथ शिशुपाल था, जो कि स्वयं कृष्ण की बुआ का [illegible] है। उसके प्रयत्न से सब [illegible] जरासंध [illegible] मानने लगे थे। ऐसी अवस्था में

को राजसूययज्ञ करने का आदेश किया। उस समय कृष्ण ने कौशल से जरासंध का विनाश कराया, उसी प्रकार शिशुपाल स्वयं उनकी क्रोधाग्नि में जल मरा। इसके बाद कौरवों का अत्याचार बढ़ते देख कृष्ण ने उनका वध कराया। उसी प्रकार उन्होंने अपने बड़े कुटुंब (यादव वंश) का भी नाश कराया।

कहा जाता है कि कृष्ण ने महाभारत करवा कर भारत के पौरुष का नाश करवा दिया। पर यह सत्य नहीं। कृष्ण ने तो केवल दूषित रुधिर की तरह अत्याचारियों का नाश किया था। महाभारत के बाद भी क्षत्रिय बचे रहे, परन्तु उनमें एकता की कमी थी, अतएव भारत फिर उन्नत न हो सका। कृष्ण ने धर्मराज्य स्थापित कर सरल धर्म मार्ग बता दिया, परन्तु यदि उससे लाभ नहीं उठाया गया तो उसमें देश का दोष है, कृष्ण का नहीं। श्री कृष्ण ने धर्म का जो मार्ग बताया वह उनके उपदेश गीता में वर्णित है। युद्ध के लिए तैयार अट्ठारह अक्षौहिणियों को देखकर किंकर्त्तव्य विमूढ़ अर्जुन को युद्धक्षेत्र में गीता का यह उपदेश दिया गया था। अर्जुन की तरह ही अन्य मनुष्य भी कई अवसरों पर अपना कर्त्तव्य निश्चित नहीं कर सकता, उस समय गीता उसका उत्तर देती है। गीता का ज्ञान अनंत है, कई विद्वानों ने गीता की टीका की है। गीता का सार है—जीव अनित्य है, आत्मा कभी नहीं मरती, अतः अमर है। माया के कारण मनुष्य, झूठे संसार को सच मान बैठा है। यह माया कर्म-जाल से पैदा होती है। मनुष्य जो कर्म करता है उसका फल होता है। उन फलों को भोगता हुआ वह दुख-सुख

अनुभव कर इस संसार में चक्कर काटता फिरता है । यदि माया छूट जाय तो मनुष्य को छुटकारा मिल जाय ।

माया कर्मों से ही पैदा होती है, और छूटती भी है कर्मों से ही—पर निष्काम कर्मों से । यही गीता का उपदेश है । काम करो पर फल की इच्छा से नहीं । जो कर्म फल की इच्छा से न किये जायँगे, उन कर्मों का कुछ फल न होगा, अत माया से छुटकारा और ऐसे ही दु:ख सुख से छुटकारा मिल जायगा, माया के नाश के लिए भक्ति और ज्ञान दो और मार्ग भी हैं । गीता में उनकी विवेचना की है । पर अन्त में कर्म के ही मार्गको अच्छा माना है । इसके अतिरिक्त गीता सब मनुष्यों को समान समझती है । स्थान स्थान पर उसमें समता का उपदेश है । जैसे—"कोई बड़ा दुराचारी भी यदि मेरी अनन्य रूप से सेवा करे तो उसे साधु मानना चाहिए ।" आज संसार गीता के द्वारा अपने नये जीवन को जान रहा है । यूरोप और अमेरिका सब ओर इस अमूल्य रत्न का प्रकाश फैल रहा है ।

३८
भरत

(अनुवादक—श्री भगवान दास हालना और बदरीनाथ शर्मा)

पृ ३३२, ३३३

स्याज्यपुत्र—वह पुत्र जिसको छोड़ गया हो, जिसको अधिकारों से वंचित [illegible]गया हो ।

अन्त्येष्टि क्रिया—अन्तिम संस्कार

वितण्डावाद—व्यर्थ का झगड़ा, या कहा-सुनी

आर्त्तनाद करना—पीड़ामें निकलने वाली [illegible]

निरन्तर-पाम प, स्त्रीको
लाञ्छित-जिस पर दोष लगाया गया हो बदनाम
पृ ३३४ ३३५
समृद्धियुत-समृद्धि से युत, बढ़ती धारा
विचलित चंचल।
परम्परागत-परम्परामे आयाहुआ जैसे पहले कन्ने आय हैं वैसा
धार्मिकाग्रगण्य-धार्मिका म श्रेष्ठ
मार्जनीय-क्षमा के योग्य
विकार-बिगड़ना, रूपरंग आदि बदलना।
अमार्जनीय-जो क्षमा के योग्य न हो
अश्रुरुद्ध-आँसुओं से रुके हुए
राजीवलोचन-कमल के समान आँखों वाला
परोक्ष-गुप्त रूप से
अनुमोदन-समर्थन
आशंका-डर
रुद्धकण्ठ-रुके हुए गल से
पृ ३३६, ३३७
दैव-किस्मत भाग्य
सन्देहभाजन-सदेह का पात्र जिस पर सब सन्देह करें
निष्पाप-जिसने पाप न किया हो
प्राणकंठगत होना-प्राण निकलने पर होना, अत्यन्त तंग होना

चिर-वाण-शद्र का बाण
अभिन्न-अत्यंत कठिन, जो हम न जाये।
अधित्यका-ऊँचा पहाड़ी मैदान
अधिष्ठित-स्थित, ठहरा हुआ
दम्पति-पति पत्नी
मर्मान्तिक-मन में चुभने वाली मर्मभेदी
कृश-दुबला
विवर्ण-कांतिहीन घबराहुआ
विपत्तिपूर्ण-दुख से भरा
नर्तकियाँ-नाचने वाली
प्रमोद-प्रसन्नता
सखा-मित्र
व्यग्रचित्त-डरे (घबराये हुए)
श्रीहीन-कांति (सुन्दरता)से हीं रंग उतरा हुआ
विषम-भयकर
पूर्वाभास-पहले के संकेत (आ
पृ ३३८, ३३९
दुश्चिन्ता-बुरी चिन्ता
चिरश्यामल-सदा हरी
चिरश्रुत-हमेशा सुनाई देने वाल
तुमुल शब्द-कोलाहल, लोगों क कोलाहल या शोर
कण्ठस्वर-गले की आवाज
वितरण कर-बाँट कर

अंगद-बाजूबंद, बाजू पर पहनने का एक गहना
स्मृति-आदि
स्वर्णच्छवि-सुवर्ण के रंग के
अभिवादन-प्रणाम
कठिन-चाव से भरे हुए
या विधवा-नई विधवा हुई
तेघातिनी-पति को मारने वाली
वी-आगे होनेवाले
४०, ३४१
क्लिष्टकर्मा-कठिन से कठिन काम जिसके लिए सहज हैं
प्राण-धर्म ही हैं प्राण जिसके धार्मिक
वास-विश्वास करने योग्य
ात्सल-धर्म को प्यार करनेवाले
र-व्याकुल
ाङ्गी-दुबले शरीर वाली
वेद्ध होकर-हृदय में चोट खाकर
२, ३४३
ा-माँ
धर्मभीरु-जिसे धर्म का भय हो, जो अधर्म करने में डरता हो।
ताड़ना-डाँट, फटकार, भर्त्सना
नयों में जल

शोकविमूढ-शोक से जिसका होश मारा गया है
साक्षात्कार-भेंट मुलाकात
इंगुदी-मालकंगनी का पेड़
तृणशय्या-तिनकों की सेज
संज्ञाशून्य-बेहोश, चेतनारहित
आकाशस्पर्शी-आकाश को छूनेवाले
राजप्रासाद-राजमहल
चर्वित-पाते हुए
नृत्यशील-नाचनेवाली
विहार भूमि-खेलने की जगह
गुञ्जरित-गूँजता हुआ
पृ ३४४, ३४५
जटावल्कल-जटा और वृक्ष की छाल के वस्त्र जो तपस्वी पहनते हैं
सर्वज्ञ-सब कुछ जानने वाले
निर्देशानुसार-कहने के अनुसार
निरादर-अपमान
क्षीणदेह-दुबले शरीर वाली
सौम्य-शांत
अग्रज-बड़े भाई
कर्णिकार पुष्प-कनेर का फूल
शीर्णाङ्गी-मुरझाये हुए शरीरवाली
प्रज्ञामानिनी-अपनी बुद्धि का अभिमान करने वाली
राजकामुका-राज की इच्छा करने वाली
अर्क-आक

पतत्री–खग
गात्र–अंग
शैलशिखर–पहाड़ की चोटी
मन्दाकिनी–गंगा
आभा–कांति
विलुप्त–छुपे
पर्वत–पहाड़
सुहृद्विरह–मित्रों की जुदाई
पृष्ठ ३४६ ३४७
भग्न–टूटे हुए, ढँगार
निकेतन–जगह, घर
दीर्घपुष्पित–बहुत फूला हुआ
कोविदारयुक्त–कचनार से युक्त
अभिषेक–तिलक, राज्य मिलना
मनोरथ–मन की इच्छा
अनर्थ का मूल–बुराई का जड़
स्नेहार्द्र–प्रेम भरे
धर्मशील–धर्मात्मा
जाग्रत–जीती जागती
देवोपम–देवताओं के समान
स्वर्णछत्र–सोने का छत्र
राजश्री–राजलक्ष्मी
अगर–अगरु एक पेड़ जिसकी
लकड़ी चन्दन की तरह सुग
धित होती है

मार्जित–पोता जाता था, लप
जाता था
अङ्गराग–चन्दन आदि का
धूलिधूसरित–धूल से भरा हु
विश्व–संसार
आराधना–पूजा
लोकगर्हित–लोगों द्वारा निन्दि
लोगों से धिक्कारे गये
नृशंस–क्रूर, जालिम
पृष्ठ ३४८, ३४६
दासानुदास–नौकर का भी नौ
तर्कवितर्क–वाद विवाद
अनशनव्रत–भूखा रहने का व्र
पादुका–खड़ाऊँ
पदरज–पैर की धूलि
होम देंगे–स्वाहा कर देंगे
जटावल्कलधारी–जटा और वृक्ष
की छाल के कपड़े पहनने वा
फलमूलाहारी–फल और कंदमू
वाले
कषाय–गेरुआ
सचिववृन्द–मंत्रीगण
पृष्ठ ३५०
दुर्विनीत–उद्धत, अक्खड़

संक्षेप

रामायण के चरित्रों में सबसे अधिक उच्च पर सबसे

धिक निन्दा और सन्देह का पात्र भरत का चरित्र है। स्वयं
...रथ ही धर्म की दृष्टि से भरत को राम से भी ऊँचा
समझते थे, पर जब भरत की माता ने दो निष्ठुर वर माँगे,
जिसका भरत को आभास भी नहीं था, तब दशरथ
ने उसे अपनी अन्त्येष्टि क्रिया के भी अयोग्य करार दिया।
...था की मृत्यु के बाद जो दूत भरत को बुलाने गये वे भी
...न से कहते हैं कि आप जिनकी कुशल पूछते हैं वे सकुशल
... रामचन्द्र के वनवास के समय प्रजा कहती है—हम लोग
...आई के निकट पशुओं की तरह भरत के सामने खड़े हैं।
महाराज रामचन्द्र ने भी एक दो बार भरत पर सन्देह किया,
राजा दशरथ तो यहाँ तक सन्देह करते थे कि भरत की अनुपस्थिति
में ही वे रामचन्द्र को राज्य दे देना चाहते थे। लक्ष्मण तो बारबार
भरत को मारने पर उतारू रहते थे। परन्तु भरत लक्ष्मण को
धन्य समझते थे, क्योंकि वे रात दिन राम के साथ रहते थे।
कौशल्या ने भरत को कटु-वचन कहे, निषादराज गुह और सर्वज्ञ
महर्षि भरद्वाज ने भी रामचन्द्र को वन से लौटाने का प्रयत्न करने
के लिए जाते हुए भरत पर सन्देह किया था। इस तरह सारे
समाज का भरत पर जो सन्देह और निन्दा का विष बाण
गिरता था, उसका मूल कारण उनकी माता कैकेयी थी अतएव
भरत उसे माता के रूप में बड़ा भारी शत्रु कहा करते थे।

भरत जब ननिहाल से वापिस लौटे और उन्होंने श्री हीन
अयोध्यापुरी देखी और उन्हें वास्तविकता का पता लगा तो वे
कैकेयी को धिक्कारने लगे, कौशल्या ने भरत को ऐसे
... ...कटुवचन कहे, पर भरत ने अनेक शपथों

द्वारा कौशल्या के सन्देह को दूर किया। पिता की अन्त्येष्टि क्रिया कर भरत रामचन्द्र को वापिस लौटाने के लिए चल पड़े। रास्ते में भरद्वाज मुनि मिले, तब उनके सामने भी उन्होंने कैकेयी की निंदा की। दूर से ही भरत की सेना को देखकर लक्ष्मण ने यह सन्देह किया कि वे उनको मारने आ रहे हैं और वे भरत के वध के लिए तैयार होगये, पर भरत तो उन्हें वापिस लेने आ रहे थे। जब भरत रामचन्द्र जी के पास पहुँचे तब रामचन्द्र दुःख से दुर्बल हुए भरत को पहचान भी न सके। रामचन्द्र वापिस लौटने को तैयार न थे, भरत ने अनशनव्रत कर दिया। अन्त में रामचन्द्रजी की पादुका ले वापिस लौटे, और रामचन्द्र जी से कह दिया कि चौदह वर्ष तक वे उनकी पादुका सिंहासन पर रख राज्य करेंगे, पर यदि इतने समय तक वे न लौटे तो वे अपना जीवन होम देंगे। चौदह वर्ष तक इस त्यागी ने अयोध्या के बाहर नन्दिग्राम में तपस्वी जीवन बिताते हुए राज्य किया और अवधि के बीतने पर रामचन्द्र को राज्य सौंप के निश्चिन्त हुए। रामायण में यदि कोई चरित्र ठीक आदर्श समझ कर लिया जा सकता है तो वह भरत का है। सीता ने लक्ष्मण से कटुवचन कहे थे, रामचन्द्र ने बालिवध आदि निंदित कार्य किये, लक्ष्मण तो अक्खड़ थे ही, कौशल्या ने भी पति की निन्दा की थी, किन्तु भरत के चरित्र में एक भी दोष नहीं। वह भरत सचमुच धन्य है जो बिना यत्न से आए हुए राज्य को भी छोड़ देता है, और उसको गर्भ में धारण करने के कारण कैकेयी जैसी दुष्टा नारी भी धन्य हो गई।[1]

रक्षा-बन्धन

(लेखक—श्रीयुत विश्वम्भर नाथ कौशिक)

पृ० ३५३
चाँदनी कर रहे हैं—रुपया कमा रहे हैं।
अबोध—नादान
इठलाकर—मटक कर
पृ० ३५४, ३५५
अप्रतिभ—लज्जित, उदास
उद्यत—तैयार
अश्रुपूर्ण—आँसुओं भरी हुई
पृ० ३५७, ३५८
चिन्तासागर—चिन्ता का समुद्र, भारी चिन्ता
विरक्त—अप्रसन्न, अनमना
सूर्यास्त—सूर्य डूबना
लक्ष्मीरूपा—लक्ष्मी के समान
हृदयभेदी—हृदय को बेधने वाली
ज्ञानशून्य—बेहोश
काष्ठवत्—लकड़ी की तरह
पूर्णवयस्क—यौवन की पूरी अवस्था को पहुँची हुई, युवती, १६ बरस के लगभग उमर की
विसर्जन किए—छोड़े, बहाए
महोत्सव—बड़ा उत्सव त्यौहार

(संक्षेप)

घनश्याम छुटपन में ही अपनी विधवा माता और छोटी सी बहन को छोड़ कर धन कमाने दक्षिण की ओर चला गया। वहाँ वह धन कमाने में इतना व्यस्त रहा कि उसने घर बार की कुछ खोज खबर न ली। जब वह पर्याप्त धन कमा चुका, तब वह फिर वापिस लौटा और माँ का पता लगाने लगा। उसने उन्नाव जाकर माता को बहुत ढूँढा पर वहाँ केवल इतना ही पता लगा कि वे उन्नाव छोड़ गई हैं। कहाँ गई हैं, इसका कुछ पता नहीं। फिर वह लखनऊ में रहने लगा पर उसने उन्हें ढूँढने में कोई कसर न छोड़ी।

इधर उसकी माँ भी बड़ी चिन्ता में थी । छोटी बहन के राखी वाले दिन, अपनी उमर की सब लड़कियों को राखी बाँधते देख किसी के हाथ में राखी बाँधना चाहती थी, पर उसका भाई वहाँ कहाँ था। माँ ने उसे डाँट दिया, तब वह हाथ में लाल डोरा ले घर के दरवाजे पर खड़ी होगई, और वहाँ से किसी के हाथ में राखी बाँधने की सोचने लगी दरवाजे के पास से कई पुरुष आये पर सब आगे बढ़ गये किसी ने उससे राखी न बँधवाई। अबोध लड़की उदास हो भीतर जाने लगी इतने में घनश्याम वहाँ से गुजर रहा था लड़की को आँसू भरे देखते ही वह खड़ा हो उससे पूछने लगा बालिका ने कुछ न कह कर राखी उसके हाथ में बाँध दी राखी बाँधी जाने पर घनश्याम ने दो रुपये देने चाहे, पर बालिका ने कुछ पैसे लेने पर ही हठ किया। इतने में उसकी माँ ने भीतर से पुकारा वह चली गई।

इस घटना को बीते पाँच साल हो गए पर बीच बीच में घनश्याम को राखी बाँधने की याद आ जाती थी । घनश्याम अभी अविवाहित था, उसका दोस्त अमरनाथ उसके लिए लखनऊ में एक गरीब लड़की देख कर आया। दोनों दोस्त लड़की देखने गये। दोनों जब एक दलान पर बैठ गये और बिठाने वाली स्त्री दीया जला कर लाई तब उसने घनश्याम को देखा, तो पहचान गई और बेहोश हो गई। उसे चेतना में लाया गया माँ पुत्र का विचित्र मेल हुआ। घनश्याम ने देखा यह लड़की वही है जिसने पाँच साल पहले उसे राखी बाँधी थी। फिर राखी का त्यौहार आया। घनश्याम की बहन

सरस्वती ने बड़े चाव से राखी बाँधी। घनश्याम ने दो अशर्फियाँ दीं और मुस्कराकर पूछा क्या पैसे भी देने होंगे।

सरस्वती ने हँस कर कहा— 'नहीं भैया, ये अशर्फियाँ पैसों से अच्छी हैं, इन से बहुत से पैसे आवेंगे।"

४०

सुधा

(लेखक—श्री चंडीप्रसाद हृदयेश)

पृ० ३६९
नीरव-शांत
निशा-रात
निशाकर-चाँद
रजत किरण-चाँदी के रंग की किरणें
नीलाकाश-नीला आकाश
ऋतुराज-वसंत
दिगन्त-दिशाओं के अन्त तक
चतुर्दिक्-चारों दिशाएँ
कुसुमसुगंध-फूलों की सुगंध
निर्जन-एकान्त
गृहकोण-घर का कोना
पृ० ३७०, ३७१
पर्यन्त-तक
आनन्ददायिनी-आनन्द देने वाली
अधिष्ठात्री-नियन्त्रण करने वाली पूज्य
ज्योत्स्ना-चाँदनी
देदीप्यमान-उज्ज्वल
अनिंद्य-बहुत उत्तम, जिसकी निन्दा न की जा सके
सुषमामयी-अत्यंत सुन्दरता से युक्त
कुंकुम-केसर, रोली
ऊर्ध्व आबद्ध-ऊपर बँधा हुई
दुर्दमनीय-प्रचंड जिसका दमन करना कठिन हो
हृदय पटल-हृदय के पर्दे पर
पृ० ३७२, ३७३
जनराशि-आदमियों की भीड़
कलेवर-शरीर
आच्छादित-ढका हुआ।
पुण्यपीयूषवाहिनी-अमृत के समान सफेद जल बहानेवाली
जाह्नवी-गंगा
संगम-मेल
पुलकित-हर्ष से गद्गद

बहुविधि-बहुत प्रकार से
इतस्ततः इधर-उधर
परिभ्रमण घूमना
समक्ष सामने
हतभागिनी-बुरी किस्मत वाली
द्रव्य-वस्तु
नयनमार्जित-आँखों से धोयी हुई
वक्षस्थल-छाती
सुधावर्षण-अमृतवर्षा
क्षुत्पिपासा-भूख और प्यास
पृ०३७४ ३७५
[illegible]-शराब
निर्जीव-बिना जान का
श्री गोविन्द-भगवान् कृष्ण
पादपद्म-चरण कमल
आनन्दलहरी-आनन्द की तरंग
निविड़-घोर-गहरी
नीलसलिला-नील जल वाली
गृह-वासिनी-घर में रहने वाली
तप्त-गरम
तमालवन-तमाल वृक्षों का जंगल
पर्णकुटी-पत्तों की कुटिया
कर्मयोग-करने योग्य (कर्तव्य) कामों को बिना फल की इच्छा से करना।
ज्ञानयोग-ज्ञान की प्राप्ति द्वारा मोक्ष प्राप्त करना
नयन-आँख

पुत्रशोकातुरा पुत्र शोक में व्याकुल
पथ ताकना
निहारना-देखना
पतिगतप्राणा-पति में ही जिस स्त्री के प्राण रहते हों
कामना-इच्छा
ध्यानस्तिमितलोचन-ध्यान के कारण स्थिर हैं आँखें जिसकी
पृ० ३७६, ३७७
नयनाश्रुओं-आँख के आँसुओं
उन्माद-पागलपन
श्रान्ति-थकावट
अन्तर्धान-गायब, आँखों से ओझल
पदयुगल-दोनों पैर
पदतल-पैर के तल में
ज्वरप्रकोप-ज्वर की तेजी
उत्तरोत्तर-लगातार बराबर
बाध्य-विवश
अहर्निशि-दिन रात
आहारनिद्रा-खाना और सोना
पृ० ३७८, ३७९
श्री माधव-श्री भगवान्
चरणारविन्द-चरण कमल
रजनियाँ-रात
शोकयातना-शोक की पीड़ा
मरणोपरान्त-मरने के पीछे
निःस्वर-चुप
रोरुद्यमाना-रोती हुई

क्षुधाक्लिष्ट–भूख से पीड़ित
निर्जीव-प्राय–बेजान सी
पंजरमुक्त-पिंजरे से छूटा हुआ

पृ० ३८०

दारुण–[illegible], कठिन
आकृष्ट हो जाता है–खिंच जाता है, लग जाता है

पार्थिव–पृथिवी का, दुनियावी
हेमाङ्ग–सोने के रंग का शरीर
वैराग्योत्पन्नकारी–वैराग्य उत्पन्न करने वाला
अविनश्वर–नष्ट न होने वाला, स्थायी
शेष–समाप्त

(संक्षेप)

शशिशेखर अपनी पहली पत्नी शैलबाला से बहुत प्रेम करते थे। शैलबाला की मृत्यु के बहुत दिन बाद तक वे पुनर्विवाह को तैयार न हुए। परन्तु माता ने हठकर सुधा नामक नवयुवती से उनका पुनर्विवाह करा दिया। परन्तु शशिशेखर के हृदय में शैलबाला का प्रेम इतना प्रबल था, कि सुधा उनके हृदय में तिलमात्र भी स्थान न पा सकी। शैलबाला के तैल-चित्र के सामने खड़े होकर शशिशेखर सोचते कि उन्होंने पुनर्विवाह कर शैल के प्रति बड़ा भारी अपराध किया है, परन्तु समझते थे कि यह उनका दोष नहीं, अपितु माँ की जबरदस्ती थी। जिस समय वे इन विचारों में मग्न थे, उस समय सुधा वहाँ आई और पति के चरणकमलों की पूजा कर चली गई, पर शशिशेखर ऊपर शैल के तैलचित्र की ओर ही देखते रहे।

इस घटना को बीते कई दिन हो गए। शशिशेखर के हृदय की हलचल किसी तरह शांत न हुई। शैल की चिंता से उनकी देह दुर्बल होने लगी। अन्त में जब यह पीड़ा शांत न हुई तो एक रात वे चुपचाप प्रयाग की ओर निकल पड़े।

दिन तो नये दृश्यों ने उनके मन को आकर्षित कर रखा, पर यह शान्ति अधिक दिन तक न रह सकी।

इधर सुधा बिचारी पति के विरह में खाना पीना भी छोड़ बैठी थी, अत उसका सुन्दर शरीर बहुत दुर्बल हो गया। एक दिन उसे पता लगा कि शशिशेखर वृन्दावन में हैं, तब सुधा, उसकी सास, देवर और ननद सब उनको लेने वृन्दावन को चल पड़े।

किसी तरह शान्ति न पाकर शशिशेखर अच्युतानन्द गोस्वामी के शिष्य होकर सन्यासी हो गये। गोस्वामी ने उन्हें बहुत समझाया कि तुम्हें वापिस गृहस्थ में चले जाना चाहिये, तभी तुम शान्ति लाभ करोगे। पर शशिशेखर माने नहीं और उन्हें शान्ति न मिली, अपितु उन्माद हो गया। वे दिन रात स्वप्न देखते रहते। एक बार उन्होंने स्वप्न में देखा कि शैल उन्हें कह रही है कि तुम सुधा को अपनाकर सुखी से रहो। फिर उन्होंने देखा कि शैल गायब होगई और कोई उनके पैर अपने आँसुओं से धो रहा है, इस चिन्ता में उन्हें विषमज्वर हो गया। स्वामी अच्युतानन्द ने उनके घरवालों को बुला लिया। सुधा ने रात दिन जाग कर उनकी सेवा की पर एक दिन शशिशेखर का प्राणपखेरु उड़ गया। तब उनकी माता वहीं वृन्दावन में रहकर श्रीकृष्ण की सेवा में दिनरात चित्त अपने पुत्र वियोग को भुलाने का प्रयत्न करने लगी, और सुधा वहीं रह कर अपने जीवन की समाप्ति की प्रतीक्षा करती रही।

मध्य एशिया के खँडहरों की खुदाई का फल

(लेखक—श्रीयुत पुराणपाठी)

पृ० ३११ से ३१९

उर्जितावस्था—शक्तिशाली अवस्था बढ़ती की हालत

आवागमन—आने जाने का

कालान्तर—कुछ काल के बाद

स्तूप—वह मीनार जिसके नीचे बुद्ध या किसी बौद्ध महात्मा की हड्डी, दाँत या ऐसा ही कोई अन्य स्मृतिचिह्न सुरक्षित हो

जमींदोज़—जिस चीज़ को गिरा कर ज़मीन के बराबर कर दिया गया हो

भूतलवर्तिनी—जमीन के भीतर बनी हुई

पुरातत्व—पुराने समय से संबन्ध रखने वाली विद्या

भग्नावशेष—बचे हुए खँडहर

रत्नराशि—पुस्तक रूपी रत्नों का ढेर

पुरातत्व विशारद—पुरातत्व को जानने वाला

यूथ—समूह

अप्राप्य—जो न मिल सके

संक्षेप

जिस समय बौद्ध धर्म अपनी उन्नत अवस्था में था उस समय यूनान, रूम, मिश्र आदि की तो बात ही नहीं, मध्य एशिया की राह उसके आचार्य चीन तक धर्म का प्रचार करने जाते थे। अफगानिस्थान उस समय भारतीय साम्राज्य का एक अंश ही था। चीन और भारत के बीच आवागमन का मार्ग उस प्रान्त से था जिसे इस समय पूर्वी तुर्किस्तान कहते हैं। चीनियों की इतिहास प्रसिद्ध दीवार का कुछ अंश इस पूर्वी तु[illegible] [illegible]या। यह प्रान्त विहारों और मठों से सर्वत्र

भरा हुआ था। इन मठों में बड़े बड़े बौद्ध विद्वान रहते थे, चीन और भारत के यात्री इन्हीं मठों में ठहरते थे। चीनी परिव्राजक ह्वेनसांग और इत्सिंग आदि इसी मार्ग से भारत में आए थे।

कुछ काल बाद मुसल्मानों ने इन सब मठों को तोड़ दिया। बौद्धों के लिए प्राण बचाना कठिन होगया। तब बौद्धों ने अपने ग्रंथ जमीन की कोठरियों के बीच बंद कर छिपा दिये। उन में से कुछ ग्रंथ तो नष्ट होगए। बाकी आज कल खोज-खोजकर निकाले जा रहे हैं। इसका श्रेय अधिकतर यूरोप निवासियों को है। वे अनेक कष्ट उठाकर पर्याप्त पैसा खर्च कर उन कागज पत्रों को जमीन से निकाल रहे हैं और उन ग्रंथों को टीका, टिप्पणी और पूरे विवरण सहित प्रकाशित कर रहे हैं। १८०६ ईसवी में जर्मन विद्वान डाक्टर रेंगल चीनी तुर्किस्तान के खँडहरों को देखने गए। उसके बाद रूस और फिनलैंड के पुरातत्व विशारद वहाँ पहुँचे। सन् १८९९ में रूसी विद्वान रैडलफ के प्रस्ताव पर पुरातत्व विशारदों की एक सभा में मध्यएशिया के खँडहरों की बाकायदा जाँच करने का प्रस्ताव पास हुआ। उसके बाद यूरुप के कुछ लोग वहाँ पहुँचे।

१८९१ में वृटिश गवर्नमेंट के दूत कप्तान बावर को भोज पत्र पर लिखा ग्रंथ प्राप्त हुआ। जो अनुमानतः ईसा की चौथी शताब्दी में लिखा गया है। उसकी रचना उस से भी पहले हुई होगी। इससे पुरानी शायद एक दो ही हस्तलिखित पुस्तकें अब तक मिली हों। डा० बावर के बाद कलकत्ता यूनिवर्सिटी के अध्यापक आरल स्टीन को वृटिश गवर्नमेंट ने इस काम के लिए

नियुक्त किया। वहाँ उन्होंने खुतान की जाँच कर प्राचीन खुतान नामक एक पुस्तक लिखी। इसके बाद डा० स्टीन दो तीन बार वहाँ गये। तब उन्हें एक बंद कोठरी में बहुत सी पुस्तकें मिलीं, और बहुत सी पुस्तकें वहाँ से एम०पोलियो नामक फ्रेंच विद्वान ले गए। डा० स्टीन ने इस चढाई का वर्णन सेरेंडिया नामक पुस्तक में किया है। १९०६ में फ्रांस सरकार से धन की सहायता पा कर एम० पोलियो की अध्यक्षता में एक दल मास्को और ताशकंद होते हुए पामीर के उत्तर काश्गार तक पहुँच गया। वहाँ तुनहॉंग नामक स्थान में एक चीनी बौद्ध बैंगताउ के आदेशानुसार पोलियो ने एक ऐसी गुफा खोली जिसमें ईसवी सन् की दसवीं शताब्दी में मुसलमानों से बचाने के लिए बौद्धों ने अपना सारा साहित्य बंद कर दिया था। इस गुफा के भीतर १६ हजार पुस्तकें भिन्न भिन्न भाषाओं और भिन्न भिन्न लिपियों में मिलीं। उनमें से कितनी ही ब्राह्मी लिपि में हैं। इस से स्पष्ट है कि प्राचीन भारत ने मध्यएशिया की राह चीन, खोतान आदि को विद्यादान का कितना काम किया था।

४१

हमीर

लेखक—कुँवर नारायण सिंह

पृ० ३९९ से ३९८
बान-आदत
भूमि भारत-भारतवर्ष की भूमि सदा से अच्छे गुणों की खान है, अपने धर्म की रक्षा तथा धर्म में लगे रहना ही यहाँ के लोगों की आदत है। दीन दुखियों पर दया करना यहाँ

की शान है। इसी कारण आज तक सब जगह भारत का मान है।

शरणागत वत्सल–शरण में आए हुओं की रक्षा करने वाला

कृपाण–तलवार

जो काका कन्ह——जो काम काका कान्ह ने कन्नौज में किया था वही रणधीर ने छान के दुर्ग में किया। कहते हैं कि जब पृथ्वीराज संयोगिता का हरण कर ले जा रहे थे, तब कान्ह ने प्रतिज्ञा की थी जब तक महाराज पृथ्वीराज दिल्ली न पहुँच जावेंगे तब तक वह कन्नौज की फौज को रोके रक्खेगा और अंत में वह अपनी प्रतिज्ञा पूरी करके रहा।

अकृतज्ञ–किये को न मानने वाला, कृतघ्न

अवाक्–विस्मित, हैरान, चुप

जौहर–युद्ध के समय में जब राजपूत निराश हो जाते थे, तब उनकी स्त्रियाँ चिता पर चढ़ जाती थीं और राजपूत जीवन का मोह छोड़ मरने के लिए केसरिया बाना पहन कर मैदान में निकल आते थे। इस को 'जौहर' कहते हैं।

सिंह गमन–सिंह सिंहनी के पास एक बार ही सम्भोग के लिए जाता है सत्पुरुषों का वचन एक बार ही कहा जाता है व दुबारा उसे नहीं बदलते, केला भी एक बार ही फलता है दुबारा उसे काट देना पड़ता है, एसे ही स्त्रियों का तेल और हमीर का हठ दूसरी बार नहीं चढ़ता। दूसरी बार नहीं बदले जाते। विवाह से दो या चार पाँच दिन पहले वर को वधू का नाम लेकर और वधू को वर का नाम लेकर हल्दी मिला तेल लगाया जाता है, इस रस्म के उपरान्त प्रायः विवाह सम्बन्ध नहीं टूटता।

(संक्षेप)

अलाउद्दीन बादशाह का मेहमाशाह नामक एक अपराधी दरबारी जिसे बादशाह ने प्राण दंड की आज्ञा दी थी, प्रसिद्ध गढ़ रणथम्भौर के अधिपति वीरवर हमीर राव की शरण में आया। शरणागतवत्सल हमीर ने उसे अपने दुर्ग में

र्घन दिया। इस पर बादशाह ने हमीर को कहला भेजा कि या तो मैहमाशाह को मेरे पास भेज दो, नहीं तो तुम्हें उचित दण्ड दूंगा। हमीर ने उत्तर दिया कि जब तक मेरे हाथ में तलवार है तबतक चाहे सारे संसार की शक्तियाँ भी मिलकर लड़ें, तो भी मैं शरणागत को न छोड़ूँगा। यह सुन बादशाह ने एक बड़ी सेना ले रणथम्भोर को घेर लिया। लगभग दस मील तक फौज की छावनी थी। बादशाह ने समझा था कि इतनी बड़ी फौज देख हमीर डर जायगा, पर वहाँ तो मरने से पहले नाच-रंग होरहा था। इतने में मैहमाशाह के भाई मीरगाबरू ने जो बादशाह की सेना में था, एक चोखा तीर हम्मीर के किले में नाचने वाली वेश्या की छाती में मारा जिससे वह धड़ाम से गिर पड़ी। इस पर मैहमाशाह ने एक ऐसा तीर चलाया जिससे बादशाह की टोपी उड़ गई। दूसरे दिन छान के दुर्ग में राजपूतों और मुसलमानों में बड़ा भयंकर-युद्ध शुरू हुआ। हमीर के चाचा रणधीर ने वहाँ बड़ा पराक्रम दिखाया। पर राजपूत जीत न सके। छान के दुर्ग को विजय कर बादशाह की फौज किले की ओर बढ़ी। परन्तु किला विजय करने में अलाउद्दीन का एक भी दाँव न चला। अन्त में विश्वासघाती दुष्ट सुरजन नामक हमीर का दीवान राज्य के लोभ में आकर बादशाह से आ मिला। दुष्ट सुरजन ने हमीरसे कहा कि किले की भोज्य सामग्री खतम होगई है। यह सुन भूखों मरने के बजाय राजपूतों ने जौहर करने की ठानी। मैहमाशाह ने हमीर को बहुत समझाया कि मुझ बादशाह के पास जाने दीजिए पर हमीर [illegible] को छोड़ नहीं सकता था। रानी से विदा हो

सब स्त्रियों को जौहर का उपदेश दे राजपूत तलवार हाथ में लेकर निकल पड़े। उस समय राजपूतों की भयानक वीरता से मुसलमान भाग खड़े हुए। हमीर मुसलमानों के जीते हुए निशानों को सेना को आगे किये हुए लौटे। इसे देखकर किले के राजपूतों को भ्रम हुआ कि मुसलमान आ रहे हैं। यह देख अगणित लावण्यमयी ललनायें चिता में जल गईं। इस करुणाजनक दृश्य को देख कर हमीर ने तलवार से अपना मस्तक काट दिया। सुरजन ने यह खबर बादशाह को दी। इसके सुनते ही वह लौट आया। बाकी राजपूतों ने और मेहमाशाह ने वीरता से मुकाबला करते करते अपने प्राण त्यागे। अन्त में मनुष्य रहित दुर्ग पर बादशाह ने अपना अधिकार जमाया। इस तरह हमीर अपनी शरणागत वत्सलता से अपना नाम अमर कर गये।

४०

हिन्दी-साहित्य और मुसलमान कवि

—यह लेख सरस्वती के भूतपूर्व संपादक श्रीयुत पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का है। पता नहीं गद्य-वाटिका के संपादक ने इसे श्री हरिवल्लभ जोशी का किस प्रकार लिख दिया है।

पृ० ३९९
संघर्षण-प्रतिद्वंद्विता, स्पर्धा विरोध
पृ० ४०० से ४०१
व्यष्टि-भिन्न भिन्न पदार्थ या व्यक्ति
समष्टि-भिन्न भिन्न पदार्थों या व्यक्तियों का समूह
जातिगत-[illegible] जाति का [illegible] जाति से
कृष्णकाय-काले शरीर के
आदिम-पहले के
वशीभूत-वश में करके
वृहत-बड़े, विस्तृत
अवलंबन किया-सहारा लिया

विश्वमैत्री–संसार भर से मित्रता
त्याग के ग्रहण करना–
भगवान के प्रेम में भगवान के
पुत्र के नाते सभी मनुष्यों को
भाई समझना।
पृ० ४०७ से ४०३
शासनयुग–राज्य का समय
साधक–साधना करने वाला,
तपस्वी
खलीफा–बगदाद का बादशाह
तुर्क–तुर्किस्तान का रहने
वाला। साधारणतया मुसल
मान
ब्रह्मा–जिसमे हिन्दू इस मनुष्य
सृष्टि की उत्पत्ति मानते हैं।
आदम–ईसाई और अरबी
लेखकों के अनुसार मनुष्यों
का सबसे पहला प्रजापति
जिससे आदमी पैदा हुआ।
कतेबा–किताबें, कुरान
कोई हिन्दू–कोई हिन्दू कहाता
है, और कोई मुसलमान, पर
सब एक जमीन पर रहते हैं।
वही महादेव है और वही
मुहम्मद है, वही ब्रह्मा है और
वही आदम कहा जाता है।
वे वेद पढते हैं और वे कुरान
पढ़ते हैं। वे पांडे कहाते हैं
और वे मौलाना, इस तरह
अलग अलग नाम रखे हुए हैं
पर हैं सब एक ही मिट्टी के
बरतन। अर्थात् जिस तरह
एक ही मिट्टी के बरतनों में से
कोई घड़ा कहाता है और कोई
चाटी वैसे ही सब मनुष्य
एक ही परमात्मा के पुत्र हैं
केवल नाम का भेद है।
मूढता–मूर्खता
धर्मान्धता–धर्म के पीछे अन्धा
होकर चलना
विरोधाग्नि–विरोध (लड़ाई) की
आग
बौराना–पागल हो गया है
पतियाना–विश्वास करता है
मुए–मरे
मरम–मर्म रहस्य भेद
मेहर–दया
घर–मन
साधो–हे साधु पुरुषो देखो
संसार पागल होगया है। यदि
सच कहा जाय तो मारने को
दौड़ता है और झूठे का सब
विश्वास कर लेते हैं। हिन्दू
कहते हैं हमारा राम है
और मुसलमान रहीम का
अपना कहते हैं। दोनों ही
आपस में लड़-लड़ कर मर
गये हैं, पर किसी ने भी भेद

(रहस्य) नहीं समझा। हिन्दुओं ने दया और मुसलमानों ने मेहर (दया) अपने मन में से निकाल दी है। वे हलाल मारते हैं और व झटका मारते हैं और दोनों ही घरों में आग लगी है, दोनों ही पाप कर रहे हैं। इस तरह हम पर दोनों ही हँसते जाते हैं, और अपने आपको समझदार कहते हैं। कबीर कहते हैं हे साधुओ, इन में कौन पागल है, अर्थात् दोनों ही पागल हैं।

पृ० ४०४ ४०५

कल्याण कामना—कल्याण की इच्छा

आत्मोन्नति–अपनी उन्नति

कार–अर इन दोनों (हिन्दुओं और मुसलमानों) ने ठीक रास्ता नहीं पाया। हिन्दुओं का हिन्दूपना और मुसलमानों का मुस्लिमपना देख लिया। कबीर दास कहते हैं, अरे साधु तुम कौन से रास्ते से होकर जाओगे।

हिन्दू कहूँ–हिन्दू कहो तो वह भी नहीं हूँ और मुसलमान भी मैं नहीं हूँ।

भरम–संदेह

साहेब–परमात्मा

दीदार–दर्शन

लखे–देखे

समदृष्टि–मुझे सतगुरु ने सबको समान देखने वाला बना दिया है, और मेरे संदेह और पाप मिटा दिये हैं। अब मैं जहाँ देखता हूँ, वहाँ एक ही परमात्मा का दर्शन पाता हूँ। मनुष्य को समदृष्टि तभी समझना चाहिये जब उसमें शीतलता और बराबरी का भाव हो और जब वह सब जीवों की आत्मा को एक सा देखता हो।

प्रयास–कोशिश

सम्मिलन–मेल

अग्रसर हुए–आगे बढ़े

सूचक–पता देने वाले

तुरकी–तुरका, अरबी, हिन्दी आदि जितनी भी भाषाएँ हैं, उनमें से जिसमें भी प्रेम का रास्ता दिखाया गया हो सभी उसी की प्रशंसा करते हैं।

आभास-पता

अविचल-स्थिर

ईश्वरप्रदत्त-ईश्वरका दिया हुआ

उपराजा-पैदा हुआ

दीन-मत, मज़हब

तिन्ह-उसकी सन्तान में भाँति भाँति के कुलीन पैदा हुए, और अपने अपने मत (विश्वास) के कारण हिन्दू और मुसलमान दोनों हुए।

जमतन-जैसे शरीर मे वैस ही धरती में, जैसे मन मे, वैसे ही आकाश म सब जगह वह परम पुरुष परमात्मा एेम फैला हुआ है, जैसे फूल में गंध-अर्थात् आँखों से न दिखाई देते हुए भी ईश्वर सर्वव्यापक है।

पृ० ४०६, ४०७

तनदरपन-शरीर रूपी शीशे को सजाकर जो प्रभु का दर्शन करना चाहते हैं उनको अपना मन पवित्र कर लेना चाहिये। महम्मद ने पवित्र हवन—बुराइयों का हवन किया, अतएव वह प्रभुदर्शन पा सका।

एकत्वबाद्-एक ईश्वर ही सब कुछ है।

एक कहत दुई-कुछ लोग यह कहते हैं कि जीव और परमात्मा दो चीजें हैं, पर दो से राज नहीं चल सकता। इसी कारण बीच में से अपना आपा खोकर—अपनी सत्ता खोकर—परमात्मा में लीन होकर—मुहम्मद ध्यान में मरा हुआ रहता है।

भोग्य-भोगने योग्य, काम म लाने योग्य

भोक्ता-भोगने वाला, जीव

सबई जगत-यह सारा ही संसार शीशे के समान है। वह आपही शीशा है और आप ही देखने वाला है। अपने आप ही वह जंगल है, और अपने आपही (उसमें रहने वाला) पक्षी है। आपही सउजा (शिकार) आपही अहेरु (शिकारी) है। अपने आप ही फूल है और अपने आप उस फूल को देखकर प्रसन्न होता है और आपही भौंरा है जो उस फूल पर

गुणातीत या माया में भूला हुआ है। अपने आप ही रूप है और अपने आपही रखवाला है और अपने आपही इस का पालने वाला है। अपने आपही जीव जीव को उत्पन्न करता है और अपने आपही अपने रूपकी प्रशंसा करता है। आपही कागज है और आप ही स्याही है आपही लिखने वाला है, और अपने आपही कलम है अपने आपही अक्षर है और अपने आपही उनका पढ़ने वाला यह अपार पंडित है। अर्थात् यह एक ब्रह्म ही है, वह स्वयं पाप करने वाला और स्वयं ही उसका फल पाने वाला है।

युक्ति-दृढ़ता

निहित-निश्चित

वाणिज्य-व्यापार

व्यवधान-बाधा, भय

उत्कीर्णकराया-खुदवाया, लिखवाया

विश्वब्रह्मवाद-अद्वैतवाद, संसारकी सब वस्तुओं को ब्रह्म ही समझना (देखिये पृ० ५६ अद्वैत)

पृ० ४०८ ४०६

उद्गार-मन के भावों का प्रकाशन

गुर्वाज्ञा-बड़ों की आज्ञा

क्लिष्ट-कठिन

अनुचित-गुरुजनों की आज्ञा चाहे कितनी ही कठिन क्यों न हो यदि वह अनुचित हो तो न मानना चाहिये। राम पिता की आज्ञा मान वन को गये और भरत ने गुरुजनों की आज्ञा न मान राज्य न लिया फिर भी भरत जी का यश रामजी के यश से अधिक है।

पुरातनपुरुष-विष्णुभगवान, बूढ़ा आदमी

कमला-रहीम कहते हैं कि कमला (लक्ष्मी धन) स्थिर नहीं यह सभी जानते हैं। लक्ष्मी पुरातन पुरुष (विष्णु) की स्त्री ही है अतः चंचल क्यों न हो? क्योंकि पुरातन पुरुष [बूढ़े] की युवती स्त्री प्रायः चंचल होती है।

गहि सरना-राम की शरणरूपी नौका लेकर संसाररूपी सागर से पार उतर जा। रहीम कहते हैं कि संसार से पार होने का और कोई उपाय नहीं है।

(सक्षेप)

सभी देशों के इतिहास में भिन्न भिन्न जातियों के पारस्परिक सबन्ध को देखने पर पता लगता है कि सघर्षण मे सभ्यता का विकास होता है। भिन्न भिन्न देशों मे भिन्न भिन्न अवस्थाओं के कारण भिन्न भिन्न जातियों में भिन्न भिन्न आदर्श होते हैं। परन्तु जब दो जातियों को एक ही स्थान में रहना पड़ता है तब विवश होकर उन्हें कोई एक ऐसा सबन्ध-सूत्र खोजना पड़ता है जिससे भिन्नता में भी एकता हो जाय।

अन्य देशों में विशेष कर यूरोप में जिन जातियों का सम्मिलन हुआ, उन में उत्पत्ति, वर्ण, शारीरिक गठन और आदर्श की इतनी भिन्नता न थी, अत उनका एक दूसरे से मेल जल्दी होगया। पर भारत में श्वेताग आर्यों का पहले यहाँ के काले रग के आदिनिवासियों से और फिर सभ्य द्रविड़ जाति से सघर्ष हुआ। परन्तु यहाँ विषमता दूर करने के लिए अमेरिका के रेड इंडियनो की तरह उनको नष्ट नहीं कर दिया गया। और न ही उन्हें गुलाम बनाकर उनकी सभ्यता पर अपनी सभ्यता का रग जमाया गया। अपितु भगवान बुद्ध जैसे नेताओं ने विश्व मैत्री की शिक्षा देकर भारत के राष्ट्रीय जीवन में एकता का प्रचार किया। जब भारत पर मुसलमानों का आक्रमण हुआ तब पारस्परिक विद्वेष को शान्त करने के लिए एक ऐसा आन्दोलन चला जिसके चलाने वाले कहते थे हम मनुष्य मात्र परमात्मा के पुत्र हैं, अत सब भाई हैं और सब एक से हैं अत हमें आपस का धार्मिक विरोध भुला देना चाहिए। हिन्दी साहित्य पर भी इस आन्दोलन का खूब प्रभाव पड़ा।

पदा की डालों में बसेरा करूँ (जिनके नीचे भगवान कृष्ण आराम करते थे, या जिनकी डालों पर वे चढ़कर खेलते थे)
दिलजानी–प्राणप्यारे
इस्म–नाम
निवाज–नमाज
कलमा–वह वाक्य जो मुसलमान धर्म का मूलमंत्र है–"ला इलाह, इल्लिल्लाह मुहम्मद उर् रसू लिल्लाह"
जुल्फेदार–जुल्फोंवाला, लटोंवाला
नेह–प्रेम
दाग–जलन, ताप
निदाघ–गरमी ताप
तोकी–तेरी
सुनो दिलजानी–ऐ प्यारे सुनो मेरे दिल की कहानी–बात–सुनो कि तुम्हारे नाम पर बिकी हुई मैं निंदा भी सह लूँगी। मैंने देवताओं की पूजा शुरू करती है, नमाज तक भुलादी है और कलमा कुरान पढ़ना मैंने सब छोड़ दिये हैं और शेष सब तुम्हारे पसन्द गुणों को भी अपना लूँगी। हे सिरताज और सिर पर जुल्फों वाले साँवले सलोने, तेरे प्रेम की अगन में मैं ग्रीष्मऋतु होकर जलूँगी, अर्थात् जैसे ग्रीष्म ऋतु तपती है, वैसे ही मैं तपूँगी। हे नन्द के कुमार, तेरी सूरत पर मैं कुरबान हूँ और हे प्यारे तेरे साथ मैं हिन्दुवानी होकर रहूँगी।
चिरंतन–पुरान
ऐक्यमूलक–एकताही जिसका मूल
भित्ति–दीवार
बाह्य–बाहर का
कृत्रिम–बनावटी, जो असली न हो
काल्पनिक–मनगढ़न्त
संकुचित–छोटी, तंग
आत्मवत सर्वभूतेषु–अपने समान ही सब जीवों को समझना
मद–मस्ती
उपहासास्पद–हँसने योग्य
बीभत्स–घृणित, घृणा के योग्य
बिन्दु में–यह एक जल का बिन्दु ही समुद्र के समान हो गया है, यह क्या आश्चर्य है और किससे कहें? रहीम कहते हैं कि देखने वाले स्वयं ही उसको देख लेते हैं।

(सक्षेप)

सभी देशों के इतिहास मे भिन्न भिन्न जातियों के पारस्परिक सबन्ध को देखने पर पता लगता है कि सघर्षण से सभ्यता का विकास होता है। भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न अवस्थाओं के कारण भिन्न भिन्न जातियों म भिन्न भिन्न आदर्श होते हैं। परन्तु जब दो जातियों को एक ही स्थान में रहना पड़ता है तब विवश होकर उन्हें कोई एक ऐसा सबन्ध-सूत्र खोजना पड़ता है जिससे भिन्नता मे भी एकता हो जाय।

अन्य देशों में विशेष कर यूरोप में जिन जातियों का सम्मिलन हुआ, उन म उत्पत्ति, वर्ण, शारीरिक गठन और आदर्श की इतनी भिन्नता न थी, अत उनका एक दूसरे में मेल जल्दी होगया। पर भारत में श्वेताग आर्यों का पहले यहाँ के काले रग के आदिनिवासियों से और फिर सभ्य द्रविड़ जाति से सघर्ष हुआ। परन्तु यहाँ विषमता दूर करने के लिए अमेरिका के रेड इडियनों की तरह उनको नष्ट नहीं कर दिया गया। और न ही उन्हें गुलाम बनाकर उनकी सभ्यता पर अपनी सभ्यता का रग जमाया गया। अपितु भगवान बुद्ध जैसे नेताओं ने विश्व मैत्री की शिक्षा देकर भारत के राष्ट्रीय जीवन में एकता का प्रचार किया। जब भारत पर मुसलमानों का आक्रमण हुआ तब पारस्परिक विद्वेष को शान्त करने के लिए एक ऐसा आन्दोलन चला जिसके चलाने वाले कहते थे हम मनुष्य मात्र परमात्मा के पुत्र हैं, अत सब भाई हैं और सब एक से हैं अत हमें आपस का धार्मिक विरोध भुला देना चाहिए। हिन्दी साहित्य पर भी इस आन्दोलन का खूब प्रभाव पड़ा।

भारत पर मुसलमानों का आधिपत्य सहसा स्थापित नहीं होगया अपितु उनका पहला आक्रमण सन् ६६४ में हुआ था, और सन् ११९३ से मुसलमानों का शासन युग प्रारंभ होता है। परन्तु इससे पहले मुसलमान साधक और फकीर भारत में आते थे, और कितने ही भारतीय विद्वान बगदाद के खलीफा के दरबार में जाते थे। भारत में मुसलमानों के राज्य के साथ-साथ मुसलमानी धर्म का भी प्रचार हुआ और तभी विरोध प्रारम्भ हुआ। महात्मा कबीरदास ने देखा कि मुसलमानों और हिन्दुओं का विरोध अस्वाभाविक है, दोनों ही एक ही मिट्टी के भाँडे हैं, केवल नाम-नाम का भेद है। और दोनों ही धार्मिकता में पागल हो एक सा पाप कर रहे हैं, अतः उन्हों ने समदृष्टि का प्रचार किया। कबीर का यह प्रयास व्यर्थ न हुआ। उनके बाद जायसी ने इसकी पुष्टि की। उन्होंने कहा कि कोई भी भाषा हो पर जिस में प्रेम का मर्म है वही भाषा श्रेष्ठ है और हम एक परमात्मा की ही सब सन्तान हैं केवल अपने विश्वास में भेद होने के कारण वे अलग अलग हिन्दू मुसलमान होगए हैं। आगे चल कर हम देखते हैं इस सिद्धान्त का खूब प्रचार हुआ। सम्राट् अकबर के महामन्त्री अबुलफजल ने एक हिन्दू मन्दिर पर लेख खुदवाते हुए यही उद्गार प्रकट किया था कि वह परमात्मा एक है, केवल नाम नाम का भेद है। इसी भावना से प्रेरित हो सूरदास और तुलसीदास ने अपनी कविता में भक्ति की लहर बहाई, और हम देखते हैं कि उस लहर में ही रहीम रसखान आदि मुसलमान कवि बह गये। रहीम कहते थे—राम की शरण रूपी नौका लेकर संसार को पार

करो और कोई उपाय नहीं है। रसखान कृष्ण की गाय बनने में ही अपना सौभाग्य समझता था। मुसलमान स्त्री कवि ताज तो बदनामी सह करके भी उसी दिलजानी कृष्ण पर कुर्बान होने को तैयार है। इस तरह हम देखते हैं कि यद्यपि राजनीतिक क्षेत्र में हिन्दू मुस्लिम विरोध दूर नहीं हुआ तो भी साहित्य के क्षेत्र में दोनों ने सत्य को ग्रहण करने में संकोच नहीं किया और आध्यात्मिक आदर्श की भित्ति पर और इस अनन्त सत्य सिद्धान्त पर कि मनुष्य मात्र से प्रेम करके ही मनुष्यों के पिता परमात्मा को पाया जा सकता है, और नर, उसी नारायण का ही रूप है, दोनों का सम्मिलन हुआ। इस मे दीक्षित होने के लिए हिन्दुओं को अपना हिन्दुत्व और मुसलमानों को अपना मुसलमानीपन नहीं छोड़ना पड़ता, क्योंकि बाहरी आचार व्यवहार इस ऐक्य मे बाधक नहीं होते। यह एकता बनावटी नहीं है अपितु सच्ची है।

आजकल जातिविरोध की समस्या अवश्य बहुत बढ़ गई है। इसका कारण यह है कि सबल जाति निर्बल पर अत्याचार करने में संकोच नहीं करती, पर जब मनुष्य को जातिविद्वेष और स्वार्थसिद्धि का भयंकर रूप दिखाई देगा तब वह समझेगा कि मनुष्य मात्र को ही परमात्मा का रूप समझने में ही उसकी मुक्ति है।

महाभारत

(लेखक—श्रीयुत सूर्य कुमार वर्मा)

पृ० ४१२ ४१३
शिविर–डेरा छावनी
केश–बाल
पृ० ४१४, ४१५
सञ्जीवनीसुधा–जिलाने वाला अमृत
पुण्यभूमि–पवित्र भूमि
स्वप्नराज्य–सपना का राज्य
कोर–किनारा, सिरा
नाट्यालय–नाचने वाली जगह
बृहन्नला–अर्जुन का वह रूप जिस समय वह अज्ञात वास में स्त्री के वेश में रहकर उत्तरा को नाच गान सिखाते थे।
उत्तरगोग्रहण–जब कौरव विराट राजा की गौएँ चुरा ले गये थे, तब विराट का पुत्र उत्तर बृहन्नला का साथी बना गौएँ छीनने गयाथा और बृहन्नला के पौरुष से उत्तर गौएँ वापिस ले आया था।
शोकानल–शोक की आग
प्रदीप्त होगया–जल गया
संताप–दुःख जलन
वनमाता–वनकी अधिष्ठात्री देवी
मनोराज्य–मानसिक कल्पना
प्रतिमूर्त्ति–प्रतिमा तस्वीर
गृह भूमि–घर की भूमि
पृ० ४१६, ४१७
नलिनी–कमलिनी
आश्रयभूत–जिसका सहारा लिया हो।
पादमूल–पैरका निचला भाग, जड़
धीयानल–बल रूपी आग
दिया गुल होगया–दीया बुझ गया नाश हो गया
पृ० ४१८ ४१९
योगस्थ–ध्यान में बैठकर
आशावृक्ष–आशा रूपी वृक्ष
आधारस्तम्भ–सहारा देने वाला खंभा।
पतिपद–पति के पैर
नरमेध–वह यज्ञ जिसमें मनुष्य की बलि दी जाती थी।
पृ० ४२०, ४२१
शकुनि–गिद्ध पक्षी।
शृगाल–गीदड़
कर्कश–कठोर, कड़वा

चितानल–चिता की आग
बालकिरणों–नईनिकलीहुईकिरणों
पुण्यवती–पुण्यवाली
कमलनयन–कमल से नेत्र वाले
देवत्व–देवताओं के गुण
पार्थ–अर्जुन
स्वप्नस्वर्ग–स्वप्नों का स्वर्ग
पृ० ४२२, ४२३
सचारित कर–जन्म देकर
प्रसव–पैदा
प्रदक्षिणा–फेरे डालना, चारों तरफ घूमना
पाषाणमूर्ति–पत्थर की मूर्त्ति
धर्मामृत–धर्मरूपी अमृत
विश्वकण्ठ–संसार भर के आदमियों के मुँह (गले) से
शिविराभिमुख–शिविर की ओर
पृ० ४२४, ४२५
निमिषकाल–पलभर, जितने समय में आँख की पलक नीचे गिरती है।
बालू की भीत–रेत की दीवार
रक्तस्राव–खून का बहना
नभोमण्डल–आकाश
प्रतिभान्वित–कान्ति से युक्त
अर्धेन्दु–आधे चाँद की शकल क
किरीट–मुकुट
पाशांकुश–पाश और अंकुश
त्रिकाल–तीनोंकाल, भूत, वर्तमा और भविष्यत्
द्वैपायन–व्यास
पूर्वगगनाभिमुख–पूर्व दिशा के आकाश की ओर मुँह करके
पृ० ४२६
धनंजय–अर्जुन
पार्थिव–पृथ्वी से उत्पन्न
सूत्र–डोरा
नामामृत–नाम रूपी अमृत

(संक्षेप)

अभिमन्यु वध को हुए छ दिन हुए, महाभारत के युद्ध की भी समाप्ति होगई, अँधेरी रात में एक शिविर में बनमाता शैलजा और पति की मृत्यु के दारुण दुःख से दुखित मूर्छित उत्तरा उसकी गोद में पड़ी है। उत्तरा बीच-बीच में पागल व्यक्ति की तरह प्रलाप कर रही है। छ दिन के दारुण शोक से ही उस युवती उत्तरा के बाल सफेद होगए थे। आँखें अन्दर को धँस गई थीं। धीरे धीरे उस के मन के

परदे पर पिता का घर, नाट्यालय में अर्जुन से नाच सीखना, फिर उत्तर का गो लेकर आना, पाडवों के अज्ञातवास की समाप्ति, विवाह, छ महीने तक पति के साथ भोगे हुए सुखों का समय, कुरुक्षेत्र का भयकर युद्ध, चक्रव्यूह, मृतपति को देखना आदि सब घटनाएँ फिर गई। उसकी आँखों के आगे अँधेरा छागया। वह पति की ही चिता पर चढ कर स्वय मरना चाहती है। उस की इस दयनीय दशा को देखकर शैलजा के दो आँसू टपक पडे। और शैलजा उसे समझाने लगी कि तुम्हे गर्भ है, उसकी रक्षा करना तुम्हारा कर्तव्य है। जब तुम्हारा पुत्र राज्यसिंहासन पर बैठेगा तब तुम्हे सब दुःख भूल जायगा। परन्तु उत्तरा अपने पुत्र को माता सुभद्रा और शैलजा को देकर अपने पतिरूपी वृक्ष के पाद मूल में अपना भी जीवन समाप्त कर देने का निश्चय करती है। फिर सोचती है कि पता नहीं इस महा युद्ध में कितनी स्त्रियाँ उसकी तरह ही अनाथ होगई होंगी। शैलजा ने उसे बतलाया कि महाभारत का युद्ध समाप्त होगया। कौरवों में से केवल कृप, कृतवर्मा और द्रोण पुत्र बाकी बचे हैं और पाडवों की ओर से भी, सात्यकि और कृष्ण इनके सिवाय और कोई नहीं बचा, उत्तरा के पिता और भाई भी सब नष्ट हो गए। उत्तरा हैरान थी कि वह ६ दिन तक बेहोश रही, फिर भी उसके प्राण नहीं निकले। शैलजा ने बताया कि उसको कृष्ण ने योगस्थ होकर पुनर्जन्म दिया है। उत्तरा विस्मित थी और उठ कर पति की चिता की ओर चल दी। उस घनी अँधेरी रात में असख्य जलती हुई चिताएँ देखकर

ओर गीधों और गीदड़ों की कर्कश ध्वनि सुन कर उत्तरा का हृदय काँप उठा। शैलजा सहित उत्तरा पति की चिता के पास पहुँची। कृष्ण भी वहीं उपस्थित थे। पर उत्तरा ने उन्हें देखा नहीं और वह कृष्ण से शरण देने के लिए प्रार्थना करने लगी और मृत पति को सम्बोधन कर कहने लगी कि प्रसव के बाद वह भी उसी जगह प्राण समर्पण करेगी। उसके बाद शैलजा ने चिता भस्म अपने और उसके माथे पर लगाई और दोनों चिता की प्रदक्षिणा कर वहाँ से विदा हुईं। कृष्ण वहीं पत्थर की मूर्ति की तरह खड़े रहे।। इतने में अर्जुन तथा सुभद्रा भी वहाँ पहुँचे। अर्जुन शोक से व्याकुल थे, सुभद्रा ने उन्हें दिलासा देकर कहा—अब तुम्हारा वीर व्रत समाप्त हुआ। अब श्रेष्ठतर धर्म व्रत को स्वीकार कर पुत्र भस्म को हृदय से लगाकर कर्मक्षेत्र में अग्रसर हो। जब पृथ्वी से यह नवीन धर्म प्रचलित हो जायगा तभी हम अभिमन्यु के योग्य माता पिता कहलाएँगे। तदनन्तर चिता की भस्म को हृदय से लगाकर वे भी शिविर को चल दिए। तब कृष्ण चिता भस्म हृदय से लगाकर ऊपर की ओर देख कर कहने लगे—यदि मनुष्य की मुक्ति का मार्ग रक्त के सागर से है तो हे देव! तुमने एक ही क्षण में कृष्ण के रक्त से पृथ्वी को क्यों न भर दिया। अठारह दिन तक जो यह भयानक रक्तपात हुआ उसमें का प्रत्येक बिन्दु कृष्ण के तप्त रक्त से निकला हुआ था।। प्रत्येक अनाथ स्त्री के हाहाकार, उत्तरा और अर्जुन के शोक और सुभद्रा के वैराग्य ने भी तो मेरे हृदय पर चोट की है। राजसूय यज्ञ द्वारा धर्मराज्य स्थापित करने के बाद भी अ…

पापाचार पूरा न हुआ तब इस दूषित खून का बहाना आवश्यक समझा, और इसीलिए देव ! आपकी इच्छा जान कर अठारह दिन तक अपना हृदय फोड़कर पृथ्वी पर रक्त की नदी बहा दी और प्राणों से भी अधिक प्यारे अभिमन्यु की बलि दी। अब आप पृथ्वी पर धर्मराज्य की स्थापना कीजिए। इतने में वह चिता पुनः प्रज्वलित हो उठी और उसमें से त्रिभुवन को प्रकाशित करने वाली महाभारत की मूर्ति ध्यान मग्न राज राजेश्वरी माता आयी और अनार्यों का सम्मेलन करने और नवीन धर्म की स्थापना करने के लिए दिखाई पड़ी। उसके तीनों नेत्रों में तीनों लोकों का ज्ञान था। वह निष्काम काम करने का उपदेश देरही थी और कृष्ण नाम का जाप कर रही थी। कृष्ण मा माँ पुकारते हुए वहीं चिता के पास मूर्छित होकर गिर पड़े। सबेरे के प्रकाश के साथ अनंत मंगल बाजे बजने लगे और सुभद्रा, अर्जुन, शैलजा, तथा व्यास वहाँ पहुँचे। कृष्ण उठ कर कुमार की चिता के सामने ध्यान म मग्न हो गये। उनके पास धनंजय खड़े थे और बीच में सुभद्रा देवी। ज्ञान के अवतार कृष्ण, बल के स्वरूप अर्जुन और भक्ति की मूर्ति सुभद्रा और उनके सामने चिता रूपी आत्मत्याग को देख महर्षि व्यास ने अपने को धन्य समझा और उन्हों ने देवताओं और ऋषियों को उस त्रिमूर्ति के दर्शन के लिए कहा, साथ ही नारायण से महाभारत के गीत गाने की शक्ति माँगी, जिससे मनुष्य कृष्ण के नामामृत को पान कर मुक्ति लाभ करे। शैलजा ने गुरुदेव के पैरों की धूलि सिर धर भगवान से अनार्यों को भी अपने पद कमल

में शरण देने तथा भारतवासियों को ज्ञान, भक्ति, बल और आत्म बलिदान की शिक्षा देने के लिए प्रार्थना की।

४४
जर्मन देश पर एक ऐतिहासिक दृष्टि

(लेखक—डा० लक्ष्मण स्वरूप एम० ए०, डी० फिल०)

पृष्ठ ४२८, ४२९
विस्मयोत्पादक–हैरानी पैदा करने वाली, हैरान करने वाली
अनुसंधान–खोज
दर्शनानुशीलन–दर्शनों का मनन करना, दर्शनों का विचार करना।
एतद्देश–इस देश में उत्पन्न हुए ब्राह्मणों से पृथिवी के सब मनुष्य अपने अपने चरित्र की शिक्षा लेते थे।
गौरवास्पद–इज्जत का काम
प्रवर्तक–संचालक, काम को शुरू करने वाले
मानव प्रकृति–मनुष्य का स्वभाव
संशयमोचक–संदेह को दूर करने वाला।
पृ० ४३०, ४३१
उपलब्धि–प्राप्ति
नितान्त–बिलकुल
पृ० ४३२ ४३३
लोकाचार–संसार का व्यवहार
मनोरथ सिद्धि–इच्छा पूरी करना

(संक्षेप)

सभ्य संसार में आज जर्मनी सबसे अधिक आदर पाता है। विज्ञान, कलाकौशल, नये आविष्कार तथा साहित्यिक अनुसंधान आदि सब तरफ की गई उसकी आधुनिक उन्नति आश्चर्य-जनक है। परन्तु आज से दो सौ वर्ष पूर्व जर्मनी की कोई ताकत न थी। तब जर्मनी में एकता न थी, शास्त्र विरचना तो

पापाधार पूरा न हुआ तब इस दूषित खून का बहाना आवश्यक समझा, और इसीलिए देव ! आपकी इच्छा जान कर अठारह दिन तक अपना हृदय फोड़कर पृथ्वी पर रक्त की नदी बहा दी और प्राणों से भी अधिक प्यारे अभिमन्यु की बलि दी। अब आप पृथ्वी पर धर्मराज्य की स्थापना कीजिए। इतने में वह चिता पुनः प्रज्वलित हो उठी और उसमें से त्रिभुवन को प्रकाशित करने वाली महाभारत की मूर्ति ध्यान मग्न राज राजेश्वरी माता आद्या और अनार्यों का सम्मेलन करने और नवीन धर्म की स्थापना करने के लिए दिखाई पड़ी। उसके तीनों नेत्रों में तीनों लोकों का ज्ञान था। वह निष्काम काम करने का उपदेश दे रही थी और कृष्ण नाम का जाप कर रही थी। कृष्ण मा मॉं पुकारते हुए वहीं चिता के पास मूर्छित होकर गिर पड़े। सवेरे के प्रकाश के साथ अनन्त मंगल बाजे बजने लगे और सुभद्रा, अर्जुन, शैलजा, तथा व्यास वहाँ पहुँचे। कृष्ण उठ कर कुमार की चिता के सामने ध्यान में मग्न हो गये। उनके पास धनञ्जय खड़े थे और बीच में सुभद्रा देवी। ज्ञान के अवतार कृष्ण, बल के स्वरूप अर्जुन और भक्ति की मूर्ति सुभद्रा और उनके सामने चिता रूपी आत्मत्याग को देख महर्षि व्यास ने अपने को धन्य समझा और उन्होंने देवताओं और ऋषियों को उस त्रिमूर्ति के दर्शन के लिए कहा, साथ ही नारायण से महाभारत के गीत गाने की शक्ति माँगी, जिससे मनुष्य कृष्ण के नामामृत को पान कर मुक्ति लाभ करें। शैलजा ने गुरुदेव के पैरों की धूलि सिर धर भगवान से अनाथा को भी अपने पद्-कमल

अधिक से अधिक खर्च करने को तैयार था। कहते हैं इसने एक साढ़े छः फुट लंबे आदमी को आयर्लैंड से बुलाने के लिए १३५०० रुपये खर्च कर दिये। इस तरह चौबीस सौ लंबे मनुष्यों की एक बड़ी सेना उसने तैयार की। उस सेना की रक्षा वह पिता की तरह करता था। इसी शारीरिक बल को पाकर उसके बेटे फ्रेडरिक ने सारे यूरोप के मुकाबले में विजय प्राप्त की। इस तरह उसने अपनी जाति को वीर और कार्यशील बना दिया।

४५

त्रिमूर्ति

(लेखक—श्रीयुत पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी)

पृ० ४३७
अवलम्बन—सहारा
सूर्योदय—सूर्य का उगना
विराट्—बहुत बड़ा
पवन—हवा
उदीयमान—उगते हुए
प्रभा—कान्ति
पृ० ४३८, ४३९
विश्व व विषम ताप—संसार के अत्यधिक दुःख
प्रासादिक—प्रसाद गुणवाला अर्थात् ऐसी भाषा जो स्वच्छ और साफ हो और सुनने के साथ ही जिसका भाव समझ में आ जाय।
विशद—स्पष्ट, स्वच्छ
अभिनव—नया
पृ० ४४०, ४४१
मधुपूर्ण—रसभरा हुई
विश्वात्मा—संसार की आत्मा
संचरण करती है—संचार करती है, विहार करती है।
अनवच्छिन्न रहते हैं—अटूट रहते हैं। देश और काल इनकी सीमा नहीं बाँधते, देश और समय का प्रभाव उन्हें सीमित नहीं कर देता।
विश्व कवि—संसार भर के कवि
सम्पूर्ण—सारा
कृति—रचना, काव्य

दूर रहा, उस समय वहाँ की अपनी भाषा भी न थी । उस समय वहाँ फ्रांसीसी भाषा पढ़ने मे गौरव समझा जाता था । सारांश यह कि उस समय जर्मन जाति ही मौजूद न थी । इतिहास हमें बताता है कि जर्मनी ने किस प्रकार यह उन्नति की है । सन् १६८१ में प्रशिया और ब्रैण्डनबर्ग इन दो छोटे छोटे राज्यों के मेल से प्रशिया राज्य की स्थापना हुई । तब प्रशिया ने जर्मनी के छोटे-छोटे रजवाड़ों को सगठित कर जर्मनी को एक राष्ट्र बनाया । सन् १६८८ में फ्रेडरिक तृतीय प्रशिया के सिंहासन पर बैठा । सन् १७०१ में उसने सम्राट् की एक युद्ध में सहायता कर उससे राजा की उपाधि प्राप्त की । सन् १७१३ में उसका पुत्र पहला विलियम गद्दी पर बैठा । वह साहित्य, सभ्यता, कला और शिक्षा सब का विरोधी था, परन्तु शरीर में बड़ा बलवान था । उसका पिता विद्या और कला का प्रेमी था और रसिक था । पर यह बड़ा कजूस था । कविता आदि पढ़ने को वह फिजूल तथा समय खराब करना समझता था । किसी को खाली बैठे देख लेता तो तीन चार छड़ी लगाकर काम पर भेज देता ।

उसने एक ऐसी सभा बनाई जिसमे राज्य विषयक सभी प्रकार के विचार होते थे पर जिसके हर एक सदस्य को तमाखू और शराब पीना आवश्यक था । वह शारीरिक उन्नति को सब से अधिक महत्त्व देता था । लबे कद के आदमियों को सेना में भरती करने का बड़ा शौकीन था । एक लबे कद के आदमी को पाने के लिये

पुरुषोत्तम–श्रेष्ठ पुरुष
देवदुर्लभ–देवताओं में भी कठिनता से मिलने वाले
मधुरता–सुन्दरता
विस्मयविमुग्ध–हैरान

पृ० ४४८, ४४९
भक्तिभावना–भक्ति के विचार
दारिद्र्य व्रत–गरीबी का व्रत
विलापोद्गार–विलाप करना
द्रवीभूत–पिघला हुआ

विश्वरूप–विराट् रूप, परमात्मा का रूप
हृदयस्पन्दन–हृदय की धड़कन
औत्सुक्य–उत्सुकता
अंकित–चित्रित
ध्वनित हो रहा है–गूँज रहा है

पृ० ४५०
व्यवधान–भेद, बाधा
उद्भव–उत्पत्ति

(संक्षेप)

मनुष्यमात्र अपने ज्ञान को सीमित नहीं रखना चाहता। जहाँ उसकी बुद्धि काम नहीं देती, वहाँ वह कल्पना के घोड़े दौड़ाता है। तभी काव्य की सृष्टि होती है। सूर्य का उगना और अस्त होना रोज़ की घटना है। परन्तु कवि सूर्योदय में उषा देवी के मधुर हास की और अस्त होते समय वियोग के कारण रात के मलिन वेश की कल्पना करता है। ज्यों ज्यों सभ्यता की वृद्धि होती जाती है, ज्यों ज्यों ज्ञान बढ़ता जाता है त्यों त्यों मनुष्य कल्पना शक्ति से काम लेना छोड़ता जाता है और त्यों त्यों कवित्व का ह्रास होता जाता है। जीवन के प्रभात काल में—बचपन में—मनुष्य बरसात के जल में हँसते, नाचते और खेलते फिरते हैं, परन्तु ज्यों ज्यों वे बड़े होते जाते हैं, त्यों त्यों उस गँदले पानी और कीचड़ से घबराने लगते हैं। इसका प्रभाव हमारी कल्पना शक्ति पर पड़ता है। वाल्मीकि और

गिरिराज-पर्वतों का राजा
जाह्नवी—गंगा
पुनीत—पवित्र
समकक्ष-बराबर की श्रेणी के
किंवदन्तियाँ-दंत कथाएँ, मन गढ़न्त कहानियाँ।
उन्मेष-विकाश, खिलना, थोड़ा प्रकाश।
पाषाणहृदय-पत्थर की तरह कठोर हृदय।
द्रवित—पिघला हुआ
पृ० ४४२, ४४३
मर्त्यलोक-मनुष्यों का लोक
निदारुण निशा-भयंकर रात
मर्माहत-अत्यधिक चोट खाकर
वेदना—पीड़ा
our —thoughts-हमारे सब से मधुर गीत वही हैं जो सबसे अधिक मानसिक दुःख के भावों को प्रकट करते हैं।
लालायित हो-उत्सुक हो
अवहेलना- ध्यान न देना तिरस्कार करना।
चर्म चक्षु-चमड़े की आँखें बाहरी आँखें।
आदि कवि-सबसे पहला कवि
कविर्मनीषी परिभू स्वयम्भू—परमात्मा कवि, मनन करने वाला, सबके ऊपर विराजमान, और स्वयंही होने वाला है
सौष्ठव-अच्छाई
सोपान-सीढ़ी
पृ०४४४, ४४५
पराकाष्ठा-हद, चरमसीमा
निस्सारता-व्यर्थ
विभूति-ऐश्वर्य
अवतरण कर-पैदा कर
निरलेपण कर-अलग अलग निकाल कर
प्रचलित कर दी-चला दी
अध्यात्म शक्ति विहीन-आत्मा सबंधी ज्ञान से रहित
पार्थिवश्री-पृथिवी की शोभा
क्रिया शक्ति-काम करने की शक्ति
पृ० ४४६ ४४७
विशुद्धि-पवित्रता
नैपुण्य-निपुणता, चतुरता
उच्छ्वास-श्वास, प्राण
निरंकुशता-बन्धन का न होना
गिरिनिर्झर-पहाड़ का झरना
छन्दोयोजना-छन्दों की बनावट
निर्बाध-बिना रुक, बिना किसी विघ्न के
चरितांकण-चरित्र दिखाना, चरित्र चित्रण करना।

पुरुषोत्तम–श्रेष्ठ पुरुष
देवदुर्लभ–देवताओं में भी कठिनता से मिलने वाले
रम्यता–सुन्दरता
विस्मयविमुग्ध–हैरान

पृ० ४४८, ४४६
भक्तिभावना–भक्ति के विचार
दारिद्र्य व्रत–गरीबी का व्रत
विलापोद्गार–विलाप करना
द्रवीभूत–पिघला हुआ

विश्वरूप–विराट् रूप, परमात्मा का रूप
हृदयस्पंदन–हृदय की फड़कन
औत्सुक्य–उत्सुकता
अंकित–चित्रित
ध्वनित हो रहा है–गूँज रहा है

पृ० ४५०
व्यवधान–भेद, बाधा
उद्भव–उत्पत्ति

(संक्षेप)

मनुष्यमात्र अपने ज्ञान को सीमित नहीं रखना चाहता, जहाँ उसकी बुद्धि काम नहीं देती, वहाँ वह कल्पना के घोड़े दौड़ाता है। तभी काव्य की सृष्टि होती है। सूर्य का उगना और अस्त होना रोज की घटना है। परन्तु कवि सूर्योदय में उषा देवी के मधुर हास की और अस्त होते समय वियोग के कारण रात के मलिन वेश की कल्पना करता है। ज्यों ज्यों सभ्यता की वृद्धि होती जाती है, ज्यों ज्यों ज्ञान बढ़ता जाता है, त्यों-त्यों मनुष्य कल्पना शक्ति से काम लेना छोड़ता जाता है और त्यों त्यों कवित्व का ह्रास होता जाता है। जीवन के प्रभात काल में—बचपन में—मनुष्य बरसात के जल में हँसते, नाचते और उछलते फिरते हैं, परन्तु ज्यों ज्यों वे बड़े होते जाते हैं, त्यों त्यों उस मैले पानी और कीचड़ से घबराने लगते हैं। इसका प्रभाव हमारी कल्पना शक्ति पर पड़ता है। वाल्मीकि और

तुलसीदास दोनों ही कवि रामायण की कथा कहकर अमर हो गये हैं पर दोनों के कथा वर्णन को देखकर यह भेद स्पष्ट हो जाता है। तुलसीदास की कविता में हम स्थान स्थान में साहित्यिक कुटिलता का परिचय पाते हैं, जैसे—

"निसि तम घन खद्योत विराजा, जनु दम्भिन कर जुरा समाजा।
महावृष्टि चलि फूटि कियारी। जिमि स्वतंत्र भये बिगरहिं नारी"

इसका कारण यह है कि वाल्मीकि ने रामायण तपोवन में बैठकर लिखी थी और तुलसीदास ने किसी नगर में। इस तरह कवि पर देश काल का बड़ा प्रभाव पड़ता है और उसकी कल्पना भी उसी तरह की हो जाती है। सभ्यता के आदिकाल में जो कवि हुए हैं, उनकी कविता भाषा के आडम्बर से रहित स्वच्छ और सुबोध है, परन्तु ज्यों-ज्यों धन और ऐश्वर्य बढ़ता जाता है त्यों-त्यों कविता में बाहरी सजावट बढ़ती जाती है। इसी कारण साहित्य के युग को प्राचीन काल, मध्य काल और नव काल इन तीन भागों में बाँटा जाता है। प्राचीन काल में कवि बाहर के संसार को अन्तर्जगत् में मिलाकर एक नयी ही सृष्टि करते थे, उस समय की कविता में अन्तर्जगत् और बाहर के संसार में भेद नहीं रहता। उस समय के प्रधान कवि वाल्मीकि, व्यास और होमर हैं।

काव्य दो प्रकार के होते हैं, कुछ में कवि अपने अनुभवों के ही द्वारा सारी मनुष्य जाति के गूढ़ भावों को स्पष्ट करता है, परन्तु कुछ काव्य ऐसे होते हैं, जो देश और काल के आधार से बने होते हैं। इन में कवि अपने समाज की आत्मा का

कर्ता विश्वकवि कहलाते हैं। इन काव्यों को पढ़ने से अनन्तकाल तक लोग आनन्द और पवित्रता पाते रहते हैं। भारत में रामायण और महाभारत और प्राचीन ग्रीस के इलियड और ओडसी इसी तरह के महाकाव्य हैं। इन काव्यों के कर्ता भारत के वाल्मीकि और व्यास और योरोप का होमर तीनों ही एक समान अमर हैं।

इन दिव्य शक्ति-सम्पन्न ऋषियों के बारे में अनेक किंवदन्तियाँ प्रसिद्ध हैं, उनमें इनकी असाधारण बातों का ही उल्लेख है, पर वे किंवदन्तियाँ उनकी कविता के रूपों का बहुत सा परिचय देती हैं। कहा जाता है कि पहले वाल्मीकि क्रूर डाकू थे, पीछे राम नाम के प्रभाव से साधु होगये। उनकी कविता में भी करुणरस का ऐसा उद्गार है कि वह पत्थर को भी पिघला देती है। ऐसे ही उनके विषय में प्रसिद्ध है कि क्रौंच पक्षी के वध से पीड़ित होकर एक दम उनके मुँह से श्लोक निकल पड़ा। (कहानी के लिए श्री केशव प्रसाद शुक्ल लिखित हिन्दी विलास चन्द्रिका, अथवा हिन्दी विलास का कुञ्जी का पृष्ठ ३१२ देखिये) इस किंवदन्ती से प्रकट होता है कि जिस कविता में कोई पीड़ा नहीं दिखाई देती उस कविता में मधुरता भी नहीं होती। व्यास की महाभारत हिन्दू समाज को धर्म और नीति की शिक्षा देने के कारण पंचम वेद समझा जाता है, परन्तु उनके जन्म के विषय में जो किंवदन्तियाँ हैं उनसे सिद्ध होता है जन्म किसी मनुष्यका भविष्य निश्चित नहीं कर देता। होमर अंधा था। आँख से पृथ्वी की वस्तु ही देखी जाती है, पर होमर ने नेत्र हीन होकर पृथ्वी पर स्वर्ग के दर्शन किये।

वाल्मीकि भारत के सबसे पहले कवि और महर्षि माने जाते हैं। हि न्दू समाज में ऋषि का स्थान बहुत ऊँचा है। आदि कवि को महर्षि कहा जाना बतलाता है कि कवि को वह स्थान प्राप्त है जो एक ऋषि को है। उपनिषदों में परमात्मा को भी कवि कहा गया है। अतः ऋषि के वचन के समान कवि के वचन भी मनुष्यों में स्वर्गीय भाव भरने वाले होने चाहिए। अलंकार आदि तो काव्य के साधारण गुण हैं, पर ऋषि का वचन तो हमारी सब कामनाओं का अन्त कर सकता है, और रामायण के पढ़ने से फिर कोई वासना रहती नहीं। इसलिए इसे स्वर्ग की सीढ़ी भी कहा है। रामायण में एक आदर्श समाज का चित्र है। इसलिए कुछ लोगों को वह असम्भव दीखता है। परन्तु रामायण यह बताती है कि मनुष्य समाज आदर्श किस प्रकार हो सकता है। व्यास जी ने महाभारत में दुनिया की वास्तविकता का फोटोग्राफ बताया है। इन्होंने धर्म और अधर्म का बड़ा सूक्ष्म निर्णय किया है और यह बताया है कि अपने धर्म में बलि होना ही धर्म की पराकाष्ठा है। होमर के इलियड काव्य में बताया गया है कि एशिया के समृद्धिशाली देश ट्राय के राजा प्रायम का पुत्र पेरिस स्पार्टा नरेश मेनिलास की स्त्री हेलेन को भगा लाया। इसपर मेनिलास ने ग्रीक राजाओं को ले ट्राय पर आक्रमण कर उसे जीत लिया। ओडेसी में यूलीसस नामक ग्रीक नरेश की यात्रा का वर्णन है। यद्यपि महाकाव्य में कहानी की ओर प्रधानता दी जाती है, परन्तु होमर के महाकाव्य में शेक्सपियर के नाटकों की तरह चरित्र चित्रण पर और मानसिक भावों को प्रकट करने पर भी काफी

जोर दिया गया है। रामायण और महाभारत की तरह होमर ने भी योरप में सद्विचार फैलाये हैं। जिस तरह द्रौपदी कार्यशीलता की और सीता पवित्रता की मूर्ति है वैसे ही होमर की हेलेन पृथ्वी के सौन्दर्य की मूर्ति है।

कविता में अलकार आवश्यक हैं। होमर ने उपमाएँ किसी बात को विशेष प्रभावशाली बनाने के लिए प्रयुक्त की हैं। वाल्मीकि की उपमाएँ बड़ी सरल होती हैं, परन्तु व्यासजी की उपमाओं म एक प्रकार की निरकुशता है। इन तीनों कवियो की कविता में स्वाभाविक प्रवाह, प्रसादगुण (स्वच्छता और सुबोधता) तथा स्वर्गीय भाव कूटकूट कर भरे हैं।

कवि का प्रधान गुण आदर्श चरित्र की सृष्टि करना है। होमर की हेलेन, वाल्मीकि की सीता तथा व्यास की द्रौपदी तीनों ही अद्वितीय हैं, पर दिव्यता की दृष्टि से सीता का चरित्र अनुपम है।

रामायण में रामचन्द्र और सीता का ही चरित्र प्रधान है और सब गौण हैं। रामचद्र में सब देव दुर्लभ गुण हैं। उनका चरित्र एक बार मनुष्य मात्र को विस्मित कर देता है। मनुष्य उन को ईश्वर समझता है, परन्तु यह भक्ति उनके किसी अस्वाभाविक चरित्र के कारण नहीं परन्तु मानसिक चरित्र के कारण है। रामचन्द्र ईश्वर हो सकते हैं, परन्तु वाल्मीकि के रामचद्र सदा मनुष्य रूप में दिखाई देते हैं। वे आदर्श पुत्र थे, स्नेही भाई थे और प्रेमी पति थे। उन्होंने राज्यसिंहासन छोड़ कर दरिद्रता में जीवन बिताया, माता और लक्ष्मण के लिए विलाप किया। पाठक इन स्थलों को पढ़कर पिघल जाते हैं। परन्तु तुलसीदास

ऐसे स्थलों में जब यह कह देते हैं कि रामचन्द्र तो परमात्मा हैं और केवल मानवलीला कर रहे हैं, तब काव्य का सारा आनंद मारा जाता है, परंतु वाल्मीकि ने ऐसे स्थानों पर कहीं उन्हें ईश्वर नहीं बताया। उन्होंने उन्हें मनुष्य रूप में ही दिखाया है। सीता का चरित्र चित्रण तो बहुत सफल हुआ है। इसी कारण आज हजारों बरस बाद भी पाठक उसमें इतना ही आनंद लेते हैं।

देश काल के कारण मनुष्य जाति में कई भेद हो गये हैं। धर्म और साहित्य दोनों इन भेदों को हटाना चाहते हैं, परन्तु धर्म इस काम में सफल नहीं हुआ। प्रत्येक धर्म सबको मिलाने के लिए पैदा हुआ, पर थोड़े दिन बाद नये नये मतों की सृष्टि हो गई, और आज वे पारस्परिक घृणा और विद्वेष फैला रहे हैं, परन्तु यह सारा साहित्य संसार का साहित्य है और मनुष्य जाति के भले के लिए ही यह बना है। वाल्मीकि, व्यास और होमर कहीं भी पैदा हुए हों परन्तु उनकी काव्यधाराएँ सारे संसार का उपकार कर रही हैं।

हेनरी फेवर

पृ० ४५२, ४५३

रहस्यपूर्ण–गुप्त भेदों से युक्त

विचरण करता है–घूमता है

शृंगमाला–चोटियाँ

कौतुक–आश्चर्य

आह्लाददायिनी–प्रसन्नता देनेवाली

पृ० ४५४, ४५५

चौगान–खेलने के मैदान

किंचिन्मात्र–कुछ भी

अनुराग–प्रेम

विद्याभिरुचि–विद्या पढ़नेकी अत्यधिक रुचि, विद्या प्रेम

भूमिति शास्त्र–ज्यामिति शास्त्र, वह गणित विद्या जिसमें भूमि के परिमाण भिन्न भिन्न क्षेत्रों के अंगों आदि के परस्पर संबंध तथा रेखा कोण आदि का विचार कियाजाताहै

पृ० ४५६, ४५७

घोंघे–शंख की तरह का एक कीड़ा।

ज्ञानलिप्सा–ज्ञान प्राप्त करने कालोभ

फलीभूत–सफल

गुबरीला–एक प्रकार का कीड़ा

पृ० ४५८, ४६०

अग्रशोची–आगे की सोचने वाली दूरदर्शी

कीट संसार–कीड़ों का संसार

पदच्युत हो जाना–अधिकार से हट जाना

पृ० ४६०, ४६१

उदारचेता–उदार दिल वाले

सूक्ष्मदर्शक कांच–एक प्रकार का शीशा जिसस देखने पर सूक्ष्म पदार्थ बड़े दिखाई देते हैं।

इहलीला संवरण की–इस लोक का जीवन समाप्त किया। परलोक सिधार गये।

पृ० ४६४, ४६५

प्रेमालाप–प्रेम की बातें

घंटाकृति–घंटे की शक्ल का

आगंतुक–आने वाला

ईथर–एक प्रकार की बहुत सूक्ष्म और लचीली चीज़ जो सारे खाली आकाश में फैली हुई है

गाथा–कहानी

पृ० ४६६, ४६७

स्तुत्य–प्रशंसा के योग्य

अंडाकृति–अंडे की शकल का,

वृत्ताकार–गोल

कंपास–परकार

(संक्षेप)

हेनरी फेबर का स्थान प्राणिशास्त्र के विद्वानों में बहुत ऊँचा है। इनका जन्म फ्रांस के सेंटलिओन्स नामक ग्राम में सन् १८२३ ईस्वी में हुआ था। इनके पिता होटल में दरबान थे। इन्होंने बचपन के घोर दरिद्रता के दिन छोटे छोटे कीड़े मकोड़ों के साथ खेल कर मज़े में काट दिये। सात वर्ष की अवस्था में ये एक पाठशाला में पढ़ने गये। इनका शिक्षक एक नाई था। वह अपने व्यवसाय के बाद गिरिजाघर में घंटा भी बजाया करता था। पाठशाला की अवस्था बड़ी ख़राब थी, पर यहीं से हेनरी के हृदय में पढ़ने का प्रेम पैदा होगया। यहाँ से पिता के साथ ये रोडेज़ चले गये। गरीबी के कारण इन्हें अपनी आजीविका की चिंता थी। पशु-पक्षी तथा कीड़ों का ज्ञान तो पेट भरने में मदद न दे सकता था, अतः पढ़ने के साथ ही साथ ये देहातों में नींबू भी बेचते रहे। पढ़ाई में तेज़ होने के कारण इन्हें छात्र-वृत्ति मिल गयी, और फिर तीन साल की पढ़ाई डेढ़ साल में खतम कर प्रथम श्रेणी में पास हो इन्होंने अपनी योग्यता का परिचय दिया। इसके बाद ये ३०) मासिक पर एक ग्राम पाठशाला में अध्यापक हो गये। इसी समय इनका विवाह होगया। इन्हीं दिनों गणित तथा विज्ञानशास्त्र की उच्च परीक्षा पास करते ही वे कार्सिका द्वीप के एजेक्सियो कालिज में अध्यापक हो गये। अब एक प्रोफेसर के सहयोग से वे भिन्न भिन्न प्रकार के प्राणियों को एकत्र करने और चीर फाड़कर उनकी जाँच करने लगे। इस विषय में अत्यधिक काम करने से उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। और वे बदली करा कर

एछिनगनोन की पाठशाला में अध्यापक हुए। यहाँ भी वे बाहर खेतों में घूमकर अपना समय प्रकृति के इन रहस्यों की खोज में लगाने लगे।

एक दिन उन्होंने एक लेख में पढ़ा कि बरैया अपने छत्ते में जिन गुबरीलों को मारकर इकट्ठा करती हैं, वे मृत शरीर बरैये के डक से निकले हुए विष की किसी विशेष शक्ति के कारण दो दो महीने तक पड़े रहकर भी नहीं सड़ते। परन्तु फेबर साहब इस परिणाम पर पहुँचे थे कि बरैया जिन गुबरीलों को इकट्ठा करती है, वे वहाँ दो महीने तक कैद रहने पर भी नहीं मरते, केवल उनके चलने फिरने की शक्ति मारी जाती है जिससे बरैया के अडों में बच्चे निकलने तक वे जीवित रहें और बच्चों को यथासमय ताजा भोजन मिल सके। फेबर साहब ने इस खोज को पुस्तक रूप में प्रकाशित किया। जिसकी प्रशसा डारविन तक ने की। इसी समय फेबर साहब ने मजीठ में रग निकालने की विधि निकालकर जीविका से मुक्त होना चाहा, पर अपने भोलेपन के कारण वे इसे गुप्त न रख सके अतएव उससे दूसरे फायदा उठा गये। उन्होंने बहुत सी प्राकृतिक ज्ञानविषयक बालोपयोगी पुस्तकें लिखीं। इन पुस्तकों को देख कर फ्रांस के शिक्षामत्री उन पर मोहित हो गए, उन्होंने उन्हें उपाधि दी, और उनकी भेंट राजा से कराई। इसी समय उनकी मित्रता जान स्टुआर्ट मिल से हो गई। इन्हीं दिनों उनके हित चिंतक मन्त्री के पदच्युत होजाने से उनकी नौकरी छूट गई और पुस्तकों पर रायल्टी मिलनी भी बद हो गई, तब मिल से कुछ रुपये लिये जो बाद में वापिस कर दिये।

फिर ये सेरिग्नान की शान्ति कुटीर में चले आये। कुछ दिन बाद उन्होंने "नि मार भूमि खंड" नामक पुस्तकें प्रकाशित की, जिसकी अच्छी कद्र हुई। उसमें इन्होंने कीट पतगों का जीवन वृत्तान्त लिखा और कीड़ों के सबध में ऐसी बातें बताई जिन्हें पहले मनुष्य न जानते थे। इनका खोज करने का ढग साधारण था, और एक सूक्ष्म दर्शक काँच और नमूने के लिए दियासलाई की खाली डिब्बियों आदि के सिवा इनके पास खोज का कोई सामान न था। फबर साहब की सफलता का श्रेय उनके धैर्य और दृढ़ निश्चय को था। अन्त में १९१५ इसवी को ये परलोक सिधारे। इनकी कुल प्राणिशास्त्र विषयक ११ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। इनकी विचित्र देश की गाथा नामक पुस्तक बहुत मनोरंजक है। उसमें उन्होंने बताया है कि रेशम के कीड़े के खोल में से निकले हुए मोर पक्षी के पैदा होते ही उसकी गध पाकर किसतरह दूर दूर से पतँगे उसके आस पास आ जुटते हैं। यहाँ तक कि उस के आस पास यदि तेज खुशबू वाला लवैण्डर भी रख दे तो भी उसकी ओर ध्यान न दे पतँग मोर पक्षी के कैदखाने के आस पास ही चक्कर काटने लगते हैं।

फैबर साहब ने यह जानने के लिए कि मोर पक्षी की खबर उन पतगों को बिजली या चुंबक शक्ति अथवा बेतार की तार द्वारा या अन्य किसी तरह पहुँचती है, उस मोर पक्षी को एक ऐसी जगह बद कर दिया जहाँ हवा न पहुँच सकती थी, तब वहाँ कोई पतगा न पहुँचा, पर जरा सा सूराख होते ही वहाँ पतगों की भीड़ लग गयी। अत, यह पता लग गया कि जहाँ थोड़ी भी हवा पहुँचती है वहाँ गध के साथ पतगों को भी खबर पहुँच जाती है।

अभी यह परीक्षण पूरा नहीं हुआ था कि वह मोरपंखी मर गया। फिर तीन साल की लगातार तलाश के बाद एक दूसरा पतंगा उसी जाति का मिला। उस पर भी परीक्षण किया तो यह निश्चित हो गया कि मोरपंखी की खबर गंध द्वारा ही पतंगों को मिल जाती है और यह भी कि जिस वस्तु को यह पतंगा एक बार छू देता है उसमें भी ऐसी ही गंध बस जाती है। और यह सूक्ष्म गंध किसी दूसरी गंध से नहीं दबती।

उनकी 'भूमि की गाथा' नामक पुस्तक में मधुमक्खी की चतुरता का वर्णन है। वह बबायन और गुलाब के पत्तों से गोल और अंडाकार टुकड़े काटती है। उन अंडाकार टुकड़ों से वह थैली बनती है और गोल टुकड़ों से ढक्कन। इन्हीं टुकड़ों की थैलियों से बाहर का ढाँचा बनता है। थैली के भीतर इन्हीं पत्तों से वह बच्चों के लिए पालना भी बना लेती है। थैली के भीतर मुलायम पत्तों का अस्तर होता है और थैली के ऊपर ढक्कन ऐसा फिट बैठाया जाता है कि जिससे थैली के भीतर हवा का गुजर भी नहीं लगने पाता।

फेबर की पुस्तकों में कीड़े-पतंगों की ऐसी चमत्कार-पूर्ण बातों का ज़िक्र है जो हमारे घर के आस-पास रोज़ होती हैं पर जिन पर हम ध्यान तक नहीं देते।

आकाश-गंगा

(लेखक—श्रीलाल शालग्राम पण्ड्या)

पृ० ४६८, ४६९
तेजस्वी—प्रकाशमय
मालिका—माला
खगोलज्ञ—आकाश के नक्षत्रों, ग्रहों आदि का ज्ञान रखने वाले
शुभ्र उष्ण—सफेद और गरम
रक्त उष्ण—लाल और गरम
पृ० ४७०, ४७१
अप्रतिम—अद्वितीय, अनुपम
अव्यवस्थित—बेठिकाने के, इधर उधर बिखरे हुए
अरण्यों—जंगलों
अगम्य—जहाँ कोई जा न सके
मनोदेश—मन
पृ० ४७२ से ४७७
प्रवास—विदेश में वास, यात्रा
भस्मीभूत—जलकर राख हो जाना
कणिकाओं—टुकड़ों
ब्रह्माण्ड—चौदह भुवनों का एक समूह
मायासम्भूत—माया से उत्पन्न
अनवधि—असीम, बेहद

संक्षेप

आकाश में रात के समय एक सिरे से दूसरे सिरे तक चार हाथ चौड़ा एक प्रकाशमय पथ दिखाई देता है, इसे ही आकाश गंगा कहते हैं। बड़े से बड़े दूरदर्शक यंत्र से इस आकाशगंगा का जितना भाग एक बार दिखाई देता है उसका एक चित्र एक विद्वान् ने तैयार किया है। आकाशगंगा का यह चित्र उन्नीसवीं शताब्दी का एक आश्चर्यजनक आविष्कार है। इस चित्र में कोई हजार छोटे छोटे बिंदु दिखाई देते हैं, प्रत्येक बिंदु एक सूर्य का चित्र है, चन्द्रमा और पृथ्वी के पास के पाँच ग्रहों के सिवा आकाश में रात को जितने तारे दिखाई पड़ते

हैं, वे सब सूर्य हैं। हमारा सूर्य पृथ्वी से १३,१०००० गुना बड़ा है। यह भी एक तारा ही है। आकाशगंगा के कई तारे हमारे सूर्य से भी बड़े हैं। इनकी आपस की दूरी करोड़ों मील की है, पर पृथिवी से बहुत दूर होने के कारण व पास पास दिखाई देते हैं। एक कमरे में काली मखमल के फर्श पर जो मन हीरे मोती बखेर दिये जायँ, और फिर कमरे म सैकड़ों बिजली के दीपक लगा दिये जायँ, उस समय कमरे की जो शोभा होगी, उससे कई गुना अधिक सुन्दर दृश्य दूरबीन द्वारा आकाशगंगा का दिखाइ देता है।

फोटोग्राफी द्वारा सपूर्ण नभोमंडल के चित्र २५ हजार भिन्न भिन्न प्लेटों पर उतारे गए हं। उनके द्वारा आकाश के जो अद्भुत चमत्कार पता लगे हैं उनका वर्णन नहीं हो सकता।

आकाशगंगा हम से कितना दूर है इसका अनुमान इससे लग सकता है कि यदि एक मिनिट में एक मील चलने वाली रेलगाड़ी पर निरन्तर चलते जायँ तो एक शंख वर्ष म आधा रास्ता तय होगा। उस आधे रास्ते में ठहरकर यदि आकाश गंगा का चित्र ले तो वह वैसा ही होगा जैसा पृथिवी पर का लिया हुआ चित्र था। वहाँ से तेज दूरदर्शक यंत्र द्वारा देखने से हमारा सूर्य भी एक तारे के समान दिखाइ देगा, और असख्य तारों में इसको पहचानना भी कठिन होगा। फिर वहाँ से चलना शुरू कर तो एक शंख वर्ष और चलकर हम आकाश गगा की बाहरी सीमा के किसी भाग में पहुँच जाएँगे। पर आकाश गंगा के भीतर आ पहुँचे, यह बात हम तब भी नहीं कह सकते क्योंकि उस समय आकाश पथ असंख्य तारों

से युक्त दिखाई देता है । डर है कि यात्रा में हमारी गाड़ी किसी सूर्य के पास चली गई तो जल कर राख हो जायगी ।

आकाशगंगा के अनेक नक्षत्र हम से इतनी दूर हैं कि वहाँ से पृथ्वी तक उनका प्रकाश आने में ३००० से १५००० वर्ष तक का समय लगता है, और प्रकाश का वेग एक सैकण्ड में १८६००० मील है । इससे दूरी का अनुमान हो सकता है। आकाश गंगा के सूर्य तो दूरबीन द्वारा देखे जा सकते हैं, पर जिन पृथ्वियों को ये प्रकाशित करते हैं उन्हें देखना किसी भी यंत्र से संभव नहीं। जिस प्रकार हमारे सूर्य के आस पास आठ ग्रह प्रदक्षिणा करते हैं, तो यदि आकाश गंगा में एक अरब सूर्य मान लिये जायें वास्तव में उनकी संख्या इस से भी अधिक है तो उनके आस पास असीम आकाश में आठ अरब ग्रह तो ऐसे छिपे पड़े हैं, जो हमें किसी तरह दिखाई नहीं देते ।

इस महान आकाश में चमकती हुई असंख्य पृथ्वियाँ, अगणित सूर्यों और तारकाओं का एक ब्रह्माण्ड है, ऐसे २१ और ब्रह्माण्ड हमारे शास्त्र मानते हैं ये सब ईश्वरीय माया के प्रदेश के जिस भाग में है उससे कई गुना अधिक भाग वाला एक और माया प्रदेश है । यह सारा प्रदेश परमात्मा के साढे तीन करोड़ रोमों में से किसी एक रोम की तरह कोने में पड़ा है । इसमें मनुष्य का, उसकी पृथिवी का उसके सूर्य का कोई हिसाब ही नहीं अतः ऐसे अनंत परमात्मा की शरण में जाना ही कल्याण का एक मार्ग है ।

बर्लिन

(लेखक—श्रीयुत कृष्ण नाथ मिश्र एम०ए०)

पृ० ४७८ से ४८६ तक

वितृष्णा—उदासीनता, घृणा
उल्लास—हर्ष, आनन्द
मध्यवयस्था—अधेड़ उमर की, जवानी और बुढ़ापे के बीच की अवस्था वाली
चर्म—चमड़ा
कुंचन—सिकुड़न, झुर्री
क्षतविक्षत—घायल
एक्सचेंज—वह स्थान जहाँ नगर के व्यापारी और महाजन परस्पर लेनदेन के लिए इकट्ठे होते हैं।
ओपेरा—तमाशे का घर
आवरण—परदा
मुखस्थ—कण्ठस्थ, याद
अवयव—हिस्सा, अंग
व्यंग्य कर—ताना मारकर
परिमार्जित—साफ, मँजी हुई
मारात्मक—मारने वाले, नष्ट करने वाले
पल्लव—पत्ते
सिहर उठती है—काँप उठती है
द्विविध—दोनों तरह के
विषाद—दुःख
मादकता—नशीलापन, नशा
अनुकरणीय—नकल करने के लायक
अपव्यय—फिजूलखर्ची
क्षोभ—क्रोध

संक्षेप

महायुद्ध के बाद यूरोप का असल रूप जर्मनी में ही दिखाई देता है। यहाँ सब तरफ आनंद के दृश्य हैं, हार का कहीं निशान भी नहीं। दुनियावी उन्नति हद दर्जे तक पहुँच गई है। बर्लिन के सामने लंदन और पेरिस गाँव से मालूम होते हैं। वहाँ केम्पिन्स की वाटरलैंड नामक भोजनालय में संसार के सब देशों का खाना मिलता है, खाना खिलाने वाली उसी

देश का यह धन उसी देश की खानों और गानों से आने वाले का स्वागत करता। फिर यह भी बहुत है। चार पाँच रुपये में चार पाँच प्याले हा यह जा मिल सकता है। इतने रुपये में पेरिस और लन्दन में किसी आरामगाह में प्रवेश भी नहीं कर सकते। विचार की उन्नति में जर्मनी ने अपना रूप खूब सजाया। बालक बालिकाओं ने वसन्त में शरीर पुष्ट किए तो स्त्रियों ने व्यायामों द्वारा अपनी झुर्रियाँ हटाई। पर यह सब किस लिए हुआ इसका उत्तर नहीं मिलता। बाहरी चकाचौंध में यहाँ हृदय साथ नहीं देता।

जर्मन ही सचमुच अमर पुराकाय हैं। अंगरेज उसके सामने बौना है। मामोमा का हृदय बड़ा सकुचित होता है। अंगरेजों का बाहरी ज्ञान बहुत कम है यहाँ तक कि जिस भारत पर वे शासन करते हैं, उसकी संस्कृत भाषा के बारे में उन्हें कुछ पता नहीं पर जर्मनी वाले संस्कृत पढ़ते हैं, गाँधी का जीवन पढ़ते हैं और टैगोर की कविताएँ याद करते हैं। उनमें ज्ञान की तृष्णा बहुत अधिक है इतना ज्ञान प्राप्त करने पर भी वे कुछ रहस्य न समझ सके। ज्ञान की दौड़ का अन्त कहाँ है, यह उनके लिए एक पहेली है।

अंगरेज भारत के अपढ़ ग्रामीण की तरह मस्ती में दिन बिता देता है। फ्रांसीसियों की रुचि थोड़ी परिष्कृत है परन्तु जर्मन असाधारण खोज में लगा रहता है, परन्तु दुर्भाग्य से उसकी अब तक की खोज के फल अनेक क्षेत्रों में नाशात्मक हो चुके हैं। यही उनका दुर्भाग्य है। जर्मनी के भावुक लोग बहुत दिन से प्रेम की मीमांसा कर रहे थे। उन्होंने यह सिद्ध

किया कि प्रेम मस्तक की एक नस का प्रवाह है। बस जर्मनी की युवक-युवतियों ने सतीत्व पर हँस दिया और खूब गुलछर्रे उड़ाये। पर अब थक कर जर्मन पूछते हैं कि आगे किधर बढ़ना है। इसका उत्तर ज्ञानवान जर्मन स्वयं न दे सके। वे आजकल प्रेम को जलाकर बाहरी सजावट मे लगे हैं, वे पाप और पुण्य के भावों को भुलाकर असीम शक्ति पाने मे फिर लगे हैं। उन्हें अपनी आत्मा की कोई सुध नहीं। उनका आधुनिक इतिहास वेश्या की दुःखपूर्ण गाथा की तरह जटिल है। वे लक्ष्य नहीं पा रहे, दुःख नहीं मिटता और व्याकुलता बढ़ती जाती है।

एक विदेशी मेरे देश के बारे में क्या समझेगा, यह सोच कर वे यात्रियों की सुविधा का जितना ख्याल करते हैं, उतना शायद कोई और यूरोपीय नहीं करता। पहले प्रत्येक जर्मन अपने को कैसर का सिपाही समझता था पर अब वह अपने को एक वैज्ञानिक समझता है। और वह एक बड़े साम्राज्य का स्वप्न देख रहा है, जर्मनों की शक्ति यूरोप की अन्यी शक्ति में सबसे उग्र है, वे नशे में चूर होकर बढते ही चले जाते हैं, पर उस शक्ति से ईर्षा नहीं होती अपितु दुःख होता है, क्योंकि उसमें आध्यात्मिकता का नाम भी नहीं।

देश का रूप पहने उसी देश की थाली और गानों में खाने वाले का स्वागत करेगा। फिर खर्च भी बहुत कम। चार पाँच रुपये में चार पाँच देशों का खाना मिल सकता है। इतने रुपये में पेरिस और लन्दन में किसी भोजनालय में प्रवेश भी नहीं कर सकते। विज्ञान की उन्नति में बर्लिन ने अपना रूप खूब सजाया। बालक बालिकाओं ने कसरत से शरीर पुष्ट किए तो बूढ़ियों ने व्यायाम द्वारा अपनी झुर्रियाँ हटाईं। पर यह सब किस लिए हुआ, इसका उत्तर नहीं मिलता। बाहरी उन्नति में यहाँ हृदय साथ नहीं देता।

जर्मन ही सचमुच असल यूरोपीय हैं। अंगरेज उसके सामने बौना है। फ्रांसीसी का हृदय बड़ा संकुचित होता है। अंगरेजों का बाहरी ज्ञान बहुत कम है, यहाँ तक कि जिस भारत पर वे शासन करते हैं, उसकी संस्कृत भाषा के बारे में उन्हें कुछ पता नहीं पर जर्मनी वाले संस्कृत पढ़ते हैं, गाँधी की जीवनी पढ़ते हैं और टैगोर की कविताएँ याद करते हैं। उनमें ज्ञान की तृष्णा बहुत अधिक है इतना ज्ञान प्राप्त करने पर भी वे कुछ रहस्य न समझ सके। ज्ञान की दौड़ का अन्त कहाँ है, यह उनके लिए एक पहेली है।

अंगरेज भारत के अपढ़ ग्रामीण की तरह मस्ती में दि
बिता देता है। फ्रांसीसियों की रुचि थोड़ी परिष्कृत है परन्तु जर्मन असाधारण खोज में लगा रहता है परन्तु दुर्भाग्य से उसकी अब तक की खोज के फल अनेक क्षेत्रों में नाशात्मक हो चुके हैं। यही उनका दुर्भाग्य है। जर्मनी के भावुक लो
बहुत दिन से प्रेम की मीमांसा कर रहे थे। उन्होंने यह सि

के प्रतिनिधि चन्द्रावत ने उनसे राज मुकुट ले और प्रताप को पहनाया था, जिससे कि वे मेवाड़ को स्वाधीन कर सकें। प्रताप ने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक चित्तौड़ स्वतन्त्र न होगा तब तक महलों में न घुसूँगा। इन्हीं दिनों में अकबर का सेनापति मानसिंह प्रताप के यहाँ पहुँचा, प्रताप न उस देशद्रोही के साथ खाना खाने मे इनकार कर दिया। इस पर मानसिंह ने अपना अपमान समझा। फलत हल्दीघाटी का युद्ध हुआ। अकबर ने बड़ी भारी सेना के साथ सलीम, मानसिंह और प्रताप का भाई शक्तिसिंह—जो जवानी के घमण्ड में आकर एक छोटी सी बात पर प्रताप से लड़कर अकबर से जा मिला था—को भेजा। भयकर युद्ध हुआ। लड़ते लड़ते प्रताप मुगल सेना मे चारों ओर घिर गये। वीर चन्द्रावत ने इस समय प्रताप को बचाने का एक ही साधन समझा कि व प्रताप के सिर से राज मुकुट लेकर अपने सिर पर रखले, जिससे मुसलमान उनको ही राजा समझ मार देंगे, और प्रताप बच जाएँगे। फलत उन्होंने प्रताप से वह राजमुकुट जो उन्होंने स्वय प्रताप को पहनाया था, वापिस माँगा। प्रताप मुकुट देने को तैयार थे, पर रणभूमि छोड़ने को तैयार न थे। चन्द्रावत ने आग्रह किया कि यदि आप प्राण त्याग देंगे तो फिर मेवाड़ का भाग्य भी हमेशा के लिए डूब जायगा। पर प्रताप फिर भी तैयार न हुए। इतने में चन्द्रावत ने राजचिह्न अपने सिर पर ले लिये और मुगलों ने उन्हे प्रताप समझ कर मार डाला। इसी समय शक्तिसिंह मैदान म आया। वे यह त्याग देख कर अचम्भे में आगये, और उन्हें अपनी भूल पता लगी। इधर प्रताप का घोड़ा चेटक उन्हे युद्ध से भगा ले गया।

राजपूतों की अद्भुत देशभक्ति

(लेखक— श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द)

पृ० ४८७ से ४९४ तक

नर-मुण्डों-मनुष्यों के सिर

पाद पद्मों-चरण कमलों

भग्नावशेषों-खँडहर।

इंगित-इशारा

निर्माता-बनाने वाला

निधियाँ-खजाने अमूल्य वस्तुएँ

भाँप गया-ताड़ गया

दावाग्नि-नरक

उद्दाम-यौवन-निरंकुश जवानी

जीवन चाहता है अपना जीवन बिना कुछ मरने में आए, दुनियाँ की आँखों से परे रहकर समाप्त हो जाना चाहता है।

वन कुसुम-जंगल के फूल

साधना-उपासना

झोली के धन-पुत्र

सिर के ताज-मणि (पति)

भाल-मस्तक

आज-आज भिखारी दरवाजे पर आया है और हाथ पसार कर माँग रहा है। ऐ माताओ बहनो, बहुओ और बेटियो, अपने देश का करुण पुकार सुन और युद्ध के लिए अपने पुत्र तथा पति दे दो इस तरह अपनी माता की लाज रख लो।

ओ जौहर व्रत करने वाली हमेशा बलिदान करने वाली बहनो, अपने उमर हृदय खोल दो और अपने पुत्र लाडले भाई, पति और पिताओं को लुटा दो और जन्मभूमि की लाज रखलो।

आज वन वन में स्वतन्त्रता के पुजारी माँ के प्यारे बेटे, पागल से फिरते हैं। बलिवेदी प्रतीक्षा कर रही है। तुम अपने प्राणों की आहुतियाँ भेजो, जिससे फिर माँ का मस्तक ऊँचा हो

(संक्षेप)

महाराणा उदयसिंह अपनी मृत्यु के बाद अपने विलासी पुत्र जगमल को अपना उत्तराधिकारी बना गये थे, पर प्रजा

त्वचा–चमड़ी
छोर–किनारा
सज्जन–सज्जन ऐसा चरित्र दिखाते हैं जिन्हें देखकर हम अपना चरित्र भी उज्ज्वल बना सकें और जाते समय में अपने पैरों के पवित्र निशान छोड़ जाँय। उन पैरों के निशानों का देखकर हमारे भाई भी—जिनकी संसार सागर की चट्टानों से नौका टकरा गई है—जिनपर विपत्ति आ गई है—उत्साही हो जायँ।

(संक्षेप)

यह अमेरिका महाद्वीप जो आज बड़ा समृद्ध और शिक्षित कहा जाता है, आज से ४०० साल पहले दुनियाँ को उसका पता भी न था। अमेरिका को खोज निकालने का श्रेय हिन्दू, चीनी, तुर्क, रोमन आदि कई जातियाँ ने लेना चाहा पर आधुनिक यूरोप को उसका पता कोलंबस ने दिया था। कोलम्बस इटली के जिनोआ नगर मे एक गरीब के घर पैदा हुआ था। वह बचपन से ही पढ़ना लिखना छोड़ समुद्रचर्या में लग गया। फिर उसका विवाह बार्थोलोमियो नामक विख्यात जलयात्री की कन्या से होगया। अपने ससुर के नक्शों से कोलम्बस का ज्ञान खूब बढ़ गया।

पंद्रहवीं शताब्दी से यूरोपवासियों के दिल मे समुद्र द्वारा भारत पहुँचने की प्रबल अभिलाषा थी। कोलम्बस भी हिन्दुस्तान पहुँचने का स्वप्न देखता था, और उसने एटलांटिक महासागर को पार कर एशिया पहुँचने का विचार ठाना। उसने पुर्तगाल,

इस बात को ले मुसलमानों ने हमला किया। उन्होंने प्रताप का पीछा किया पर शक्तिसिंह ने उनका काम तमाम कर दिया और संकट में अपने [illegible] के लिए क्षमा माँगी।

इधर प्रताप मुगलों के [illegible] आश्रय अरावली के पहाड़ों पर चले गये। उधर शक्तिसिंह को अपना पिछले जीवन पर पश्चाताप हुआ। उसने भाई से लड़ाई कर जो देश छोड़ दिया था यद्यपि उसके लिए भाई ने उसे क्षमा कर दिया था पर उसका अपना हृदय उस क्षमा को पाप का पर्याप्त प्रायश्चित्त नहीं मान सका था। अतः उसने मृत्यु पर्यन्त संन्यास व्रत धारण कर तथा अपना व्यक्तित्व छिपा कर घर घर से सैनिक इकट्ठे करने का व्रत धारण किया।

५०

अमेरिका की खोज

(लेखक—श्री रामप्रसाद त्रिपाठी एम० ए०)

पृ० ४९५—५०२

अज्ञात–जिसका पता न हो

जनशून्य–निर्जन, जहाँ कोई आदमी न हो

पुरातन–पुराने

न्यूनाधिक–कुछ कुछ, थोड़ा-बहुत

कटिबंध गरमी सरदी के विचार से किये हुए पृथ्वी के विभाग

परिधि–घेरा

द्वितीयार्द्ध–दूसरा आधा भाग

अर्द्धांश–आधा टुकड़ा

अस्तव्यस्त–छिन्न भिन्न

नितांत–सर्वथा, एकदम

उपहासजनक हँसी उड़ाने के लायक

खटाई में पड़ गया–कुछ निश्चय न हुआ

शैवाल–सेवार, काई

सहचर–साथी

जहाँ उसका बड़ा आदर हुआ। जब इसकी ख़बर दूसरे देशों को लगी, तब फ्रान्स, पुर्तगाल, इंग्लैण्ड और हालैंड देश से म्योपक दौड़ पड़े। उसके बाद जान कैबट नामक व्यापारी इंग्लैंड के राजा सप्तम हेनरी की आज्ञा लेकर रवाना हुआ। फलस्वरूप उत्तरीय अमेरिका का भी पता लग गया। धीरे धीरे वहाँ यूरोपियन उपनिवेश स्थापित हो गये। आज अमेरिका संसार के समृद्धिशाली देशों में से है, इसका श्रेय कोलम्बस और उसके अनुगामियों को है।

दीर्घ जीवन

पृ० ५०४—५१०

अक्षय—कभी न नष्ट न होनेवाली।

दीर्घजीवी—लम्बी उमर वाला

युक्ताहार विहार—जिसका खाना-पीना और रहना समुचित है।

लंघन—उपवास, न खाना

सर्वरोगे मलाश्रये—सब रोग मल के सहारे ही रहते हैं।

संक्षेप

जीवन को सुखमय बनाने का सबसे उत्तम उपाय सादा जीवन और उच्च विचार है। आजकल पाश्चात्य सभ्यता आवश्यकताओं को बढाना अपना लक्ष्य समझती है, पर प्राचीन ऋषियों का आदर्श आवश्यकताओं को कम करना था, अतएव उनका जीवन सुखमय था। यही आदर्श है जिससे हम भी सुखी और दीर्घजीवी हो सकते हैं।

इंग्लैंड और जिनेवा सरकार से बातचीत की, पर कोई सहायता देने को राजी न हुआ। धीरे धीरे यह खबर स्पेन की महारानी के पास पहुँची और उसने कोलम्बस का प्रस्ताव विद्वत्सभा के पास विचार करने के लिए भेज दिया। उस समय के संकुचित विचारों के कारण विद्वत्सभा ने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया। इसी समय स्पेन में युद्ध शुरू होगया। पर कोलम्बस रानी की सहानुभूति पाकर वहीं ठहरा रहा। युद्ध समाप्त होने पर उसकी सब शर्तें मानकर रानी ने तीन जहाज उसके हवाले कर दिये। सन् १४९२ में उसने अपनी यात्रा प्रारम्भ की, और दिन रात अज्ञात समुद्र की यात्रा के कारण घबराये साथियों को फुसलाकर, समझाकर डराकर काम लेता रहा। अन्त में उसे जमीन का किनारा दीख गया। इस द्वीप का नाम कोलम्बस ने सान सेल्वाडोर रखा। इस द्वीप के निवासी असभ्य थे, व कपड़े न पहनते थे, स्त्रियाँ भी प्रायः नंगी रहती थी। द्वीप के निकट जहाजों को देख कर वहाँ के निवासी भौंचक्के रह गये, वे कोलम्बस और उसके साथियों की गोरी चमड़ी देख उन्हें स्वर्ग से आया समझ उन्हें नमस्कार करने लगे।

कोलम्बस हिन्दुस्तान की खोज में निकला था, इसलिए उसने वहाँ के निवासियों को रेड इण्डियन कहना शुरू किया। स्पेन वालों को रेड इण्डियनों की दरिद्रता देख कर निराशा हुई पर उनके सोने के गहने देखकर कुछ आश्वासन भी हुआ। उन्हें शीशे के मनके आदि देकर उनसे उन्होंने सोने के गहने ले लिये। फिर सोने की आशा में कोलम्बस आगे बढ़ा, इस बार उसे क्यूबा और हेस्पिनोला द्वीपों का पता लगा। दिसम्बर मास में उसका जहाज सतामेरिया चट्टान से टकराकर टूट गया। तब वह दूसरे जहाज पर वापिस स्पेन आगया

५२

हरिद्वार

(लेखक—श्री गिरीन्द्र नारायण सिंह)

पृ० ५११—५२०

भ्रान्त–उन्मत्त, भूला हुआ	लतागुल्म–लता और झाड़ी
छिन्नमस्तक–कटा हुआ सिर	पुष्प पल्लवों–फूलों और पत्तियों
संवरण करना–रोकना	शृंगार–सजावट
विशूचिका–हैजा	मनोमुग्धकर–मन को मुग्ध करने वाला।
रुचिर–सुन्दर	कल्लोलिनी–तरंगों वाली
उर्वरा–उपजाऊ	अट्टालिका–अटारी, कोठा
कलकलनिनादनी–कलकल शब्द करने वाली	श्रुतमधुर–मधुर आवाज
भुवनमोहिनी–संसार को मोहने वाली	सम्भ्रान्त–सम्मानित
	जलबयार–पानी मिली वायु
	तरंगवीचियों–तरंगों, लहरों

(संक्षेप)

हरिद्वार हिन्दुओं का बड़ा पवित्र, प्रसिद्ध और प्राची तीर्थ स्थान है। इसके पुराने कई नाम हैं गंगाद्वार, शिव क राजधानी, मयरा या मायापुर। ह्वेनसांग ने इसका उल्ले मायूलो नाम से किया है। अब भी हरिद्वार और कनख के बीच मायापुर के खंडहर विद्यमान हैं। हरिद्वार गंगा ज दक्ष प्रजापति का यज्ञस्थान, सतीकुंड और कुंभ क्षेत्र आदि कारण अधिक प्रसिद्ध है। कुंभ पर यहाँ बड़ी भीड़ होती पहले कुंभ के अवसर पर शैवों और वैष्णवों तथा अन्य भिन्न धर्मावलम्बियों की आपस में खूब लड़ाई होती थी,

प्रसिद्ध वैद्य मिश्र ! मिश्र ! ८० वर्ष की आयु में काम कर मरे थे। यह शक्ति उन्हें अपने पूर्वजों से प्राप्त थी है उनके पितामह ने सादा जीवन व्यतीत करना शुरू किया था। उनकी सन्तान ने उनका अनुकरण किया अतः वे सब दीर्घ जीवी हुए।

सादा जीवन व्यतीत करने से जीवन की अवधि लम्बी होती है। कार्य करने की शक्ति बढ़ती है। भगवान कृष्ण ने भी गीता में मनुष्य को 'युक्ताहार विहार' रहने के लिए कहा है— जिसका अर्थ सादा जीवन व्यतीत करना ही है। जो लोग मिर्च खटाई, चाय, कहवा आदि के बिना नहीं रह सकते वे दीर्घजीवी नहीं हो सकते। टामस पार १४९ वर्ष तक सुखमय रहा परन्तु उसके बाद ज्योंही वह राजदरबार में गया और वहाँ का खान पान किया त्यों ही एक वर्ष के भीतर ही वह मर गया, यद्यपि डाक्टर आशा करते थे कि वह १०–२० वर्ष और जीएगा। उसकी दीर्घ आयु का कारण मांस, और शराब तथा तमाखू आदि के बिना भोजन था। सादा जीवन व्यतीत करना सादे भोजन पर निर्भर रहता है। सादा भोजन का अर्थ यह नहीं कि भोजन निकृष्ट हो पर यह कि उसमें खटाई मिर्च आदि न हों। हेनरीफोर्ड भी इस सिद्धान्त का पोषक है। अच्छा भोजन मिलने पर भी भूख से तथा पाचनशक्ति से अधिक नहीं खाना चाहिये भोजन खूब अच्छी तरह चबाया जाना चाहिये। यदि कभी पेट में मल इकट्ठा हो जाय तो उपवास कर निकाल देना चाहिए, क्योंकि सब रोग मल के ही सहारे रहते हैं।

कनखल—हरिद्वार के पास ही है। पाँच छः पैसे में ताँगे जाते हैं। यहाँ के बाजार की रौनक अच्छी है। यहीं सती-कुंड और दक्ष प्रजापति का पुराना मंदिर है।

हृषिकेश—हरिद्वार के समीप ही है। यहाँ रेल या मोटर द्वारा पहुँचते हैं। यहाँ के प्राकृतिक दृश्य अद्वितीय हैं।

लक्ष्मण झूला—हृषीकेश से थोड़ी दूर आगे है। यह प्रकृति की गोद में बसा है। पहाड़ों के बीच से आती गंगा जी के आरपार जाने के लिए यह पुल बनाया गया था। पिछली बाढ़ में यह पुल बह गया है, इसे ही लक्ष्मण झूला कहते हैं। इसके दोनों ओर कई आश्रम हैं। पूजनीय स्वामी रामतीर्थ जी ने यहीं गंगा माँ की गोद में अनंत पद पाया था।

५३.

अभिमन्यु की वीरता

(लेखक—श्रीयुत शिवपूजन सहाय)

पृ० ५२१, ५२३

आकाशवृत्ति-ऐसी आमदनी जो बँधी न हो

जग जाहिर-जगत में प्रसिद्ध

जगद्यत्त-लम्बा तडंगा, बड़ा

परकाले-टुकड़े, चिनगारियाँ

आफत के परकाले-गजब ढाने वाले

सुघराई-सुन्दरता

खोपड़ीतोड़ न-खोपड़ी चूर करने वाला

बागडोर-लगाम

दाँत खट्टे करना-हराना

असीसती है-आशीर्वाद देती

ललक-गहरी चाह

छठी का दूध याद कराना-छक्के छुड़ा देना, सब सुख भु- -ला देना।

पनाले-परनाले

पृ० ५२४, ५२५

लोहे का चना-बड़ा सख्त

[illegible]

अब वह नहीं है। पर अब भी कुंभ के दिनों में लुच्चे लफंगों द्वारा स्त्रियों की पर्याप्त दुर्दशा होती है, और हैजा आदि बीमारियाँ फैल जाती हैं। सरकार, सेवा समिति, तथा बाल चर मण्डल के सहयोग से इन घटनाओं को रोकने को पर्याप्त प्रयत्न हो रहा है। हरिद्वार की सबसे बड़ी शोभा गंगा जी हैं, गंगा की नहर भी यहीं से निकाली गई है। आजकल हरिद्वार एक अच्छा बड़ा शहर हो गया है पर इसके विशेष दर्शनीय स्थान निम्नलिखित हैं—

हरकी पौड़ी—यही मुख्य स्थान है जहाँ कुंभ आदि के समय अधिक भीड़ होती है। गंगा से सट कर एक लम्बा सा प्लेटफार्म चला गया है। इसके एक ओर पक्की अट्टालिकाएँ हैं और दूसरी ओर गंगा जी की धारा। इस प्लेटफार्म को एक छोटे से सुन्दर पुल द्वारा किनारे से मिलाया गया है। इस जगह पर स्नानार्थियों, व्याख्याताओं, भजन मंडलियों, दर्शकों और दुकानदारों की खूब भीड़ रहती है। शाम सवेरे एक मेला सा होता है।

ब्रह्मकुण्ड—यह भी गंगा की धारा में ही है, इसके घाट की सीढ़ियाँ संगमरमर की बनी हैं। यहाँ रंग बिरंगी मछलियों के खेल दर्शनीय हैं।

भीमगदा या भीमगोडा—यह पाण्डु पुत्र भीम के नाम से प्रसिद्ध है। कहते हैं भीम ने गदा से यहां प्रहार किया था अत एव यहाँ पानी निकल आया। इसके पास ही एक झरना है।

चण्डी पहाड़—हरिद्वार के सामने दूसरी ओर है। यहाँ चण्डी देवी का पर्वत है।

अपने पिता के रथ पर जा छिपा। दुर्योधन ने अपने पुत्र की हार का बदला लेने अलम्बुष राक्षस को भेजा पर अभिमन्यु ने उसका भी बुरा हाल कर दिया।

दुर्योधन ने युधिष्ठिर को पकड़ने के लिए चक्रव्यूह बनाया और त्रिगर्त देश के राजा सुशर्मा द्वारा अर्जुन को युद्ध के मैदान से दूर कर दिया। अर्जुन के बिना चक्रव्यूह तोड़ना और कोई न जानता था। वीरपुत्र अभिमन्यु ने इस का बीड़ा उठाया, भीम ने भी साथ देने का वचन दिया। अभिमन्यु तो चक्रव्यूह में घुस गया पर और कोई पाण्डव उसमें घुस न पाया। तब अकेले अभिमन्यु ने ही कौरवों का नाक में दम कर दिया। इस पर कर्ण ने उसके धनुष की डोरी काटदी, अश्वत्थामा ने उसका कवच छेद डाला, दुःशासन ने उसके घोड़े और सारथी को मार दिया, पर फिर भी वह टूटे रथ का चक्का उठा कर सबकी खबर लेने लगा। जब द्रोण ने उसको भी काट दिया तब उसने गदा उठाली और उधर से दुःशासन का बेटा भी गदा लेकर आगया। लड़ते लड़ते दोनों ही बेहोश होगये पर थकान के कारण अभिमन्यु की बेहोशी दूर होने में देरी हुई इतने में अचेत पड़े अभिमन्यु को गदा की चोट से दुःशासन के लड़के ने सदा के लिए सुला दिया और यह वीर अपनी वीरता की कहानी हमेशा के लिए लिख कर चला गया।

आँखों का काँटा-दुश्मन
हेकड़ी हवा होगई-अभिमान दूर होगया
पृ० ४७६ ५ ७
हिम्मत पस्त करना-उत्साह भंग कर देना
बंदिश बाँधना-प्रबंध करना
बाल बाँका न होना-ज़रा भी हानि न होना
टेढ़ी खीर-कठिन काम
धुँआधार-घोर
तीर-तेज

(संक्षेप)

अभिमन्यु वीर अर्जुन और सुभद्रा का बेटा, भीम का भतीजा और भगवान कृष्ण का भाँजा था। वह बाप जैसा वीर बलवान और मामे जैसा सुंदर था। रात दिन वीरों के साथ रहने से उस में भी कूट कूट कर वीरता भर गई थी। महाभारत के युद्ध के समय वह केवल १६ वर्ष का था। माता पिता से प्यार, दादी से आशीर्वाद और ताया चाचों से शाबाशी ले वह युद्ध में पहुँच जाता और जो सामने आता उसके छक्के छुड़ा देता। महाराज बृहद्बल ने उसे रोकना चाहा पर उसके रथ आदि सब काट कर उसे भगा दिया। पड़दादा भीष्म और कृतवर्मा को भी उसने हैरान कर दिया। जब शल्य ने उसके साले कुमार उत्तर को मार दिया तब तो उसने कौरव सेना में त्राहि त्राहि मचा दी। द्रोण तथा अश्वत्थामा भी उससे पार न पा सके, बस वह कौरवों की आँख का काँटा हो गया।

दूसरे दिन दुर्योधन का पुत्र लक्ष्मण उससे लड़ने आया तब अभिमन्यु ने उसकी सारी हेकड़ी दूर कर दी। बेचारा

मे महाराजा पृथ्वीराज और चित्तौड़ के रावल समरसिंह के दानपत्रों में मिलता है। यद्यपि १५ वीं शताब्दी से १९ वीं शताब्दी तक हिन्दी पद्य अपनी उन्नति की चरम सीमा को पहुँच चुका था। परन्तु इस काल म स्वामी विट्ठलनाथ के 'शृंगार रस मंडल' तथा गोकुलनाथजी को 'चौरासी वैष्णवों की वार्ता' आदि तीन ग्रंथों तथा कुछ भ्रष्ट और अनियंत्रित भाषा टीकाओं और फुटकर गद्य लेखों के सिवाय हिन्दी के गद्य साहित्य में अन्य कोई चीज नहीं मिलती। हिन्दी गद्य की वास्तविक उत्पत्ति १९ वीं शताब्दी में हुई और हिन्दी गद्य के वास्तविक प्रारंभिक लेखक मुंशी सदासुख लाल, सैयद इंशाअल्लाह खां, लल्लूलाल और सदल मिश्र कहे जाते हैं। सदासुखलाल की भाषा बोलचाल की खड़ी बोली है। इंशाअल्लाहखां की हिन्दी बड़ी चटकीली और मुहावरेदार है। लल्लूलाल और सदलमिश्र दोनों ने फोर्ट विलियम कालिज में रहकर गिलक्रिस्ट साहब की आज्ञा से हिन्दी में ग्रंथ लिखे, परन्तु लल्लूलाल का गद्य पद्यमयी ब्रजभाषा में है और सदल मिश्र की भाषा मुंशी सदासुखलाल की तरह व्यवहार में आने वाली खड़ी बोली है। इसके बाद फिर ६० वर्ष तक हिन्दी की प्रगति रुकी रही, क्योंकि अंग्रेज राजनीतिक दृष्टि कोण से उर्दू को अधिक अपना रहे थे। परन्तु राजा शिवप्रसाद ने उर्दू भाषा और नागरी लिपि में संवत् १९०२ में 'बनारस' अखबार निकाला, उसके बाद 'सुधारक' तथा 'बुद्धि प्रकाश' आदि अखबार निकले। इतने में स्वामी दयानन्द ने अपने धर्म ग्रंथ गुजराती होते हुए भी हिन्दी में लिखे। और राजा लक्ष्मणसिंह ने उर्दू शब्दों का पूर्ण बहिष्कार कर हिंदी में कई ग्रंथ लिखवाये और स्वयं अनुवाद किये। अब तक हिन्दी की कोई एक शैली निश्चित न थी। यह काम भारतेन्दु

परिशिष्ट क

हिंदी गद्य का विकास

प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति संस्कृत से हुई अथवा संस्कृत और प्राकृत दोनों एक साथ प्रचलित थीं, विद्वान लोग इस बात पर एकमत नहीं हैं परन्तु इस बात पर सब सहमत हैं कि प्राकृत की तीन प्रमुख शाखाएं थीं—मागधी, शौरसेनी और महाराष्ट्री, तथा हिन्दी शूरसेन देश अर्थात् ब्रजमंडल (मथुरा के आसपास के प्रान्त) में बोली जाने वाली प्राकृत की पुत्री है। इस पुरानी हिन्दी का आरम्भ विक्रम की आठवीं शताब्दी से माना जाता है।

श्रीयुत रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी का प्रारम्भ काल ११ वीं शताब्दी के बीच में माना है उन्होंने साहित्य के इतिहास के निम्नलिखित चार काल विभाग किये हैं।

१ आदिकाल (वीरगाथा काल) संवत् १०५०-१३७५
२ पूर्वमध्यकाल (भक्तिकाल) संवत् १३७५-१७००
३ उत्तरमध्यकाल (रीतिकाल) संवत् १७००-१९००
४ आधुनिककाल (गद्यकाल) संवत् १९०० से आजतक।

इस कालविभाग का अर्थ यह है कि इन कालों में इस तरह की रचनाओं की प्रधानता रही। जैसे आजकल पद्य भी लिखा जाता है, पर प्रधानता गद्य की है अतः इसे गद्य काल कहा जाता है।

हिन्दी पद्य का सब से पुराना ग्रंथ 'खुमान रासो' माना जाता है। इस का रचनाकाल संवत् ९०० के लगभग कहा जाता है। ऐसे ही हिन्दी गद्य का उदाहरण तेरहवीं शताब्दी

म महाराजा पृथ्वीराज और चित्तौड़ के रावल समरसिंह के दानपत्रों में मिलता है। यद्यपि १५ वीं शताब्दी से १९ वीं शताब्दी तक हिन्दी पद्य अपनी उन्नति की चरम सीमा को पहुँच चुका था। परन्तु इस काल म स्वामी विट्ठलनाथ के 'शृंगार रस मंडल' तथा गोकुलनाथजी की 'चौरासी वैष्णवों की वार्ता' आदि तीन ग्रंथों तथा कुछ भ्रष्ट और अनियंत्रित भाषा टीकाओं और फुटकर गद्य लेखों के सिवाय हिन्दी क गद्य साहित्य में अन्य कोई चीज नहीं मिलती। हिन्दी गद्य की वास्तविक उत्पत्ति १९ वीं शताब्दी में हुई और हिन्दी गद्य के वास्तविक प्रारंभिक लेखक मुंशी सदासुख लाल, सैयद इशाअल्लाह खा लल्लूलाल और सदल मिश्र कहे जाते हैं। सदासुखलाल की भाषा बोलचाल की खड़ी बोली है। इंशाअल्लाहखा की हिन्दी बड़ी चटकीली और मुहावरेदार है। लल्लूलाल और सदलमिश्र दोनों ने फोर्ट विलियम कालिज मे रहकर गिलक्रिस्ट साहब की आज्ञा से हिन्दी में ग्रंथ लिखे, परन्तु लल्लूलाल का गद्य पद्यमयी ब्रजभाषा म है और सदल मिश्र की भाषा मुंशी सदासुखलाल की तरह व्यवहार में आने वाली खड़ी बोली है। इसके बाद फिर ६० वर्षों तक हिन्दी की प्रगति रुकी रही, क्योंकि अंग्रेज राजनीतिक दृष्टि कोण से उर्दू को अधिक अपना रहे थे। परन्तु राजा शिवप्रसाद ने उर्दू भाषा और नागरी लिपि में संवत् १९०२ में 'बनारस' अखबार निकाला, उसके बाद 'सुधारक' तथा 'बुद्धि प्रकाश' आदि अखबार निकले। इतने में स्वामी दयानन्द ने अपने धर्म ग्रंथ गुजराती होते हुए भी हिन्दी म लिखे। और राजा लक्ष्मणसिंह ने उर्दू शब्दों का पूर्ण बहिष्कार कर हिंदी में कई ग्रंथ लिखवाये और स्वयं अनुवाद किये। अब तक हिन्दी की कोई एक शैली निश्चित न थी। यह काम भारतेन्दु

हरिश्चन्द्र ने किया। अतएव कई भावुक उन्हें आधुनिक हिन्दी गद्य के पिता कहते हैं। उन्होंने अनेकों नाटक, कई अन्य ग्रंथ तथा दो चार पत्रिकायें निकालीं। उनकी भाषा परिमार्जित और गँवारपन से परे थी। भारतेन्दु काल के अन्य लेखकों में बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, श्रीनिवास दास, राधाचरण गोस्वामी, बालमुकुन्द गुप्त तथा बदरीनारायण चौधरी प्रमुख हैं। इस काल के लेखकों की रचनाओं में व्याकरण की परवाह न की गई। हास्यरस की अधिकता थी और ग्रामीण भाषा की पुट पायी जाती थी। इस समय बँगला के कई ग्रन्थों का अनुवाद भी हुआ। व्याकरण के दोषों को दूर करने का प्रयत्न सरस्वती सम्पादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने किया। उन्होंने हिन्दी को खूब माँजा। अब तो अंगरेजी और बँगला की तरह विराम चिन्हों पर भी पूरा ध्यान दिया जाने लगा है। इस समय हिन्दी की सब ओर उन्नति हो रही है। सब विषयों पर मौलिक ग्रंथ निकल रहे हैं। कई पत्र पत्रिकायें निकल रही हैं। इस तरह हिंदी गद्य बड़ी तेजी से बढ़ रहा है।

परिशिष्ट ख

भिन्न-भिन्न लेखकों की लेखन-शैली

गुसाईं गोकुलनाथ जी की हिन्दी प्राचीन काल की ब्रजभाषा मिली खड़ी बोली हिन्दी का नमूना है।

सैयद इंशाअल्लाह खाँ की हिन्दी उर्दू संस्कृत आदि के शब्दों से अछूती गँवारू भाषा से भी रहित शुद्ध हिन्दी या खड़ी बोली है। उसमें चुलबुलाहट है पर वाक्य रचना कहीं कहीं फारसी ढंग की है।

श्री लल्लूलाल की भाषा पद्यमयी तथा ब्रज भाषा मिश्रित है और उर्दू शब्दों से बिलकुल अछूती है।

राजा शिवप्रसाद की भाषा यद्यपि सरल है परन्तु उसमें उर्दू और फ़ारसी शब्दों की भरमार है।

स्वामी दयानन्द जी की हिन्दी में संस्कृत के शब्द अधिक आये हैं, मुहावरा भी संस्कृत का है, विदेशी शब्दों से रहित है, परन्तु कहीं कहीं गुजराती की झलक पायी जाती है।

श्री बालमुकुन्द गुप्त के लेखों में हँसी और चोट (व्यङ्ग) दोनों हैं। भाषा बड़ी चुटीली है और उसका झुकाव अधिकतर शुद्ध हिंदी की ओर है।

श्री बालकृष्ण भट्ट की भाषा संस्कृत मिश्रित है, परन्तु उसमें पण्डिताऊपन नहीं पाया जाता, अपितु मुहावरों की अधिकता तथा भाव और भाषा दोनों की सुबोधता पाइ जाती है।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की हिंदी बड़ी मँजी हुई और जोरदार होती है। वाक्य सरल सरल और छोटे होते हैं, व्याकरण का बड़ा ध्यान रक्खा जाता है। ये आजकल की गद्य शैली के आचार्य माने जाते हैं।

श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय ठेठ हिंदी, साधारण चलती-फिरती हिन्दी तथा संस्कृत मिश्रित कठिन हिन्दी सभी प्रकार की शैलियों में लिखते हैं। ये गद्य की अपेक्षा पद्य अधिक लिखते हैं।

प० कामता प्रसाद गुरु की भाषा सरल, व्याकरणकी दृष्टि से शुद्ध तथा भाव भरी होती है।

श्री गदाधरसिंह की कोइ विशेष शैली नहीं, परन्तु उसमें उर्दू शब्द प्राय नहीं आते।

बाबू श्यामसुन्दर दास की भाषा मँजी हुई शुद्ध संस्कृत-मय होती है, उसमें अन्य भाषा के शब्दों और मुहावरों का अभाव होता है।

श्री माधवराव सप्रे की हिंदी संस्कृत मिश्रित तथा मराठी भाषा का रंग लिए थी।

स्वामी सत्यदेव की भाषा जोरदार, सरल तथा रोचक होती है। ये यात्रा सम्बन्धी साहित्य के प्रमुख लेखकों में से हैं।

मुंशी प्रेमचन्द की भाषा जोरदार सरल, मुहावरेदार तथा सजीव होती है उनमें उर्दू तथा संस्कृत के शब्द ठीक फिट बैठते हैं। ये हिंदी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार हैं।

लाला हरदयाल की भाषा मँजी हुई और जोरदार है तथा शैली तार्किक है।

श्री रामचन्द्र शुक्ल की भाषा अधिकतर संस्कृतमयी है, शैली अधिक कठिन तथा आलोचनात्मक होती है और विचार बड़े गठे हुए होते हैं।

श्री रूपनारायण पाण्डेय और श्री सन्तराम अधिकतर अनुवाद के लिए प्रसिद्ध हैं।

प्रोफेसर शिवाधार पाण्डे की भाषा संस्कृत मिश्रित तथा शैली तार्किक है।

श्री विश्वम्भरनाथ कौशिक की भाषा सरल सुबोध, तथा विशेष चलतापन लिए होती है।

श्री चंडीप्रसाद हृदयेश की भाषा में संस्कृत शब्दों की भरमार है तथा शैली वर्णनात्मक है।

श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी की भाषा कठिन होती है उसमें संस्कृत शब्दों की अधिकता है तथा शैली आलोचनात्मक है।

श्री जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द की भाषा बहुत ओज पूर्ण है, भाषा पर इनका खूब अधिकार है।

बाबू शिवपूजन सहाय विषयानुकूल भाषा लिखने में सिद्धहस्त

हैं। इनकी भाषा में अनुप्रास और मुहावरों की भरमार होती है। शैली खूब मँजी हुई है।

बाकी अन्य लेखकों की शैली में कोई उल्लेखनीय बात नहीं। उनके लेख आजकल की हिन्दी के साधारण नमूना मात्र है।

परिशिष्ट ग

अनुमानित प्रश्न

१ निम्न लिखित व्यक्तियों की जीवनी पर प्रकाश डालो। सय्यद इंशाअल्लाह खाँ, स्वामी दयानन्द, महावीर प्रसाद द्विवेदी सत्यदेव परिव्राजक डा० लक्ष्मण स्वरूप, प्रेमचन्द बी० ए०।

२ निम्नलिखित घटनाओं पर नोट लिखो।

(क) खण्डन ब्राह्मण का वैष्णव होना

(ख) द्रौपदी स्वयंवर

(ग) शुक-जन्म कथा

(घ राजपूतनी का बदला

(ङ) रणथम्भौर-ध्वंस

(च) अभिमन्यु वध

(छ) चन्द्रावत का बलिदान

३. 'रामायण के चरित्रों में से भरत का चरित्र सबसे अधिक आदर्श और निर्दोष है परन्तु वे ही रामायण के पात्रों में सबसे अधिक निन्दा का पात्र बने" इस कथन की आलोचना करो।

४ हिन्दी-साहित्य के कुछ प्रसिद्ध मुसलमान कवियों का परिचय दो तथा उनकी कविताओं और विचारों पर सचित्र नोट लिखो।

५ 'समर्थ होकर भी जो मनुष्य इतने महत्वशाली साहित्
की सेवा और अभिवृद्धि नहीं करता अथवा उससे अनुराग नह
रखता वह समाजद्रोही है वह देशद्रोही है, वह जातिद्रोह
है किंबहुना आत्मद्रोही और आत्महंता भी है।" इस कथन क
सरल हिन्दी में लिखो और इस पर अपने विचार भ
प्रकट करो।

६ निम्नलिखित गद्य भाग को अपनी सरल भाषा में लिखो

"अब सन्ध्या होगई। मुनिकुमारों ने रक्तचन्दन से अर्
दिया था, वह उनके अंग में लगकर ऐसी शोभा देता था जै
लोहित वर्ण सूर्य। तमारि की किरणों ने धीरे-धीरे पृथ्वी
कमलवन में और कमलवन से वृक्षों के शिखर पर और वह
से पहाड़ों की चोटी पर जाकर उनको स्वर्ण वर्ण किया। वा
से चलायमान पत्र रूपी हस्त द्वारा सब वृक्ष पक्षियों को अपने
अपने खोतों में बुलाने लगे और विहङ्गों ने भी कलरव कर
उत्तर दिया। मुनि सब ध्यानस्थित होकर और हाथ बाँध क
सन्ध्या वन्दन करने लगे। कामधेनु के दुहे जाने का शब्द चार
ओर सुनाई देने लगा। हरी कुशा अग्निहोत्र की वेदी पर बिछाई
गई। तिमिरनाशक के भय से छिपा हुआ तिमिर प्रकट हुआ।
सन्ध्या के क्षय होने के शोक से दुःखित रात्रि अन्धकाररूपी
मलिन वस्त्र धारण करके दृष्टिगोचर हुई। ग्रह रूपी चोर भी,
जो सूर्य के प्रताप से छिपे थे, बाहर निकले। पूर्व दिशा में
चन्द्रमा का थोड़ा थोड़ा प्रकाश होने लगा। इससे उसकी शोभा
ऐसी जान पड़ती थी, मानो वह मुसकरा रही हो सुधाधर का

पहले कलामात्र, फिर आधा और फिर क्रमश समस्त मण्डल प्रकाशित हुआ और अन्धकार का नाश हुआ। कोई फूली और मन्द मन्द समीर के बहन से मृग आह्लादित हुए। जीव-जन्तु आनन्दमय, कुमुद गन्धमय और तपोवन प्रकाशमय हुआ।

७ "दान, दाक्षिण्य, श्रुति, वीर्य, लज्जा, कीर्ति, बुद्धि, सन्तति, श्री, धृति, तुष्टि, पुष्टि सब अच्युत में ही स्थित हैं।" यह कथन कहाँ तक सत्य है।

८ हिन्दी गद्य के विकास का इतिहास लिखो।

९ (क) हिन्दू शास्त्रों के अनुसार माता का गौरव पिता से सौगुणा अधिक है, क्या यह सत्य है और ऐसा क्यों? क्या हिन्दू क्रियात्मक जीवन में सचमुच माता का पिता से इतना अधिक आदर करते हैं। इस पर संक्षिप्त नोट लिखो।

(ख) श्री रामचन्द्र में कौन से ऐसे गुण थे जिनसे उनका नाम अमर हो गया है, सविस्तर लिखो।

(ग) क्या हिन्दू जाति में प्राचीन जमाने में भी शुद्धि का प्रचार था, प्रमाण दो।

(घ) बाल्मीकि, व्यास और होमर को विश्व कवि क्यों कहा जाता है, उनके काव्य में क्या विशेषताएँ हैं, बताओ।

(ङ) अध्ययन के लाभ अथवा दीर्घ जीवन के उपाय लिखो।

१० निम्नलिखित वाक्यों का भावार्थ लिखो।

कौड़ियों पर अशर्फियाँ लुट रही थीं।

जिसकी स्याही भी उस के मन्द भाग्य की भाँति फीका पड़ गई थी।

गिरिजा अब कोई मायत की पाहुनी है।

११ (क) नेता में क्या गुण होने चाहिये ?

(ख) इनरा फेअर कौन था ?

(ग) आकाश गंगा क्या वस्तु है ?

(घ) मनथ और गिरिजा जी का क्या और कैसा सम्बन्ध था ?

(ङ) सम्भाषण में किन नियमों का पालन करना चाहिए ?

(च) महाभारत का क्या संदेश है ?

१२ निम्नलिखित कठिन शब्दों का अर्थ लिखो।

पुट, पुराने धुराने, भोग भरना, प्रतिपादन, आफ़तानी, सादका, मुहैले, सन्तापित, अविराम्, निष्क्रिय, निश्चिन्त, विकलेन्द्रिय, पुनीत प्रव्रज्या, पुष्करिणी, महरूम, साम, दाम, सौदामिनी, यूथप्लाविनी, अनघ, पुण्यपीयूष-वाहिनी, ध्यान-स्तिमित, पार्थिव, वह्नोलिनी, अँकवार, लिफ़ार, परकाले, लघन तुरूचन, पूर्णवयस्का, माया सम्भूत, जीवत, कुश्युद्ध, निकृत।

१३ निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखो और उन्हें अपनी भाषा में प्रयुक्त करो।

राई का पर्वत करना, हैंकड़ी हवा हो जाना, छटी का दूध याद करा देना, इहलीला संवरण करना, मिट्टी में मिल जाना।